सॉल्वड पेपर

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

कक्षा 12

विषय : इतिहास

सेट—I (दिसम्बर, 2012)

समय : 3 घण्टे] **[पूर्णांक : 100**

निर्देश—सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है। प्रश्न क्रमांक 1 से 11 बहुविकल्पीय प्रश्न हैं। सही विकल्प चुनकर लिखना है। प्रश्न क्रमांक 12 से 22 खाली स्थान भरिये। प्रत्येक प्रश्न पर 1 अंक निर्धारित है।

1. वेदों की संख्या कितनी है— **1**

(क) दो (ख) तीन (ग) चार

उत्तर—(ग) चार

2. सिन्धु सभ्यता के लोग निम्न में से किसकी पूजा नहीं करते थे— **1**

(क) शिव (ख) मातृदेवी (ग) विष्णु

उत्तर—(ग) विष्णु

3. गुप्त संवत किसने प्रारम्भ किया था— **1**

(क) श्रीगुप्त (ख) चन्द्रगुप्त (ग) चन्द्रगुप्त द्वितीय

उत्तर—(ख) चन्द्रगुप्त

4. बाणभट्ट के अनुसार हर्षवर्धन का आदिपुरुष कौन था— **1**

(क) पुष्यभूति (ख) नरवर्धन (ग) राज्यवर्धन

उत्तर—(क) पुष्यभूति

5. चोल दरबार के आश्रित कवि थे— **1**

(क) कुट्टन (ख) पुमलेंडी (ग) कम्बन

उत्तर—(ग) कम्बन

6. किस ग्रन्थ में राजपूतों की उत्पत्ति अग्निकुण्ड से बतायी गयी है— **1**

(क) आल्हाखण्ड (ख) राजतरंगिणी (ग) पृथ्वीराजरासो

उत्तर—(ख) राजतरंगिणी

7. दिल्ली सल्तनत की स्थापना हुई— **1**

(क) 1200 ई० में (ख) 1206 ई० में (ग) 1212 ई० में

उत्तर—(ख) 1206 ई० में

8. ताजमहल का निर्माण किस मुगल शासक ने किया— **1**

(क) अकबर ने (ख) शाहजहाँ ने (ग) जहाँगीन ने

उत्तर—(ख) शाहजहाँ ने

9. विजयनगर साम्राज्य में प्रशासन की छोटी इकाई को कहते थे— **1**

(क) नाडु (ख) उर (ग) बलनाडु

उत्तर—(क) नाडु

10. सन् 1857 की क्रान्ति का प्रथम शहीद था— **1**

(क) भगत सिंह (ख) नान साहेब (ग) मंगल पाण्डे

उत्तर—(ग) मंगल पाण्डे

11. सत्यार्थ प्रकाश के लेखक थे— **1**

(क) स्वामी विवेकानन्द (ख) ईश्वरचन्द विद्यासागर (ग) स्वामी दयानन्द सरस्वती

उत्तर—(ग) स्वामी दयानन्द सरस्वती

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

12. अशोक द्वारा लिखवाये गये अधिकांश अभिलेख .... लि" में उत्कीर्ण है। **1**

13. गुप्तकाल का महान कवि .... को कहा जात है। **1**

14. हर्ष के शासनकाल में .... चीनी यात्री भारत आया। **1**

15. देशीय कला शैली का केन्द्र .... था। **1**

16. गुलाम वंश का संस्थापक .... था। **1**

17. गौड़ वंश का राजा .... हर्ष का विरोध था। **1**

18. 'सुलह-ए-कुल' की नीति .... ने अपनाई थी। **1**

19. लोदी वंश का अन्तिम शासक .... था। **1**

20. विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने वाले भारतीय विद्वान .... थे। **1**

21. स्वामी विवेकानन्द के गुरु .... थे। **1**

22. स्वतंत्रता के समय भारत का गवर्नर जनरल .... था। **1**

उत्तर—12. खरोष्ट लिपि, **13.** हरिषेण, **14.** हवेनसांग, **15.** मथुरा, **16.** कुतुब्बुद्दीन ऐबक, **17.** शशांक, **18.** अकबर, **19.** इब्राहिम लोदी, **20.** स्वामी विवेकानन्द, **21.** रामकृष्ण परमहंस, **22.** लार्ड माउंट बेटन

निर्देश—प्रश्न क्रमांक 23 से 31 तक प्रश्न लघु उत्तरी हैं। प्रत्येक प्रश्न पर 4 अंक एवं विकल्प है। (उत्तर की अधिकतम शब्द सीमा 75 शब्द)।

प्रश्न 23. सिन्धु सभ्यता की चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—सिन्धु घाटी सभ्यता की विशेषताएँ—सिन्धु घाटी सभ्यता की निम्नलिखित विशेषताएँ—

नगर निर्माण एवं भवन निर्माण—योजनाबद्ध नगरों एवं भवनों का निर्माण इस सभ्यता की सर्वश्रेष्ठ विशेषता थी। सभी प्रमुख नगर जिनमें हड़प्पा मोहन जोइड़ों, चन्हुदड़ो, लोथल तथा

कालीबंगा सभी प्रमुख नगर नदियों के तट पर बसे थे इन नगरों में सुरक्षा के लिये चारो ओर परकोटा दीवार का निर्माण कराया जाता था। प्रत्येक नगर में चौड़ी एवं लम्बी सड़के थी, चौड़ी सड़के एक दूसरें शहरों को जोड़ती थी।

सिन्धु घाटी सभ्यता में कच्चे पक्के, छोटे बड़े सभी प्रकार के भवनों के अवशेष मिले हैं। भवन निर्माण में सिन्धु सभ्यता के लोग दक्ष थे। इसकी जानकारी प्राप्त भवनावशेषों से होती है। इनके द्वारा निर्मित मकानों में सुख-सुविधा की पूर्ण व्यवस्था थी। भवनों का निर्माझाभी सुनियोजित ढंग से किया जाता था। प्रकाश व्यावस्था के लिये रोशनदान एवं खिड़किया भी बनाई जाती थी। रसोई घर, स्नानगृह, आंगन एवं भवन कई मंजिल के होते थे। दीवार ईटों से बनाई जाती थी। भवनों, घरों में कुएँ भी बनाये जाते थे। लोथल में ईटो से बना एक हौज मिला है।

विशाल स्नानागार—मोहन जोदड़ों में उत्खनन से एक स्नानागार मिला जो अत्यन्त भव्य है। स्नानकुण्ड से बाहर जल निकासी की उत्तम व्यवस्था थी। समय-समय पर जलाशय की सफाई की जाती थी। स्नानागार के निर्माण के लिये उच्च कोटि की सामग्री का प्रयोग किया गया था, इस कारण आज भी 5000 वर्ष बीज जाने के बाद उसका अस्तित्व विद्यामान है।

अन्न भण्डार—हड़प्पा नगर के उत्खनन में यहाँ के किले के राजमार्ग में दोनों ओर 6-6 की पक्तियाँ वाले अन्न भण्डार के अवशेष मिले हैं, अन्न भण्डार की लम्बाई 18 ममीटर व चौड़ाई 7 मीटर थी। इसका मुख्य द्वार नदी की ओर खुलता था, ऐसा लगता था कि जलमार्ग से अन्न लाकर यहाँ एकत्रित किया जाता था। सम्भवत: उस समय इस प्रकार के विशाल अन्न भण्डार ही राजकीय कोषागार के मुख्य रूप थे।

जल निकास प्रणाली—सिन्धु घाटी की जल निकास की योजना अत्यधिक उच्च कोटि की थी। नगर में नालियों का जाल बिछा हुआ था। सड़क और गलियों के दोनो ओर ईटों की पक्की नालियाँ बनी हुई थी। मकानों की नालियाँ सड़कों या गलियों की नालियों से मिल जाती थी। नालियों को ईटों और पत्थरों से ढकने की भी व्यवस्था थी। इन्हें साफ करने स्थान-स्थान पर गड्ढे या नलकूप बने हुये थे। इस नलकूपों में कूडा करकट जमा हो जाता था और नालियों का प्रवाह अवरूद्ध नहीं होता था। नालियों के मोडों और संगम पर ईटों का प्रयोग होता था।

अथवा

उत्तरवैदिककालीन धार्मिक जीवन की प्रमुख विशेषताएँ बताइये।

अथवा

उत्तर— **वैदिक कालीन धार्मिक जीवन**

धार्मिक जीवन—उत्तर वैदिक काल में धर्म और जटिल बन गया। अनेक नये देवताओं ने आरम्भिक प्राकृतिक शक्तियों का स्थान ले लिया। पुजारी वर्ग द्वारा अधिकृत बलिका पहलू महत्वपूण र्ा हो गया। लेकिन उत्तर वैदिक काल के अन्तिम चरण में उपनिषदों ने बलि का सत्ता को चुनौती देना आरम्भ कर दिया।

यज्ञ—उत्तर वैदिक काल के आते-आते धर्म जटिल तो हो गया था लोग अब अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिये मन्त्रों का जाप करना प्रारम्भ किया। यह खर्चीले होने लगे और यज्ञों में बलि का महत्व भी बढ़ाने लगा। यज्ञों में पुरोहितो की संख्या भी बढ़ गयी थी।

ब्राम्हणों का महत्व बढ़ा—यज्ञ, हवन, अनुष्ठान, मन्त्राचार होने लगे तब समाज में ब्राम्हण ों का महत्व बढ़ने लगा। ब्राम्हण ग्रन्थों की रचना इसी काल में की गयी एवं ब्राम्हणों को वेद ज्ञान का अधिकारी माना जाने लगा।

देवताओं के स्थान में परिवर्तन—वैदिक काल में इन्द्र प्रधान देवता थे परन्तु उत्तर वैदिक काल के आते-आते इसका स्थान विष्णु, पशुपतिनाथ शिव ने ले लिया। इनकी पूजा अब शिव के रूप में की जाने लगी।

प्रश्न 24. महावीर स्वामी के त्रिरत्न क्या थे? समझाइए। 4

अथवा

चार आर्य सत्य क्या है? उनका संक्षिप्त विवरण दीजिए।

उत्तर—महावीर स्वामी के त्रिरत्न निम्नलिखित है—

(1) सम्यक ज्ञान, (2) सम्यक दर्शन, (3) सम्यक चरित्र।

अथवा

उत्तर—बुद्ध के चार आर्य सत्य निम्नलिखित हैं—

(1) दु:ख, (2) दु:ख का कारण, (3) दु:ख निरोध, (4) दु:ख निरोध का कारण।

प्रश्न 25. सिकन्दर की भारत में सफलता के मुख्य कारणों पर प्रकाश डालिए। 4

अथवा

स्थापत्य कला के क्षेत्र में चोल-राजाओं का योगदान का वर्णन कीजिए।

उत्तर— उत्तर पश्चिम भारत छोटे-छोटे राजतन्त्रों में बंटा हुआ था। एकता के अभाव में यूनानियों को उन्हें एक के बाद एक जीतने में मदद की। उनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण राजा थे—आंभी और पोरस। यदि वे अपने मतभेद भुलाकर संयुक्त मोर्चा लेते, तो शायद यूनानियों को हराया जा सकता था।

अथवा

उत्तर—चोल शासक कला और साहित्य के महान पोषक थे। उनके शासन काल में मन्दिर निर्माण चरमोत्कर्ष पर पहुँचा। मन्दिर निर्माण में द्रविड़ शैली का आरम्भ हुआ। इसमें बहुमंजिले भवन और स्तम्भों वाले बड़े-बड़े हाल (बड़े कमरों) पर बल दिया गया था। इन हालों में स्त्रियों के नृत्य जैसे कार्यक्रम होते थे। इसका उत्तम नमूना है तंजोर का बृहदीश्वर मन्दिर गंगाईकोडचोलपुरम में बनवाए गए थे। चोल शासकों के समय में मूर्तिकला का भी विकास हुआ था। कांस्क की अनेक मूर्तियाँ मिली है।

प्रश्न 26. अलाउद्दीन की भूमि सुधार नीति का वर्णन कीजिए। 4

अथवा

मुहम्मद बिन तुगलक की असफलता के क्या कारण थे?

उत्तर—अलाउद्दीन ने भूमि लगान सुधार एक विशेष परिस्थिति के सन्दर्भ में आरम्भ किया था। राज्य की विशाल सेना रखने के लिए धन की आवश्यकता थी। इस समय इकतादार अपने इक्ता के लगान (भूमि-कर) और सैन्य अधिकार से वंचित नहीं होना चाहिते थे। उन्होंने स्थानीय स्तर पर सुल्तान के विरुद्ध विद्रोह किए। उलेमा अनुदान रूप में भूमि प्राप्त करना अपना स्वाभाविक

अधिकार समझते थे। गाँव के भू-स्वामी और छोटे भू-स्वामी भूमि कर से मुक्त थे परन्तु किसानों से बलपूर्वक लगान वसूल करते थे।

अलाउद्दीन खिलजी ने सर्वप्रथम अमीरों, सरकारी अधिकारियों और अन्य व्यक्तियों से वह भूमि वापस ले ली जो उन्हें उपहार, अनुदान या इनाम रूप में मिली हुई थी। राज्य सभी भुगतान नकद धन में करने लगा। इसके बाद अलाउद्दीन ने मुकदमों और खुत जैसे बिचौलियों से भूमिकर वसूल करने का अधिकार छीन लिया। राज्य की आय बढ़ाने के लिए भूमिकर बढ़ा कर उपज का प्रतिशत कर दिया गया। भूमि का नाप कराकर उपज के अनुसार लगान निश्चित किया था।

अथवा

उत्तर—मुहम्मद बिन तुगलक की असफलता के कारण निम्नलिखित है—

मुहम्मद तुगलक के प्रति असंतोष—मुहम्मद तुगलक की योजनाओं की असफलताओं और नीतियों के कारण जनता और अमीरों में असन्तोष बढ़ा जिसके फलस्वरूप उसके शासन काल के अन्ति अर्द्धभाग में समस्त सल्तनत में एक के बाद दूसरा विद्रोह होता रहा। यह विद्रोह विघटन के प्रक्रिया के घोतक थे।

मुहम्मद तुगलक का अविश्वास—मुहम्मद तुगलक को किसी पर भी विश्वास नहीं था। इसलिए उसे विद्रोह दमन के लिए सल्तनत के एक भाग से दूसरे भाग स्वयं को भागना पड़ा। उसने अवध, गुजरात, सिन्ध विद्रोह दबा दिए परन्तु दक्षिण में वह असफल हुआ। उसके दक्षिण से वा"स आते ही हरिहर और बुक्का ने विद्रोह कर विजयनगर एवं बमहनी राज्य की स्थापना किया। बंगाल भी स्वतंत्र शासन बन गया।

प्रश्न 27. सल्तनत काल में स्त्रियों की दशा का उल्लेख कीजिए। 4

अथवा

दिल्ली सल्तनत में गुलामों की दशा (स्थिति) बताइए।

उत्तर—सल्तनत काल में स्त्रियों की दशा—हिन्दू समाज में विधवाओं को पुन: विवाह का अधिकार नहीं था। अन्तजार्तीय विवाह को सामाजिक मान्यता प्राप्त नहीं थी। पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों को कम सम्मान प्राप्त था। बहुविवाह प्रथा ने स्त्रियों की दशा और भी दयनीय कर दिया था। राजपूतों में सती प्रथा विद्यमान थी। छोटी उम्र में बालिकाओं का विवाह हो जाता था परदे की प्रथा थी। स्त्रियों को शिक्षा सम्बन्धी सुविधायें नहीं थी, मुस्लिम महिला की स्थिति इस अर्थ में बेहतर थी कि विधवा होने पर उन्हें पुन: विवाह का अधिकार प्राप्त था सती प्रथा का उनमें चलन नहीं था। इस प्रकार सल्तनत काल में स्त्रियों की दशा प्राचीन काल के समान उच्च नहीं थी।

अथवा

उत्तर—दिल्ली सल्तनत में गुलामों की दशा—दिल्ली सल्तनत में दासप्रथा की स्थिति अच्छी नहीं थी।

सामान्य वर्ग की आर्थिक स्थिति कमजोर थी दासप्रथा के कारण यह वर्ग और भी दीन व दुर्बल था। सल्तन्त काल में दासों की स्थिति गिरी हुई थी। धनी व्यक्ति अपने घरों में दास रखते थे। दास चार प्रकार के होते थे। (1) खरीदे हुए (2) दान तथा भेंट में प्राप्त, (3) युद्ध बन्दी, (4) अपने आप बिके हुए।

बाजारों में दासों को खरीदने व बेचने की व्यवस्था थी। दास खरीदे व बेचे जाते थे। दास घरेलू कामों में नियुक्त किये जाते थे। दास का दासियों खरीदते समय उनके काम करने की शक्ति पर विचार किया जाता था।

प्रश्न 28. पानीपत के द्वितीय युद्ध का संक्षिप्त वर्णन कीजिए। 4

अथवा

मनसबदारी व्यवस्था पर टिप्पणी कीजिए।

उत्तर—पानीपत का ऐतिहासिक द्वितीय युद्ध अकबर और हेमू के बीच लड़ा गया था। हेमु आदिलशाह का बजीर था। वह बड़ा वीर तथा पराक्रमी था। हेमू के नेतृत्व में अफगानों ने मुगल सेना को पराजित करके दिल्ली पर अधिकार कर लिया था। अकबर में बैरम खाँ के साथ हेमू पर आक्रमण किया। पानीपत के मैदान में हेमू और अकबर के मध्य 5 नवम्बर सन् 1556 को युद्ध हुआ। हेमू की सेना वीरतापूर्वक लड़ी, किन्तु दुर्भाग्य वश हेमू की एक आँख में तीर लग गया और वह घायल होकर हाथी से गिर पड़ा। अकबर ने बैरम खाँ के कहने पर उसका सिर काट लिया और 'गांजी' की उपाधि धारण की। इस युद्ध में अकबर की विजय के साथ भारत में मुगल साम्राज्म की नींब मजबूत हुई।

अथवा

उत्तर—मनसबदारी व्यवस्था—अकबर ने मनसबदारी प्रथा चलाई थी मनसब का अर्थ है पद और प्रतिष्ठ। मनसबदारी का अर्थ है ओहदेदार पदवीधारी। सबसे छोटा मनसब 10 सैनकों का और सबसे बड़ा मनसब 12 हजार सैनिकों का स्वामी होता था। पाँच हजार से ऊपर की संख्या वाले मनसब मुगल राजवंश के राजकुमार होते थे। राज्य का सर्वोच्च मनसबदार अमीर-उल-उमरा कहलाता था। मनसबदारी प्रथा मुगल प्रशासन तथा सैनिक संगठन का प्रमुख आधार थी।

प्रश्न 29. "मुगल साम्राज्य के पतन के लिए औरंगजैब की दक्षिण नीति उत्तदायी थी।" इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

अथवा

शेरशाह के लोक कल्याणकारी कार्यों को समझाइए।

उत्तर—औरंगजेब ने बीजापुर तथा गोलकुण्डा के मुसलमान राज्यों को मुगल साम्राज्य में मिलाकर भयंकर गलती की। इससे मराठे मुगल साम्राज्य में घुलकर लूटपाट करने लगे, बीच में कोई रुकावट नहीं रही। औरंगजैब की नीति के कारण उसे दक्षिण में एक लम्बे और पीड़ादायक युद्ध में फंस जाना पड़ा। इससे मुगल साम्राज्य व सैनिक प्रशासनिक और आर्थिक रूप से खोखला कर दिया। दक्षिण में औरंगजैब के पड़े रहने से उत्तरी भारत के शासकों में गुटबन्दी आ गई। तथा वे एक-दूसरे के खिलाफ कार्य कर साम्राज्य की शक्ति को क्षीण करने लगे।

अथवा

उत्तर—शेरशाह ने जनहित के लिए (1) कई सड़कों का निर्माण कराया जैसे—(i) ग्रांटक रोड, (ii) आगरा-बुरहानपुर, (iii) आगरा-चित्तौड़, (iv) लाहौर-सुल्तान आदि। सड़कों के दोनों ओर छायादार वृक्ष लगाए गये। (2) लेन-देन की सुविधा के लिए सिक्कों का प्रचलन किया। (3) व्यापारी को सिर्फ दो कर ही देने पड़ते हैं। अधिकारियों को उनके साथी ठीक व्यवहार करने के निर्देश

थे। (4) मुद्रा में सुधार कर समस्त देश के लिए एक-सी मुद्रा प्रणाली विकसीत थी। (5) शेरशाह ने डाक भेजने की उत्तम व्यवस्था की थी। सरायें डाक चौकी का काम करती थीं। (6) शिक्षा के लिए मकतब तथा मदरसे खुलवायें। विद्यार्थी तथा अध्यापकों को वृत्तियाँ दी जाती थीं।

प्रश्न 30. मुगलकालीन चित्रकला की विशेषताओं का वर्णन कीजिए। 4

अथवा

सल्तनतकालीन स्थापत्य कला का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर—मुगलकालीन चित्रकला—प्रथम मुगलकाल सम्राट बाबर ने चित्रकला में रुचि ली। हुमायुँ भी चित्रकला का शौकीन था। अकबर ने भी दरबार में महत्वपूर्ण चित्रकारों को आमन्त्रित किया था। मुगल काल में सबसे ज्यादा चित्रकला का विकास जहाँगीर के शासन काल में हुआ। जहाँगीर स्वयं चित्रकार था। वह चित्र देखकर निर्माता का नाम बता देता था। जहाँगीर के समय विरुद्ध चित्रकार अबुल हसन व तुलसी मशहूर थे। जहाँगीर स्वयं चित्रकारी बनाता था। जिसमें भाव व्यक्त होता था। सुन्दर दिखता था। **पर्सी ब्राउन** का कथन है कि जहाँगीर के साथ मुगल चित्रकारी की आत्मा चली गयी।

अथवा

उत्तर—सल्तनत काल की वास्तुकला को तीन चरणों में बाँटा गया है। जिससे तुर्कों द्वारा वास्तुकला के नये स्वरूपों का वर्णन किया गया है। प्रथम चरण खिलजी वंश द्वितीय चरण तुगलक वंश, तुतीय चरण लोदी वंश है।

वास्तुकला में इण्डो मुस्लिम शैली सल्तपत काल की सबसे बड़ी देन थी। तुर्क जो अपने साथ नये तत्व लाये, उनमें भारतीय तत्व भी शामिल हो गये। तुर्क अपने भवनों में मेहराब, गुम्बद का प्रयोग करते थे। तुर्कों ने भवनों को सजाने के लिए नए-नए तरीकों का प्रयोग किया। वे अधिकांश भवनों व मस्जिद को रेखागणितीय आकृतियों, फलों के नमूनों और कुरान की आयतों से सजाते थे। इसके अतिरिक्त तुर्क लोग हिन्दुओं की सजावट विधि का प्रयोग भी करते थे। दिल्ली सल्तनत काल में बने भवनों में स्वास्तिक, कमल और कलश देखे जो सकते हैं। साधारणतया भवनों में लाल-पत्थर का प्रयोग किया जाता था। कहीं-कहीं पर भवन में सुन्दरता की दृष्टि से संगमरमर का प्रयोग किया जाता था।

प्रश्न 31. असयोजग आन्दोलन के प्रमुख कार्यक्रम क्या थे? संक्षेप में समझाइएये। 4

अथवा

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना एवं उद्देश्यों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—असयोजग आन्दोलन के कार्यक्रम—(1) सरकारी उपाधियों व अवैतनिक पदों का त्याग कर दिया जाये तथा जिला व म्यूनिसिपल वार्डों के मनोनीत सदस्य अपने पदों से त्याग-पत्र दे दें। (2) सरकारी दरबारों, स्वागत समारोहों व सरकारी अफसरों के सम्मान में आयोजित कार्यक्रमों में भाग न लें। (3) सरकारी तथा सरकार से सहायता पाने वाले स्कूलों व कॉलेजों का बहिष्कार किया जाये और राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की जाये। (4) सरकारी अदालतों का बहिष्कार तथा पंचायतों द्वारा मुकदमों का निपटारा किया जाये। (5) नई कौंसिलों के चुनाव का बहिष्कार किया जाये। (6) विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया जाए तथा स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग और उसका प्रसार

किया जाये। (7) फौजी, क्लर्क व मजदूरी करने वाले लोग विदेशों में नौकरी के लिए भर्ती न हों।

अथवा

उत्तर—भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 28 दिसम्बर 1885 में हुई इसकी स्थापना मि. ए. ओ ह्यूम ने की।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख उद्देश्य—

(1) राष्ट्र के हितों की रक्षा हेतु तत्पर भारतीयों से सम्पर्क कर मित्रता बढ़ाना।

(2) देश में जनमत संगठित करनें के साथ उन्हें प्रशिक्षित करना।

निर्देश—प्रश्न क्रमांक 32 से 38 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न पर 6 अंक हैं एवं विकल्प दिया गया है। उत्तर की आधिकतम शब्द सीमा 200 शब्द है।

प्रश्न 32. मुगलकाल का सामाजिक जीवन किस प्रकार का था? स्पष्ट करो।

अथवा

अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए कौन-कौन से कार्य किये?

उत्तर—मुगलकाल में समाज तीन विशिष्ट वर्गों में विभाजित था—(i) उच्च वर्ग, (ii) मध्यम वर्ग, (iii) निम्न वर्ग।

1. उच्च वर्ग—पहले वर्ग में सरदार तथा जमींदार आते थे इसमें उच्च शासक वर्ग भी आते थे। शाहजहाँ काल में मराठे भी सरदारों में सम्मिलित थे। उच्च वर्ग के लोंगों कोउच्च वेतन तथा श्रेष्ठ सम्मान प्राप्त था। वे शान और शौकत के साथ जीवन व्यवतीत करते थे। सुन्दर भवन, अच्छा कपड़ा, अच्छा खाना एवं आनन्दपूर्व जीवन होता था। वे सम्राट को भी आभूषण भेंट देते। उच्च अमीर वग प्रारम्भ से सम्राट की बड़ी सेवा की फिर बाद में वे विलासी हो गये, अमीर वर्ग स्वयं शिकार खेलते थे और नाच गाना, चौपड़, कवियों, विद्वानों कारीगरों, साहित्यकारों, संगीतज्ञों, चित्रकारों को संरक्षण प्रदान करते थे। औरंगजेब के शासनकाल में यह वर्ग अस्थिरता तथा अव्यवस्था का पूरा फायदा उठाया। जिससे वे स्वार्थी तथाअ अनुशासनहीन हो गये।

2. मध्य वर्ग—इस वर्ग में व्यापारी तथा मध्यम वर्ग के लोग आते थे। ये वर्ग विलासी नहीं थे परन्तु इन्हें किसी प्रकार का अभाव नहीं था।

3. निम्न वर्ग—इस वर्ग में किसान, मजदूर, श्रमिक आदि आते थे इस वर्ग की आमदनी कम होती थी। इनसे बेकार लिया जाता था। वे अभावग्रस्त जीवन व्यतीत करते थे। इनके पास न रहने के लिए अच्छे मकान न खाने के लिए अच्छा भोजन और न पहनने के वस्त्र थे। कुल मिलाकार इनका जीवन कष्टदायक था।

सामाजिक स्तर—मुगलकाल का सामाजिक स्तर की निम्नलिखित थीं—

(1) अमीर वैभविक जीवन बिताते थे।

(2) लोगों में अतिथि जीवन की आदर सत्कार की भावना थी।

(3) हिन्दू तथा मुसलमान दोनों अंधविश्वास तथा कुरीतियों के शिकार थे।

(4) समाज में स्त्रियों का सम्मान नहीं था।

(5) मुस्लिम समाज में पर्दा प्रथा प्रचलित था।

(6) हिन्दू मुसलमान में बाल विवाह, सती प्रथा, अंधविश्वास जैसी सामाजिक कुरीतियाँ फैली हुई थी।

परिवार में पुत्री के जन्म की खुशियाँ नहीं मनायी जाती थी। स्त्रियों का बाहर काम करना गलत समझा जाता था। राजपूत कालीन ऐसी भी स्त्रियों के नाम मिलते हैं जिन्होंने तत्कालीन राजनीति में अपना प्रभुत्व कायम किया था, जिनमें रानी दुर्गावती, ताराबाई, कर्णवती, मीराबाई के नाम प्रसिद्ध हैं।

अथवा

उत्तर—अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए निम्नलिखित कार्य किए—विद्वानों के एक वर्ग के अनुसार अशोक ने कलिंग युद्ध के तुरन्त बाद बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था। परन्तु उसके अभिलेख के अनुसार ढाई वर्ष बाद बौद्ध धर्म का प्रबल समर्थक बना था।

यद्य" शिलालेखों में अशोक ने धम्म (धर्म) की शिक्षाएँ है तथा" उनमें से कुछ निश्चित रूप से बौद्ध धर्म की शिक्षाएँ है। भाबरा अभिलेख में आशोक बुद्ध धर्म संघ के प्रति आदर व्यक्त करता है। रूम्मिनदेई स्तम्भ अभिलेख बताता है कि अशोक महात्मा बुद्ध के स्थान, लुम्बिनी गया था। उसने इसे कर मुक्त कर दिया था। अशोक बोध गया जैसे अन्य तीर्थो में भी गया था। इसके अतिरिक्त उसने अनेक नए स्तूत बनवाए और पुराने स्तूपों की मरम्मत कराई।

अशोक ने संघ की गतिविधियों या क्रियाकलापों में भी भाग लिया। उसके शिलालेखों में से एक में कहा गया है कि किसी को भी संघ को हानि पहुँचाने का अधिकार नहीं है क्योंकि मेरी इच्छा है कि संघ संगठित रहे और वह दीर्घ काल तक चले।

बौद्ध स्त्रोतों के अनुसार बौद्धों की तीसरी सभा का आयोजन अशोक के संरक्षण में हुआ था। सभा की अध्यक्षता प्रसिद्ध भिक्षु मोग्गलिपुत्र तिस्स ने की थी। हमें बताय गया है कि सभी के समापन पर बौद्ध भिक्षु कश्मीर, गांधार, पर्ततीय क्षेत्र स्वर्णभूमि और लंका भेजे गये थे। इनका कार्य धर्म प्रचार करना था। इस प्रकार बौद्ध धर्म केवल अशोक के साम्राज्य में ही नहीं वरन् विदेशों में भी फैला।

अशोक ने तीर्थ स्थानों का भ्रमण किया और स्तूप बनवाएँ। उसने बौद्ध धर्म से सम्बन्धि ात प्रलेख जारी किए। उसके शासन काल में बौद्धों की तीसरी सभा हुई और बहुत से धर्म प्रचारक

प्रश्न 33. अशोक का धम्म क्या था? उसकी विशेषताएँ लिखिए। 6

अथवा

हूण कौन थे? उनके आक्रमण का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर—अशोक का 'धम्म' धार्मिक क्रान्ति नहीं वरन् विश्व बन्धुत्व की शिक्षा प्रदान करता है, जिसमें सभी संप्रदायों की अच्छी बातें सम्मिलित की गई थी। धम्म में संयम, शुद्धि और अहिंसा पर जोर दिया गया है, जबकि द्वेष, क्रोध तथा अहंकार को त्यागने की शिक्षा मिलती है। उसने निरन्तर मानव की नैतिक उन्नति का प्रयास किया। जिन सिद्धान्तों के पालन से नैतिक उन्नति सम्भव थी, अशोक के लेखों में उन्हें ही धम्म कहा गया है।

अशोक के धम्म की विशेषताएँ—(1) अशोक की 'धम्म' (धर्म) सार्वभौमिक था जिसमें प्रचलित सभी धर्मों की बातें समाहित थीं। इसमें संकीर्णता को कोई स्थान नहीं दिया गया था। (2) धम्म अहिंसा पर विशेष जोर देता है और सभी प्राणियों के प्रति दया का भाव जगाता है। (3) आडम्बरपूर्ण अनुष्ठानों के स्थान पर मूल धार्तिक स्वभाव पर बल दिया गया है। (4) धम्म किसी

भी धर्म को स्वीकार कारने की अनुमति प्रदान करता है। यह किसी भी देवी-देवता के अपमान की अनुमति नहीं देता। (5) धम्म का प्रचलन शान्ति्'य, अहिंसा तथा प्रेम के आधार पर किया गया है।

अथवा

उत्तर—हून मध्य एशिया के बर्बर का आक्रमण लडाकू जाति थी। प्रत्येक परिस्थितियों में उन्हें अपना देश छोड़ना पड़ा था। यहीं से ये फिर छोटे-छोटे समूहों मै दुनिया के विभिन्न भागों में—

हूणों के आक्रमण का प्रभाव

1. हूणों के आक्रमण का प्रचीन भारत के इतिहास पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। हूणों के 159 आक्रमणों ने गुप्त साम्राज्य की नींव ही हिला दी।

2. हूणों ने भारतीय संस्कृति एवं कला को नष्ट करने का दुस्साहस किया। फलस्वरूप मन्दिर, विहार और मठ बड़े पैमाने पर तोड़ दिये गये। ये संस्कृति के केन्द्र होते थे और इन पर भारतीयों की आस्था अत्यधिक थी इस प्रकार दुर्लभ ऐतिहासिक स्त्रोत नष्ट कर दिये ।

3. हूणों के आक्रमण का भारतीय समाज पर प्रभाव यह पड़ा कि यहाँ पर छोटे-छोटे राज्यों का उदय होने लगा, इन राज्यों में लोकतान्त्रिक प्रशासन के स्थान पर निरंकुश शासन स्था"त होने लगा। प्रजा हित को त्याग दिया शोषण का युग प्रारम्भ हुआ।

4. निरन्तर विदेशी आक्रमणों से भारतीयों का सामाजिक जीवन भी प्रभावित हुआ। ये भारतीयों से घुल-मिल गये इससे नयी जातियों का अविर्भाव हुआ, धीरे-धीरे उनकी संख्या में वृद्धि हुई।

5. हूणों के आक्रमण से सर्वाधिक क्षति धर्म को हुई। बौद्ध भिक्षुओं पर अत्याचार और बाद्ध विहारों को नष्ट करने के फलस्वरूप बौद्ध धर्म अब मरणासन्न अवस्था में पहुँचने लगी।

प्रश्न 34. मुहम्मद गोरी के भारत आगमन एवं आक्रमणों के उद्देश्यों का वर्णन कीजिए।

अथवा

विजय नगर साम्राज्य की उपलब्धियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—शाहबुद्दीन मुहम्मद गोरी का आगमन—महमूद गजनबी की मृत्यु 1030 ई.को हुई थी। उसकी मृत्यु के बाद मध्य-एशिया में सलजुक तुर्की साम्राज्य का उदय हुआ। महमूद के निर्बल उत्तराधिकारी उनका सामना न कर सकें। गजनी साम्राज्य धीरे-धीरे गजनी और पंजाब तक सीमित रह गया और वह भारत के लिये भय का कारण नहीं रहा था। सलजुक साम्राज्य के पतन के बाद मध्य-एशिया में दो शक्तिशाली राज्यों का उदय हुआ ये राज्य थे—ईरान का ख्वारज्म राज्य और उत्तर पश्चिमी अफगानिस्तान के गोरी में गोरी साम्राज्य। गोरी गजनबी साम्राज्य के सामन्त रह चुके थे। उन्होंने गजनबी साम्राज्य की कमजोरियों का लाभ उठाकर अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी।

1173 ई. में शाहबुद्दीन मुहम्मद गोरी (1173-1205 ई.), जिसे मुईजुद्दीन बिन साम भी कहा जाता है, गोर के राजसिंहासन पर बैठा। गोर साम्रज्य इतना शक्तिशाली नहीं था कि वह ख्वारज्म साम्रज्य की बढ़ती शक्ति का सामना कर पाता। दोनों के मध्य खुरासान झगड़े का कारण था और अन्त में ख्वारज्म ने खुरासान विजय कर लिया। गोर वालों ने समझ लिया कि उन्हें अब मध्य-एशिया में कुछ नहीं मिलने वाला है। गोर वाले अपने साम्राज्य विस्तार की महत्वकांक्षा को भारत में विस्तार कर पूरी करने के लिए विवश हुआ।

मुहम्मद गोरी का उद्देश्य लूटमार करने की अपेक्षा भारत में अपना एक स्थायी साम्राज्य स्था"त करना था। उनके आक्रमण सुनियोजित थे और जब भी उसने कोई प्रदेश जीता तो उसने वहाँ अपनी अनुपस्थिति में विजित प्रदेश की व्यवस्था के लिए अपना प्रतिनिधि छोड़ा। उसके आक्रमणों का ही परिणाम था कि उसने विन्धय पर्वत की उत्तरी प्रदेश में तुर्की सल्तनत की स्थापना की।

उत्तर— **विजय नगर राज्य की उपलब्धियाँ**

1. संगम वंश (1336 से 1485 ई. तक)—

(1) हरिहर प्रथम (1336 से 1353 ई. तक)—हरिहर प्रथम ने अपने भाई बुककराय के सहयोग से विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की। उसने धीरे-धीरे साम्राज्य का विस्तर किया। होयसल वंश के राजा बल्लाल की मृत्यु के बाद उसने उसके राज्य को अपने राज्य में मिला लिया। 1353 ई. हरिहर की मृत्यु हो गई।

(2) बुक्काराय (1353 से 1379 ई. तक)—बुक्काराय ने गद्दी पर बैठते ही राजा की उपाधि धारण की। उसका पूरा समय बहमनी साम्राज्य के साथ संघर्ष में बीता। 1379 ई. को उसकी मृत्यु हुई। वह सहिष्णु तथा उदार शासक था।

(3) हरिहर द्वितीय (1379 से 1404 ई. तक)—बुक्काराय की मृत्यु के उपरोन्त उसका पुत्र हरिहर द्वितीय सिंहासनारूढ़ हुआ तथा साथ ही महाराजाधिराज की पद्वी धारण की। इसने केई क्षेत्रों को जीतकर साम्राज्य का विस्तार किया। 1404 ई. में हरिहर द्वितीय कालकवलित हो गया।

बुक्काराय द्वितीय (1404-06 ई.) देवराय प्रथम (1404-10 ई.) विजय राय (1410-19 ई.) देवराय द्वितीय (1419-44 ई.), मल्लिकार्जुन (1444-65 ई.) तथा विरूपाक्ष द्वितीय (1465-65 ई.) इस वंश के अन्य शासक थे। देवराज द्वितीय के समय इटली के यात्री निकोलोकोण्टी 1421 ई. को विजयनगर आया था। अरब यात्री अब्दुल रज्जाक भी उसकी के शासनकाल 1443 ई. में आया था, जिसके विवरणों से विजय नगर राज्य के इतिहास के बारे में पता चलता है।

अब्दुल रज्जाक के तत्कालीन राजनीतिक स्थितियों का वर्णन करते हुये लिखा है—"यदि जो कुछ कहा जाता है वह सत्य है जो वर्तमान राजवंश के राज्य में तीन सौ बन्दरगाह हैं, जिनमें प्रत्येक कालिकट के बराबर है, राज्य तीन मास 8 यात्रा की दूरी तक फैला है, देश की अधिकांश जनता खेती करती है। जमीन उपजाऊ है, प्राय: सैनिकों की संख्या 11 लाख होती है।" उनका बहमनी सुल्तानों के साथ लम्बा संघर्ष हुआ। विरूपाक्ष की अयोग्यता का लाभ उठाकर नरसिंह सालुव ने नये राजवंश की स्थापना की।

2. सालुव वंश (1486 से 1505 ई. तक)—एक सुयोग्य वीर शासक था। इसने राज्य में शान्ति की स्थापना की तथा सैनिक शक्ति में वृद्धि की। उसके बाद उसके दो पुत्र गद्दी पर बैठे, दोनों दुर्बल शासक थे। 1505 ई. में सेनापति नरस नायक ने नरसिंह सालुव के पुत्र को हराकर गद्दी हथिया ली।

3. तुलुव वंश (1505 से 1509 ई. तक)—1505 ई. में सेनापति नरसनायक तुलुव की मृत्यु हो गई। उसे पुत्र वीरासिंह ने सालुव वंश के अन्तिम शासक की हत्या कर स्वयं गद्दी पर अधिकार कर लिया।

(2) कृष्णादेव राय तुलुव (1509 से 1525 ई.)—वह विजयनगर साम्राज्य का सर्वाधिक

महान् शासक माना जाता है। यह वीर और कूटनीतिज्ञ था। इसने बुद्धिमानी से आन्तरिक विद्रोहों का दमन किया तथा उड़ीसा और बहमनी के राज्यों को फिर से अपने अधिकार में कर लिया। इसके शासनकाल में साम्राज्य विस्तार के साथ ही साथ कला तथा साहित्य की भी उन्नति हुई। स्वयं कवि व ग्रन्थों का रचयिता था।

(3) अच्युत राय (1529 से 1542)—कृष्णदेव राय का सौतेला भाई।

(4) वेंकट प्रथम (1541 से 1562 ई.)—छः माह शासन किया।

(5) सदाशिव (1542 से 1562 ई.)—वेंकट का भतीजा शासक बना। ताली कोट का युद्ध हुआ। विजयनगर राज्य के विरोध में एक संघ का निर्माण किया। इसमें बीजापुर, अहमदनगर, बीदर, बरार की सेनाएँ शामिल थी।

प्रश्न 35. अकबर की उदारता एवं सहिष्णु की नीति थी? समझाइए।

अथवा

हुमायूँ के व्यक्तित्व की कमजोरियाँ क्या थीं? समझाइए।

उत्तर—अकबर ने अपने पूर्ववर्ती शासकों की धार्मिक कट्अरता की नीति को त्याग दिय, ध ार्मिक सहिष्णुता की नीति का पालन किया।

(i) हिन्दुओं से वैवाहिक सम्बन्ध स्था"त करना—राजपूतों से पारिवारिक सम्बन्ध कायम होने हिन्दू रीति-रिवाज संस्कृति का प्रभाव अकबर के ऊपर पड़ा।

(ii) बलपूर्वक धर्म परिवर्तन की नीति का त्याग—अकबर के पूर्ववर्ती शासकों ने युद्ध में पकड़े गये स्त्री-पुरुषों को धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य किया था। अकबर ने इस नीति का त्याग कर बलपूवर्क धर्म परिवर्तन पर रोक लगा दी।

(iii) तीर्थ यात्रा कर व जजिया कर की समाप्ति—अकबर के पूर्ववर्ती शासकों द्वारा हिन्दुओं पर तीर्थ यात्रा और जजिया कर लिया जाता था तथा जो इन करों को देने में असमर्थ होते थे, उन्हें धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य किया जाता था। अकबर ने ने 1564 ई. में इन करों को समाप्त कर हिन्दुओं के प्रति समानता का व्यवहार किया। उसके इस कदम से व्यापक हिन्दू समाज में अकबर के प्रति सम्मान का भाव जागृत हुआ।

(iv) धार्मिक स्वतंत्रता की नीति—अकबर ने अपने पूववर्ती शासकों की भाँति इस्लाम को राज्य धर्म नहीं बनाया वरन् उसने अपनी प्रजा को धार्मिक स्वतंत्रा प्रदान की। हिन्दुओं को उनके रीति-रिवाजों के अनुसार उपासना करने, धार्मिक स्थलों या मन्दिरों के निर्माण की स्वतंत्रता प्रदान की। हिन्दुओं से जजिया कर हटाया उन्हें धार्मिक स्वतंत्रा दी, दूसरी ओर इस्लाम के उलेमाओं के राजनीतिक, धार्मिक व सामाजिक एकाधिकार भी समाप्त कर दिया।

(v) हिन्दुओं की उच्च पदों पर नियुक्ति—1562 ई. में अकबर ने हिन्दुओं और मुसलमानों सभी लोगों के लिए साम्राज्य में सभी पद योग्यता के आधार पर खोल दिये। इससे उसका राजदरबार बीरबल, टोडरमल, मानसिंह जैसे प्रतिभाशाली लोगों से भर गया। उसकी इस नीति का हिन्दुओं पर बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा और वे शासन के निकट आने लगे।

(vi) हिन्दुओं के रीति-रिवाओं के प्रति उदार—अकबर ने हिन्दुओं के रीति-रिवाजों एवं आचार-विचार के प्रति उदार का भाव व्यक्त किया। उसने हिन्दुओं का त्यौहार गनाना प्रारम्भ किया।

अकबर कभी-कभी तिलक लगाता था, झरोखा दर्शन देता था और तुलादान करता था। उसने मूँछ रखना प्रारम्भ कर दिया था। उसके पुत्र सलीक का विवाह उसने हिन्दू रीति से करवाया। इतना नहीं जबरदस्ती मुसलमान बनाये गये हिन्दुओं को पुन: हिन्दू धर्म अपनाने की अनुमति प्रदान की। अकबर की इस धार्मिक उदारता का हिन्दू समाज पर अच्छा असर हुआ आम जनता मुस्लिम संस्कृति की ओर आकर्षित हुई। उसी प्रकार आम मुसलमान भी हिन्दू सांस्कृतिक धारा से जुड़े रहे।

(vii) इबादतखाना की स्थापना—अकबर ने 1576 ई. में फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना की स्थापना की। यहाँ धर्म, कानून, दर्शन और सांसारिक ज्ञान आदि पर चर्चा करने के लिए सभी धर्मो के विद्वान आते थे। प्रति वृहस्पतिवार को यहाँ वाद-विवाद और धार्मिक गोष्ठिया होती थी। अकबर प्रत्येक धर्म व नियमों को ध्यानपूर्वक सुनता था। सम्राट स्वयं इसमें सम्मिलित होता था। इन धार्मिक व ज्ञान की चचाओं से अकबर ने अनुभव किया कि विश्व के सभी धर्म और विश्वास एक ही ईश्वर या सत्य की ओर प्रेरित करते हैं। अत: अन्य धर्मो के प्रति उसके मन में उदारता व श्रद्धा की भावना बढ़ी।

(viii) दीन-ए-इलाही—अकबर ने धार्मिक संकीर्णता की सीमाओं को तोड़कर सभी धर्मो की श्रेष्ठ बातों को लेकर एक नये धर्म दीन-ए-हलाही की स्थापना की। उसका यह कार्य राष्ट्रीयता की भावना से ओत-प्रोत था। अकबर इस नये धर्म के माध्यम से भारत के हिन्दुओं और मुसलमानों को एक मंच पर खड़ा करना चाहता था। इस प्रकार अकबरकी उदारता और सहिष्णुता की नीति समय और माँग और राजनीतिक आवश्यकता थी।

अथवा

उत्तर—हुमायूँ के व्यक्तित्व की कमजोरियाँ निम्नलिखित है—

(1) हुमायूँ स्वयं अपना शत्रु था। उसे अफीम तथा शराब की आदत थी। उसमें दृढ़निश्चय का अभाव था। शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता भी उसमें नहीं थी। वह दयालु था। उसमें राजनीतिक दूरदर्शिता की कमी थी। राज्य का बँटबारा कर उसने स्वयं ही आय के स्त्रोत बन्द कर लिये थे, जिससे उसकी युद्ध करने की शक्ति काफी कम हो गयी थी।

(2) हुमायूँ की तुलना में शेरखाँ कुशल सेनापति तथा सैन्य संगठक था। उसने अफगानों को एक झण्डे के नीचे संगठित कर लिया था, जबकि हुमायूँ के भाइयें ने उसके साथ कपटपूर्ण व्यवहार किया।

(3) हुमायूँ ने दो दुश्मन एक साथ पैदा कर लिए थे। जब वह बहादुरशाह की ओर बढ़ता तो शेरखाँ उसके सामने कठिनाईयाँ पैदा कर देता था और जब शेरखाँ को दबाने आगे बढ़ता तो बहादुरशाह उसके विरोध में उपद्रव खड़ा कर देता था। ऐसी स्थिति में हुमायूँ की विजय संदिग्ध थी।

(4) हुमायूँ ने न तो साम्राज्य को संगठित किया, न शासन में सुधार किया और न ही प्रजा की सहानुभूति प्राप्त करने का प्रयास किया।

हुमायूँ की मृत्यु—24 जनवरी, 1556 ई. को शाम को वह अपने पुस्तकालय के छत पर बैठकर कुछ प्रमुख सरदारों तथा ज्योतिषशास्त्र वेत्ताओं से बात कर रहा था। वर्ता खत्म कर वह नमाज पढ़ने के लिए उठा और सीढ़ियों से उतरते समय उसका पैर फिसला और वह गिर पड़ा जिससे उसका सर फट गया तथा 27 जनवरी, 1556 ई. को उसका निधन हो गया।

प्रश्न 36. शिवाजी के सैनिक संगठन का वर्णन कीजिए। 6

अथवा

मराठा शक्ति के उदय के कारणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—शिवाजी उच्चकोटी के सेनापति थे, उनका सुव्यवस्थित सैन्य संगठन था। शिवाजी ने केवल लड़ने के उद्देश्य से एक विशाल मराठी सेना संगठित की थी। उनकी सेना में 5 अंग थे—(1) घुड़सवानर, (2) पैदल सेना, (3) हाथी, (4) तोपखाना, (5) नौसेना।

(1) घुड़सवार—घुड़सवार सैनिक शिवाजी की सेना के मुख्य अंग थे, उनके पास 30-40 हजार घुड़सवार थे। यह सेना सेनापति के अधीन होती थी। उसे सरेनौबत भी कहते थे। घुड़सवार दो प्रकार के होते थे—

(i) बारगीर—सरकारी वेतन पर कार्य करते थे।

(ii) सिलाहदार—ये घोड़े या किराए के सैनिक होते थे। ये स्वयं अपने घोड़े तथा अस्त्र-शस्त्र का प्रबन्ध करते थे।

(2) पैदल सेना—पैदल सैनिकों का एक नायक होता था, नायकों के ऊपर हवलदार, जमादार, हजारी, दस हजारी होते थे। यह सेना सेनापति के अधीन होती थी। शिवाजी की एक लाख पैदल सेना थी।

(3) हाथी—शिवाजी के पास 1260 हाथी तथा 1500 से 3000 ऊँट थे।

(4) तोपखाना—शिवाजी के पास एक शक्तिशाली तोपखाना था। जिसमें 80 तोपें थी गोलाबारूद भी उनके अनुरूपज था। फ्रांसीसियों से गोलाबारूद खरीदा जाता था।

(5) नौसेना—शिवाजी के पास 200 जहाज थे। उनका बड़ा बेटा कोलाबा में रहता था।

किलों का महत्व—शिवाजी की सैन्य व्यवस्था में किलों का बड़ा महत्व था। इन्हीं किलों के दुर्गों में युद्धकाल में लोग सुरक्षित रखे जाते थे। ऐसे दुर्गों की कुछ संख्या 280 थी, उनके पीछे कोष का बहुत धन लागाया जाता था।

सैन्य अनुशासन—शिवाजी की सेना अनुशासित थी सैनिकों की सुख-सुविधा का सदा ख्याल रखा जाता था। अनुशासनहीनता पर कठोर दण्ड दिये जाते थे। युद्ध में मरने वाले सैनिकों के परिवारों की पूरी-पूरी देखभाल की जाती थी। युद्ध क्षेत्र में कोई सैनिक अपनी पत्नी को नहीं ले जा सकता था। इस नियम का उलंघन करने वालों को प्राणदण्ड की सजा दी जाती थी। लूटपाट का धन राजकोष में जमा किया जाता था। स्त्रीयों पर अत्याचार नहीं होते थे। धार्मिक पुस्तकों को भी नुकसान नहीं पहुँचाया जाता था। इस उत्तम व्यवस्था के कारण ही शिवाजी के सैनिक अभियान सफल होते थे।

अथवा

उत्तर—मराठा शक्ति के उदय के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

1. महाराष्ट्र में धार्मिक जागृति—मुगलों के आगमन के पूर्व महाराष्ट्र में अनेक सुधारक हुए। उन्होंने जातिगत भेद-भाव की निन्दा की तथा मराठो को एकता के सूत्र में "रोया। शिवाजी के गुरु रामदास ऐसे ही धर्म प्रचारकों में से एक थे। एकनाथ तथा तुकाराम ने भी महाराष्ट्र में यही काम किया। **डॉ. सरदेसाई** के अनुसार, 'गुरु रामदास की सहायता के बिना शिवाजी की सफलता असम्भव थी।'

2. प्राकृतिक कारण—महराष्ट्र की प्रकृति ने मराठों का विशिष्ट निर्माण किया है। पहाड़ी प्रदेश, वर्षा की कमी तथा बंजर भूमि की अधिकता ने मराठों को परिश्रमी बना दिया है। पहाड़ियाँ

उनकी सुरक्षा के लिए किलों का कार्य करती थीं। इन अजेय दुर्गों के भीतर रहकर वे शत्रुओं को सहजता से पराजित कर देते थे।

3. सैनिक आधार—मराठे दक्षिण के मुस्लिम राज्य अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुण्डा की सेना में बड़ी संख्या में काम करते थे। अहमदनगर में उन्होंने प्रशासकीय कार्य का भी अनुभव प्राप्त किया तथा सैनिक शिक्षा अर्जित की। शिवाजी के "ता शाहजी भोंसले ने अहमदनगर के कुद भागों में अधिकार कर लियाथा। गोलकुण्डा मराठे भी प्रशासकीय पदों पर कार्य करते थे तथा सेना में अच्छे पदों पर रहकर कार्य कर रहे थे। इस अनुभव ने उन्हें मुगल साम्राज्य से टक्कर लेने की शक्ति प्रदान की।

4. राजनीतिक चेतना—देश की राजनीतिक परिस्थितियों ने उन्हें संगठित रहने के लिए बाध्य किया। दक्षिण की शिया रियासतें आपस में लड़कर शक्तिहीन हो गई थीं। दक्षिण में उनका कोई प्रतिद्व न्द्वी नहीं था। इस राजनीतिक रिक्तता को भरने का अवसर मराठों को शिवाजी के नेतृत्व में प्राप्त हुआ। शिवाजी की दृढ़ता, संगठन क्षमता व दूरदर्शी योजनाओं में मराठे अपने अभियान में सफल हुए।

5. भाषा एवं साहित्य—संत तुकाराम तथा एकनाथ ने मराठों में मातृभाषा के प्रति प्रेम उत्पन्न किया। एक भाषा तथा एक धर्म ने उन्हें संगठित रहने के लिए बाध्य किया। एकता के साथ भाई चारे की भावना को भी बल मिला। इस तरह साहित्य तथा भाषा ने भी मराठा जाति के संगठन में महत्वपूर्ण योगदान किया।

प्रश्न 37. भक्ति आन्दोलन की विशेषताएँ लिखिए। **6**

अथवा

सूफी मत के प्रमुख सिद्धान्त क्या हैं?

उत्तर—भक्ति आन्दोलन की विशेषतायें—भक्ति आन्दोलन की निम्नलिखित विशेषतायें है। जो निम्नानुसार है—

(1) एक ईश्वर में आस्था—ईश्वर एक है वह सर्व शक्तिमान है।

(2) बाह्यऽम्बरों का विलये—भक्ति आन्दोलन के संतों ने कर्मकाण्ड का खण्डन किया। सच्ची भक्ति से मोक्ष एवं ईश्वर की प्राप्ति होती है।

(3) सन्यास का विरोध—भक्ति आन्दोलन के अनुसार यदि सच्ची भक्ति है ईश्वर में श्रद्धा है तो गृहस्थ में ही मोक्ष मिल सकता है।

(4) वर्ण व्यवस्था का विरोध—भक्ति आन्दोलन के आन्दोलन के प्रवतकों ने वर्ण व्यवस्था का विरोध किया है। ईश्वर के अनुसार सभी एक है।

(5) मानव सेवा पर बल—भक्ति आन्दोलन के समर्थकों ने यह माना कि मानव सेवा सर्वोपरि है। इससे मोक्ष मिल सकता है।

(6) हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रयास—भक्ति आन्दोलन के द्वारा संतों ने लोगों कोयह समझाया कि राम, रहीम में कोई अन्तर नहीं।

(7) स्थानीय भाषाओं में उपदेश—संतों ने अपना उपदेश स्थानीय भाषाओं में दिया। भक्तों ने इसे सरलता से ग्रहण किया।

(8) समन्वयवादी प्रवृत्ति—संतो, चिन्तकों, विचारकों ने ईर्ष्या की भावना को समाप्त करके

लोगों में सामजंस्य, समन्वय की भावनाओं को प्रोत्साहन दिया।

(9) गुरु के महत्व में वृद्धि—भक्ति आन्दोलन के संतों ने गुरु एवं शिक्षक के महत्व पर बल दिया। गुरु ही ईश्वर के रहस्य को सुलझाने एवं मोक्ष प्राप्ति में सहायक होता है।

(10) समर्पण की भावना—समर्पण की भावना से सत्य का साक्षात्मकार एवं मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

(11) समानता की भावना—ईश्वर के समक्ष सभी लोग समान है। ईश्वर सत्य है। सभी जगह विद्यमान है। उनमें भेदभाव नहीं है।

यह भक्ति मार्ग का सही रास्ता है।

अथवा

प्रश्न 3. सूफी मत के प्रमुख सिद्धान्तों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—सूफी मत के प्रमुख सिद्धान्त निम्न प्रकार हैं—

(1) ऐकेश्वसरवादी—सूफी मतावलम्बियों का विश्वास था कि ईश्वर एक है और वे अद्व ैतवाद से प्रभावित थे उनके अनुसार अल्लाह और वन्दे में कोई अन्तर नहीं है। वन्दे के माध्यम से ही खुदा तक पहुँचा जा सकता है।

(2) भौतिक जीवन का त्याग—वे भौतिक जीवन का त्याग करके ईश्वर में लीन हो जाने का उपदेश देते थे।

(3) शान्ति व अहिंसा में विश्वास—वे शान्ति व अहिंसा में हमेशा विश्वास रखते थें।

(4) सहिष्णुता—सूफी धर्म के लोग उदर होते थे वे सभी धर्म के लोगों को समान समझते थे।

(5) प्रेम—उनके अनुसार प्रेम से ही ईश्वर प्राप्त हो सकते हैं। भक्ति में डूबकर हजी इन्सान परमात्मा को प्राप्त करता है।

(6) इस्लाम का प्रचार—वे उपदेश के माध्यम से इस्लाम का प्रचार करना चाहते थे।

(7) प्रेमिका के रूप में कल्पना—सूफी संत जीव को प्रेमी व ईश्वर को प्रेमिका के रूप में देखते थे।

(8) शैतान बाध—उनके अनुसार ईश्वर की प्राप्ति में शैतान सबसे अधिक होते हैं।

(9) हृदय की शुद्धता पर जोर—सूफी संत दान, तीर्थ यात्रा, उपवास को आवश्यक मानते थे।

(10) गुरु एवं शिष्य का महत्व—पीर (गुरु) मुरीद शिष्य के समान होते थे।

(11) बाह्य आडम्बर का विरोध—सूफी संत बाह्य आडम्बर का विरोध व पवित्र जीवन पर विश्वास करते थे।

(12) सिलसिलों से आबद्ध—सूफी संत अपने वर्ग व सिलसिलों से सम्बन्ध रखते थे।

प्रश्न 4. भक्ति आन्दोलन का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा ? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भक्ति आन्दोलन का भारत पर निम्न प्रकार प्रभाव पड़ा—

(1) धार्मिक प्रभाव—धार्मिक कट्टरता समाप्त हो गई, सहिष्णुता की भावना जाग्रत हो गयी।

(2) अंध विश्वासों में कमी—अंध विश्वास एवं बाह्य आडम्बर, पाखण्ड आदि दूर हो गये।

(3) ईर्ष्या द्वेष में कमी—भक्ति मार्ग से लोगों के मन में जो ईर्ष्या द्वेष की भावना समाप्त होकर एकता जाग्रत हो गई।

(4) समन्वय की भावना में वृद्धि हुई—हिन्दू, मुस्लिम में कटुता कम हो गई।

(5) धर्म निरपेक्ष भावना में वृद्धि—सभी धर्मों में एकता जाग्रत हुई। यही कारण था कि अकबर जैसे सम्राट आए।

प्रश्न 38. भारत में उग्र राष्ट्रवाद के उदय के कारण बताइये।

अथवा

बंगाल विभाजन का राष्ट्रीय आन्दोलन पर क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर—उग्रराष्ट्रवाद के उदय केकारण निम्नलिखित हैं—

(1) सन् 1892 से 1905 तक आने वाले ब्रिटेन के गर्वनर जनरल प्रबल साम्राज्यवादी थे।

(2) नरम दल के नेताओं द्वारा जनता की आवाज ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासकों तक पहुँचाने में सफल नहीं हो सके।

(3) पूना में प्लेग होने एवं कमिश्नर रैण्ड की हत्या की गई अंग्रेजों की कार्यवाही से असन्तोष।

(4) लार्ड कर्जन का शासन काल-जैसे बंगाल विभाजन।

(5) शिक्षित भारतीयों का अंग्रेजों से असन्तोष।

(6) विश्व में घटित घटनाओं का प्रभाव।

(7) राष्ट्रवादी नेताओं का नेतृत्व प्राप्त होना।

(8) बाल, पाल एवं लाल की उग्रवादी गतिविधियाँ।

(9) बाल गंगाधर तिलक द्वारा सम्पादित मराठा एवं केसरी समाचार पत्रों का प्रभाव।

उग्रवादियों के कार्यक्रम व नीतियाँ

उग्रवादी, कांग्रेस की उदार और नरम नीति के विरोधी थे। उनकी मान्यता थी कि स्वतंत्रता भीख माँगने से प्राप्त नहीं होती, उसके लिए संघर्ष और बलिदान की आवश्यकता होती है। साम्राज्यवादी शक्ति कभी भी अपने साम्राज्य को छोड़ने के लिए तैयार नहीं होगी, जब तक कि हिंसात्मक संघर्ष न किया जाए। इन उग्रवादियों का उद्देश्य 'स्वराज' था। स्वराज की अपनी अवधारणा को स्पष्ट करते हुए तिलक ने स्पष्ट किया था, कि स्वराज का अर्थ है भारत में भारतीयों की वही अधिकार प्राप्त हो जो इंग्लैण्ड में अंग्रेजों को प्राप्त है। स्वराज प्राप्त करने के लिये वे हिंसक क्रान्ति उचित नहीं मानते थे। उनके कार्यक्रम हर प्रकार थे—**प्रथम**—वे अहिंसक किन्तु कठोर उपायों द्वारा विदेशियों को देश छोड़ने के लिए बाध्य करना चाहते थे। **द्वितीय**—वे देश के प्राचीन गौरव का बखान करके जनता में राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत करना चाहते थे, ताकि आम जनता अंग्रेजो के विरुद्ध संगठित होकर उनका प्रतिकार कर सके। शिवाजी, राणाप्रताप, गुरु गोविंद सिंह आदि उनके आदर्श महापुरुष थे। **तृतीय**—उग्रवादियों ने जनता की धार्मिक भावनाओं को भी जाग्रत करने का कार्य किया ताकि सर्वसाधारण लोगों में देश के प्रति कर्त्तव्य भावना का विकास हो और वे अंग्रेजों के विरुद्ध हो जायें। **चतुर्थ**—उनका कार्यक्षेत्र भारत की आम जनता थी जो प्राचीन गौरव से ओत-प्रोत थी। देश की नवयुवकों ने उसके विचारों को अधिक अपनाया तथा उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलने

के लिए तत्पर हो उठे।

अथवा

उत्तर–19 जुलाई 1905 ई. को लार्ड कर्जन के द्वारा बंगाल का विभाजन कर दिया गया। बंगाल के विभाजन की तीव्र प्रतिक्रिया हुई। बंगभंग विरोधी आन्दोलन 7 अगस्त 1905 को प्रारम्भ हुआ।

विभाजन के कारण जो उथल-पुथल का वातावरण उत्पन्न हुआ उसमें बॉयकॉट और स्वदेशी आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। इस प्रकार विदेशी शासन के विरुद्ध जनता की भावना को जाग्रत करने के लिए विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग शक्तिशाली साधन सिद्ध हुए। स्वदेशी विषय में **लाला लालपत राय** ने कहा था, "मैं समझता हूँ कि मेरे देश की मुक्ति इसी से हो सकती है। स्वदेशी आन्दोलन से हममें आत्माभिमान, आत्म-विश्वास, आत्म निर्भरता और पुरूषार्थ की भावना जाग्रत होगी।"

स्वदेशी और बॉयकॉट आन्दोलन समस्त देश में फैल गया। विदेशी वस्तुओं को बेचने वाली दुकानों पर धरना दिया गया। इस आन्दोलन में विद्यार्थियों ने प्रमुख रूप से भाग लिया। सारे देश में सभाएँ की गई और समितियाँ बनाई गई। सरकार ने दमन-चक्र चलाया। सभाएँ करना और वन्दे मातरम् का गीत गाना निषिद्ध घोषित कर दिया गया।

बंगभंग का राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रभाव

(1) बौद्धिकवर्ग के मन में यह भावना जाग्रत हुई कि स्वराज्य माँगने से नहीं बल्कि संघर्ष करने से प्राप्त होगा।

(2) सन् 1907 के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस गरम व नरम दल दो भागों में विभाजित हो गई।

(3) भारत के कई भागों में बंगाल, पंजाब, महराष्ट्र आदि में कई क्रान्तिकारी और आतंकवादी संगठनों का जन्म हुआ। इन संगठनों ने कई उच्च अंग्रेज अधिकारियों की हत्यायें की।

(4) अंग्रेजों ने मुस्मिल वर्ग को संगठित कर हिन्दुओं के विरुद्ध संगठन तैयार करने का काम किया। परिणाम स्वरूप सन् 1906 में मुस्लिम लीग की स्थापना हुई।

❑

सॉल्वड पेपर

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

कक्षा 12

विषय : इतिहास

सेट—II (मई-जून, 2012)

समय : 3 घण्टे] **[पूर्णांक : 100**

निर्देश—सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।

प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक बहुविकल्पीय प्रश्न है। 6 से 16 तक रिक्तस्थान, 17 से 22 तक उचित सम्बन्ध जोड़ो। प्रत्येक प्रश्न पर 1 अंक निर्धारित है।

सही उत्तर चुनकर लिखिए—

1. सिन्धु सभ्यता के जन्मदाता थे— **1**

(क) द्राविड़ (ख) शक

(ग) हूण (घ) आर्य

उत्तर—(क) द्राविड

2. उत्तर वैदिल काल के प्रमुख देवता थे— **1**

(क) इन्द्र-वरुण (ख) सविता

(ग) विष्णु-शिव (घ) शिव-पार्वती

उत्तर—(ग) विष्णु-शिव

3. वेदों की संख्या है— **1**

(क) एक (ख) दो

(ग) तीन (घ) चार

उत्तर—(घ) चार

4. मुहम्मद तुगलक ने उच्च पद प्राप्त किये थे— **1**

(क) योग्यता द्वारा (ख) जन्म द्वारा

(ग) धर्म द्वारा (घ) हिंसा द्वारा

उत्तर—(ख) जन्म द्वारा

5. दोआब के लोग बढ़ा हुआ कर नहीं दे सके— **1**

(क) अकाल (ख) बाढ़

(ग) भूकम्प (घ) महामारी

उत्तर—(क) अकाल

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

6. बाण .... का राजकवि था– **1**

7. नालन्दा .... का केन्द्र था– **1**

8. राजतरंगिणी में हूण नेता .... का उल्लेख है। **1**

9. विष्णु वर्धन .... वंश की स्थापना की। **1**

10. पल्लव वंशों की राजधानी .... थी। **1**

11. तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व .... प्रचलित भाषा थी। **1**

12. .... के द्वारा ईसाई धर्म का भारत में आगमन हुआ। **1**

13. .... उत्तर वैदिक काल के प्रमुख देवता थे। **1**

14. .... ने सिद्ध करके बताया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है। **1**

15. गुप्त राजा .... राजा थे। **1**

16. प्राचीन भारत में संस्कृत .... और पाली भाषा में साहित्य का लेखन किया। **1**

उत्तर–6. हर्षवर्धन, **7.** शिक्षा, **8.** मिहिरकुल, **9.** चालुक्य, **10.** कांचीपुरम, **11.** संस्कृत, **12.** सन्त थामस, **13.** विष्णु-शिव, **14.** आर्यभट्ट, **15.** लोकहितकारी, **16.**

उचित सम्बन्ध जोड़िये–

17. रोलट एक्ट	(1) स्वामी विवेकान्द
18. कांग्रेस की स्थापना	(2) महात्मा गाँधी
19. मूर्तिपूजा में अविश्वा	(3) ए. ओ. ह्यूम
20. रामकृष्ण मिशन	(4) दयानन्द सरस्वती
21. करो या मरो का नारा	(5) चालुक्य राजा
22. पुलकेशियन द्वितीय	(6) सन् 1919

उत्तर–17. → (6) सन् 1919, **18.** → (3) ए. ओ. ह्यूम, **19.** → (4) दयानन्द सरस्वती, **20.** → (1) स्वामी विवेकान्द, **21.** → (2) महात्मा गाँधी, **22.** → (5) चालुक्य राजा

प्रश्न क्रमांक 23 से 31 तक के प्रश्न लघु-उत्तरीय है, प्रत्येक प्रश्न पर 4 अंक एवं विकल्प है। उत्तर की शब्दसीमा 75 है।

प्रश्न 23. प्रागैतिहासिक युग किसे कहते हैं? **4**

अथवा

पुरापाषण युग में मनुष्य क्या करता था? विवेचना कीजिए।

उत्तर–मानव जीवन का वह काल जब मनुष्य ने घटनाओं का कोई लिखित वर्णन नहीं रखा 'प्राक' इतिहास' या 'प्रागैतिहासिक काल' कहा जाता है।

अथवा

उत्तर–इस युग में मानव शिकार व भोजन एकत्र करता था। खानाबदोश जीवन बिताता था और उन जगहों की तलाश में रहता था, जहाँ खाना पानी अधिक मात्रा में मिल सके।

प्रश्न 24. मगध की उन्नति के चार कारणों की विवेचना कीजिए।

अथवा

सिकन्दर में मगध पर आक्रमण क्यों नहीं किया? विवेचना कीजिए।

उत्तर—मगध की उन्नति के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं—

(i) बिम्बसार, अजातशत्रु और महा पद्मनन्द इसके महान् शासकों में से थे जिनकी साम्राज्यवादी नीति ने इसकी शक्ति को आगे बढ़ाया।

(ii) राजगीन का दुर्ग पाँच पहाड़ियों से घिरा हुआ था, जिससे आक्रमणकारियों का राजधानी में घुसना अत्यन्त कठिन था।

(iii) मगध में उपलब्ध लोहे के खानों ने न केवल राजाओं की शक्ति बढ़ाई बल्कि कृषित का भी विकास किया। आपस में जुड़ी नदियाँ राजमार्ग के रूप में व्यापार और वाणिज्य के लिए मददगार साबित हुई। इसके किनारे अनेक नगर विकसित किए गए। इस तरह मगध अत्यन्त समृद्ध राज्य बन गया।

(iv) मगध की सेना लोहे के बने हथियारों और युद्ध हाथियों के कारण शक्ति शाली बन गयी।

अथवा

उत्तर—सिकन्दर ने पंजाब के कई क्षेत्रों पर विजय प्राप्त कर लिया था। वह मगध की ओर बढ़ना चाहता था। परन्तु उसके सैनिकों ने नन्दों की विशाल सेना और शक्ति के बारे में सुना और हतोत्साहित होकर आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। सिकन्दर के बार-बार अनुरोध करने पर सैनिकों ने आगे बढ़ने से इन्कार किया और सिकन्दर को लौटना पड़ा। इस प्रकार वह मगध पर आक्रमण नहीं कर सका।

प्रश्न 25. दक्षिण को मन्दिर का प्रदेश क्यों कहा जाता है? चालुक्य पल्लव के सम्बन्ध में व्याख्या दीजिए। 4

अथवा

बेस नगर स्तम्भ का क्या महत्व है? व्याख्या कीजिए।

उत्तर—चालुक्य—चालुक्य मन्दिर ऐहोल में 600 ई. के आस-पास बने थे। इसके बाद बादामी और पट्टदकल में मन्दिर बनवाये गये। चालुक्यों के लड़कन और दुर्गा मन्दिर, पोपनाथ और विरूपक्ष मन्दिर प्रसिद्ध है।

पल्लव—पल्लवों द्वारा बनवाये गये मन्दिर वास्तुकला और शिल्पकला के उत्कृष्ट उदाहरण है। इनमें सबसे प्रसिद्ध महाबलीपुरम में बनवाया गया सत्पगोडा का मन्दिर है। पल्लवों की राजधानी कांचीपुरम में कैलाशनाथ और बैकुण्ठ पैरूमल जैसे अनेक मन्दिर है।

इस प्रकार इस काल में दक्षिण में अत्यधिक मन्दिरों का निर्माण होने के कारण मन्दिरों का प्रदेश कहा जाने लगा।

अथवा

उत्तर—बेस नगर स्तम्भ यूनानी दूत हिलियोडोरस ने बनवाया था। इस पर अंकित अभिलेख में हिलियोडोरस का वर्णन भागवत के रूप में किया गया है। जिसका अभिप्राय विष्णु पूजक है। इससे हिलियोडोरस के धार्मिक विश्वास का पता चलता है साथ ही यूनानियों का भारतीय धर्म व संस्कृति

के प्रति आकर्षण का भी पता चलता है।

प्रश्न 26. कलिंग युद्ध के पश्चात् अशोक का हृदय परिवर्तन हुआ। विवेचना कीजिए। अथवा
4

उन आर्थिक नियत्रणों की व्यख्या कीजिए, जिन्हें मौर्य शासन काल में अपनाया गया था।

उत्तर—कलिंग युद्ध अशोक के शासन की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी। इस युद्ध में हुए नरसहार तथा जनता के कष्ट से अशोक की अन्तरात्मका को आघात पहुँचा। कलिंग युद्ध में डेढ़ लाख लोग बन्दी बनाए गए और एक लाख मारे गए तथा इससे कई गुना घायल हुए। यह अनुभूति होते ही कि एक छोटे से प्रदेश को विजय करने के लिए इतने निरपराध व्यक्तियों की हत्या पर पश्चाताप होने लगा। इससे अशोक के जीवन में एक नया मोड़ आया। अशोक ने देश विजय के स्थान पर धम्म (धर्म) विजय का प्रण लिया। युद्ध घोष के स्थान पर धर्म घोष होने लगा।

अथवा

उत्तर—समस्त मौर्य साम्राज्य शासन व्यवस्था का आधार सुदृढ़ राजस्व व्यवस्था थी। राज्य की आय का मुख्य स्रोत भूमिकर (लगान) था । यद्य" लगान कुल उत्पादन के 1/4 से 1/6 तक था तथा" युद्ध की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए किसानों को विवश किया जाता था कि वे अधि ाक उत्पादन करें। राज्य ने भी भूमि के एक बड़े भाग पर खेती कराई। यह भी आय का एक अच्छा साधन बन गया।

वित्तीय स्थिरता का अन्य कारण था कि सभी आर्थिक गतिविधियों पर राज्य का नियमन्त्रण था। खानों, नमक भण्डार, खराब, वन, चुंगी आदि पर राज्य का एकाधिकार था। राज्य ने शिल्पों को प्रोत्साहन दिया था। वास्तव में दण्ड विधान ऐसा था कि यदि कोई कलाकार को जख्मी करता था या वस्तु का नाम बदल कर बेचता तो मृत्यु दण्ड दिया जाता था। राज्य को जुर्मानों से भी आय होती थी।

प्रश्न 27. प्राचीन भारत का दक्षिण पूर्व एशिया के साथ सम्पर्क की विवेचना कीजिए। अथवा
4

प्राचीन भारत में कृषि अर्थव्यवस्था के विकास का विवेचना कीजिए।

उत्तर—दक्षिण पूर्व एशियाइें देशों में बर्मा, थाइलैण्ड, इण्डोचीन देशों के साथ भारत का व्यापारिक सम्बन्ध व्यापरी धर्म प्रचारकों और उत्साही व्यक्तियों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का प्रचार-प्रसार विदेशों में होने लगा। बाली में हिन्दू संस्कृति का विकास हुआ। भारत ने अपनी सीमा के बाहर जाकर भी भारतीय विचारों, धर्म, कला एवं संस्कृति को अपनाया व प्रचार किया। भारतीयों ने बर्मा के कुछ भागों को स्वर्णभूमि कहा। ताम्रलि" पलूरा, मसूलीपट्टय प्रसिद्ध बन्दरगाह जहाँ से दक्षिण पूर्व मार्ग था, व्यापार के माध्यम से संस्कृति का प्रचार होता था।

अथवा

उत्तर—प्राचीन काल से ही भारत में कृषि होती रही है। कृषि प्रधान अर्थव्यस्था से सहायक व्यवसाय का उदय होने लगा। ऋग्वैदिक काल में मुक्ष्य व्यवसाय पशुपालन था। जिस व्यक्ति के पास जितनी अधिक गायें होती थीं वह अधिक सम्पन्न व धनी माना जाता था। इसके पश्चात् उन्होंने

अपना व्यावसाय कृषि को अपना लिया। कृषि के लिए हल और बैल का प्रयोग करते थे। मौर्यकाल में कृषि का अत्यधिक विकास हुआ नई कृषि बस्तियों का विकास हुआ। राज्य की भूमि सीता कहलाती थी। सीताध्यक्ष (कृषि अधीक्षक) राज्य की भूमि का लेखा-जोखा रखते थे। कृषि की सिंचाई के लिए नहर, तालाब, कुएँ, खुदवाये गये। कृषि की निरन्तर उन्नति होने लगी। राज्य की आय का मुख्य आधार कृषि था।

प्रश्न 28. अरब बालों के सिन्ध आक्रमण के क्या कारण थे? विवेचना कीजिए। 4

अथवा

महमूद गजनी कौन था? उसने भारत पर आक्रमण क्यों किये थे? विवेचना कीजिए।

उत्तर—अरब बालों के सिन्ध आक्रमण के कारण—

अरब बालों के सिन्ध आक्रमण के निम्नलिखित कारण थे—

(i) इस्लाम धर्म का दूर-दूर तक प्रचार-प्रसार करना चाहते थे।

(ii) वे भारत की धन-सम्पदा की ओर आकर्षित हुए थे।

(iii) मुस्लिम राज्य के हाकिल हज्जाज बिन युसूफ को भेजे गये उपहारों से भरे जहजों को सिन्ध के समुद्री लुटेरों ने लूट लिया था।

अथवा

उत्तर—अलहतगीन नामक एक तुर्की दास ने एक नए राज्य की स्थापना की जिसकी राजधानी गजनी थी। महमूद गजनवी 998 ई. में गजनी का शासक बना। उसकी सबसे बड़ी महत्वकांक्षा गजनी को मध्य-एशिया का शक्तिशाली राज्य बनाने की थी। इसे पूरा करने के लिए महमूद गजनवी ने भारत पर आक्रमण किए। इन आक्रमणों का उद्देश्य धन एकत्र करना था। इस धन से ही वह मध्य-एशिया में अपने विशाल साम्राज्य को संगठित कर सकता था।

प्रश्न 29. दीन-ए-इलाही धर्म क्या था? इसके मुख्य उद्देश्यों की विवेचना कीजिए। 4

अथवा

शाहजहाँ ने स्थापत्य कला के विकास के लिए किन-किन भवनों निर्माण करवाया? विवेचना कीजिए।

उत्तर—अकबर ने दीन-ए-इलाही नामक नये धर्म की स्थापना की। इसमें सभी धर्मों के गुणों का समावेश था। इस मत का मुख्य उद्देश्य चरित्र निर्माण, भाई-चारा, सामाजिक एकता जैसी भावनाओं को बल देकर धार्मिक संकीर्णता को समाप्त करना था। अबुल फजल ने इस मत के सिद्धान्तों की व्याख्या इस प्रकार की है—ईश्वर एक है और इस संसार में अकबर उसका प्रतिनिधि है। वास्तव में देखा जाए तो इसमें दूसरों के धर्म की आदर करते हुए सहनशीलता और सम्मान के साथ सामाजिक आचार-विचार सुधारने पर बल दिया गया है।

अथवा

उत्तर—शाहजहाँ वास्तुकला का महान् पारखी शासक था। वह इतिहास में भवन निर्माता के नाम से प्रसिद्ध है। उसने सुन्दर भवनों का निर्माण कर शहरों की सुन्दरता बढ़ाने का कार्य किया। शाहजहाँ कालीन निर्मित इमारतें मुख्यत: संगमरमर से बनायी हैं। मुख्य इमारतों में—

(i) ताजमहल, (ii) दीवाने आम, (iii) तख्त-ए-ताऊस, (iv) मच्छी भवन, (v) दीवाने खास, (vi) शीशमहल, (vii) खास महल, (viii) अंगूरी बाग, (ix) मोती मस्जिद, (x) जामा मस्जिद, (xi) दिल्ली का लाल किला।

प्रश्न 30. गुरिल्ला युद्ध पद्धति क्या थी ? विवेचना कीजिए। **4**

अथवा

मुगलों के सिक्खों से सम्बन्धों की विवेचना कीजिए।

उत्तर—इस युद्ध पद्धति में विभिन्न भौगोलिक दशाओं का विशेष महत्व होता था। यह युद्ध पद्धति स्थान विशेष पर ही लागू होती थी। जहाँ पर पर्वतीय क्षेत्रों की भरमार होती है वहाँ पर इस पद्धति द्वारा विजय प्राप्त की जा सकती है। इस पद्धति के द्वारा शिवाजी ने मुगलों को कई बार पराजित किया। मराठा सैनिक गिरोह बनाकर घूमते थे और मौका पाते ही अचानक मुगलों पर आक्रमण कर लूटमार करते हुए वा"स अपने पर्वतीय स्थानों पर छिप जाते थे। मुगलों को इस रणनीति के बारे में जानकारी न होने के कारण वे पराजित हुए। इस पद्धति को छापामार रण पद्धति भी कहा जाता है।

अथवा

उत्तर—(1) बाबर, हुमायूँ तथा अकबर के सिक्खों से सम्बन्ध—बाबर तथा हुमायूँ की सिक्खों के प्रति कोई सुनिश्चित नीति नहीं थी। अकबर सिक्खों के प्रति उदार तथा सहिष्णु थे।

(2) जहाँगीर के सिक्खों से सम्बन्ध—जहाँगीर के शासन काल में सम्बन्ध बहुज कटे हो गये थे क्योंकि जहाँगीर ने गुरु अर्जुनदेव को विद्रोही राजकुमार खुसरो की सहायता के आरोप में मृत्युदण्ड दिया था। उसका सिक्खों के साथ व्यवहार धार्मिक के साथ-साथ राजनीतिक कारणों से अधिक था।

(3) शाहजहाँ के सिक्खों से सम्बन्ध—शाहजहाँ ने अनेक सिक्खों को मुसलमान बनाने का प्रयास किया। किन्तु शाहजहाँ के काल में सिक्खों ने कोई विद्रोह नहीं किया।

(4) औरंगजेब के सिक्खों से सम्बन्ध—औरंगजेब ने धार्मिक उत्पीड़न की नीति बरती, उसने गुरुद्वारों को नष्ट करने तथा वासिन्दे को शहर से बाहर निकाल देने की आज्ञा दी। औरंगजेब की धर्मान्धता तथा जनता को मुसलमान होने के लिए बाध्य करने की नीति के कारण तंग आकर तेगबहादुर से सुपुत्र गोविन्दसिंह को अपने "ता की मृत्यु का बदला लेने का दृढ़ निश्चय करने पर बाध्य होना पड़ा। उन्होंने सिक्खों के सैनिक सम्प्रदाय "खालसा" बनाया। औरंगजेब की मृत्यु के बाद उन्होंने बहादुरशाह के साथ मिलकर उसके भाइयों के विरुद्ध मोर्चा लिया।

प्रश्न 31. दासप्रथा से क्या आशय है? विवेचना कीजिए। **4**

अथवा

उग्रवाद की उत्पत्ति के कारणों की विवेचा कीजिए।

उत्तर—सल्तनतकाल में सामान्य वर्ग की आर्थिक स्थिति कमजोर थी दास प्रथा के कारण यह वर्ग और भी दीन व दुर्बल था। सल्तनतकाल में दासों की स्थिति गिरी हुई थी। धनी व्यक्ति अपने घरों में दास रखते थे। दास चार प्रकार के होते थे—

(1) खरीदे हुए, (2) दान तथा भेंट में प्राप्त (3) युद्ध बन्दी, (4) अपने आप बिके हुए।

बाजारों में दासों को खरीदे व बेचे जाते थे। दास घरेलू कामों में नियुक्त किये जातेथे दास या

दासियों को खरीदते समय उनके काम करने की शक्ति पर विचार किया जाता था

अथवा

उत्तर—कांग्रेस में उग्रवाद की उत्पत्ति के कारण निम्न प्रकार हैं—

(i) सन् 1892 से 1905 तक आने वाले ब्रिटेन के गवर्नर जनरल प्रबल साम्राज्यवादी थे।

(ii) नरम दल के नेताओं द्वारा जनता की आवाज ब्रिटिश साम्राज्यवादी शासकों तक पहुँचाने में सफल नहीं हो सके।

(iii) पूना में प्लेग होने एवं कमिश्मन टैण्ड की हत्याकी गई अंग्रेजों की कार्यवाही से असन्तोष।

(iv) लार्ड कर्जन का शासन काल जैसे—बंगाल विभाजन।

(v) शिक्षित भारतीयों का अंग्रेजों से असन्तोष।

(vi) विश्व में घटित घटनाओं का प्रभाव।

(vii) राष्ट्रवादी नेताओं का नेतृत्व प्राप्त होना।

(viii) बाल, पाल एवं लाल की उग्रवादी गतिविधियाँ।

(ix) बाल गंगाधर तिलक द्वारा सम्पादित मराठा एवं केसरी समाचार पत्रों का प्रभाव।

प्रश्न क्रमांक 32 से 38 तक दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न पर 6 अंक एवं विकल्प है। शब्द सीमा अधिकतम 200 शब्द।

प्रश्न 32. समुद्रगुप्त की सैनिक सफलताओं की संक्षिप्त विवेचना कीजिए।

अथवा **6**

चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल को चौमुखी सम्पन्नता का शासनकाल क्यों कहा जाता है? विवेचना कीजिए।

उत्तर—समुद्रगुप्त एक वीर सेनानायक और यौद्ध था। भारतीय इतिहास में वह अपनी विजय के लिए विख्यात है। वह एक महत्वाकांक्षी और साम्राज्यवादी शासक था। उसका सन्धि विग्रहिक हरिषेण प्रमाण प्रशस्ति में उसकी दिग्विजयों का उल्लेख करता है। उसने परम्परागत नीति को अपनाया समुद्रगुप्त की विजय अग्रलिखित हैं—

(1) उत्तरी भारत विजय—समुद्रगुप्त ने उत्तरी भारत में साम्राज्य विस्तार की नीति का पालन करते हुए जीते हुए समस्त प्रदेशों को अपने साम्राज्य में विलीन कर लिया। उत्तरी भारत में इस समय नागवंश के कई राज्य कई श्रेणी में बँटे हुए थे। समुद्रगुप्त ने सर्वप्रथम इसी वंश के नागसेन, नागदत्त व नन्दि राजा को पराजित किया। इसके अतिरिक्त उसने गणपति, नाग, भतिस, अच्युत, रुद्रदेव, चन्द्रवर्मन तथा बालवर्मा को परास्त किया। समुद्रगुप्त ने आटविक राज्य अर्थात् जंगल, के राज्यों को जो मथुरा से नर्मदा तक पर आक्रमण किया और विजय हासिल किया।

(2) दक्षिण भारत की विजय—प्रयाग प्रशक्ति की 19वीं और 20वीं पंक्तियों में दक्षिणापथ के 12 राज्यों का उल्लेख मिलता है जिनके शासकों को पराजित करके उसने उनके राज्यों को वा"स लौटा दिया। दक्षिणापथ के निम्नलिखित बारह शासकों पर उसने विजय प्राप्त की—(i) कोसल का महेन्द्र, (ii) महाकान्तर का व्याघ्रराज्य, (iii) कोसम का मृणाराज, (iv) विष्पपुर का महेन्द्रगिरि, (v) कोहूरकत स्वामीछत्र, (vi) एरण्डपलि का दमन, (vii) कांची का विष्णु भोगप, (viii) अवमुक्त का

नीलराज, (ix) वेंगी का हस्तिवर्मन, (x) पालक का उग्रसेन, (xi) देवराष्ट्र का कुबेर।

(3) सीमान्त प्रदेशों पर विजय—सीमान्त प्रदेशों के पाँच शासकों को युद्ध में पराजित किया।

(4) विदेशी राज्य—प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार दैवपुत्र शाही शाहानुशाही शक, मुरूदण्ड, सिंहलद्वीप के शाक तथा समत्स द्वीपों के निवासियों ने समुद्रगुप्त के साथ मैत्रीपूण्र सम्बन्ध स्था"त किया।

अथवा

उत्तर—चन्द्रगुप्त द्वितीय का शासन काल चौमुखी विकास और समृद्धि का काल कहा जाता है। इसके निम्नलिखित कारण हैं—

(1) साम्राज्य विस्तार—चन्द्रगुप्त द्वितीय ने वैवाहिक सम्बन्धों एवं विजयों द्वारा साम्राज्य को और बढ़ाया। चन्द्रगुप्त ने अपनी पुत्री प्रभावती का विवाह वाकाटक राजा रुद्रसेन द्वितीय से किया। चन्द्रगुप्त ने शकों पर महत्वपूर्ण विजय प्राप्त की जिससे पश्चिमी समुद्र तट तक उसका साम्राज्य विस्तारित हो गया।

(2) वह कला व साहित्य का महान पोषक था। नवरत्न उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे। इन्हीं में से कालीदास और अमरसिंह थे।

(3) चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय चीनी विद्वान फाह्यान का भारत भ्रमण हुआ।

(4) चन्द्रगुप्त के समय उज्जैन एक सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में विकसित हुआ।

प्रश्न 33. गुप्तकाल में कला का विकास किन-किन क्षेत्रों में हुआ? विवेचना कीजिए। **अथवा**

6

गुप्त साम्राज्य के पतन के कारणों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—गुप्तकाल में कला का विकास क्षेत्रों में हुआ।

(1) वास्तुकला, (2) मूर्तिकला, (3) चित्रकला, (4) संगीत।

(1) वास्तुकला—गुप्तकाल में वास्तुकला को प्रोत्साहन ओर संरक्षण मिला, इस कला में नवीन शैली दिखाई पड़ती है। मोरहा भराडू में उत्खनन से गुप्तयुगीन भवनों के अवशेष मिले हैं जो उत्कृष्ट शैली के हैं। इस काल में हिन्दू धर्म को प्रचार और संरक्षण मिलने के कारण वैष्णव व शैव मत के मन्दिरों का निर्माण कराया। छत्तीसगढ़ से सिरपुर का लक्ष्मण मन्दिर, उदयगिरि का विष्णु मन्दिर, भूमरा का शिव मन्दिर, देवगढ़ का दशावतार मन्दिर, दहपरबतियाँ का मन्दिर, एरन का बराह मन्दिर, कानपुर के निकट भीतर गाँव का मन्दिर मुख्य हैं।

(2) मूर्तिकला—गुप्तकाल में हिन्दू, जैन, बौद्ध धर्म से सम्बन्धित सुसज्जित व कलात्मक मूर्तियाँ बड़े पैमाने पर बनीं। (मथुरा, सारनाथ, पाटलिपुत्र, आदि मूर्तिकला के प्रसिद्ध केन्द थे। इस काल की मूर्तिकला की विशेषता घुंघराले केश थे व वस्त्र पारदर्शक होते थे।)

(3) चित्रकला—इस काल में चित्रकला वैज्ञानिक दृष्टि पर आधारित थी। अजंता की चित्रकला मुख्य है।

(4) संगीत—इस काल में नृत्य व संगीत भी मुख्य था। उच्च कुल की स्त्रियाँ संगीत व नृत्य शिक्षा जरूर ग्रहण करती थीं।

अथवा

उत्तर– **गुप्त साम्राज्य के पतन के कारण**

स्कन्द गुप्त के उत्तराधिकारी विशालगुप्त साम्राज्य को अक्षुण नहीं रख सके। शक्तिशाली हुणों के आक्रमण और विघटनकारी शक्तियों के आगे वे निर्बल हुए इस प्रकार गुप्त साम्राज्य का पतन हो गया।

(1) अयोग्य उत्तराधिकारी–स्कन्द गुप्त के उपरान्त कोई ऐसा प्रतापी शासक नहीं हुआ जो साम्राज्य को सुसंगठित रख सके। समुद्रगुप्त और चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा स्था"त तथा स्कन्दगुप्त द्वारा रक्षित विशाल गुपत साम्राज्य को राजनीतिक एकता के सूत्र में आबद्ध रखने मे परवर्ती गुप्त शाक असमर्थ रहें।

(2) वंशानुगत राजतंत्र–गुप्त राज्य व्यवस्था वंशानुगत राजतंत्र की व्यवस्था थी इसके कारण भी पतन हुआ।

(3) सामंतो के द्वारा–गुप्त राज्य का दुर्भाग्य था कि इसका सामन्त वर्ग स्वार्थी एवं महत्वकांक्षी था। इस वर्ग ने संकट के काल में राज्य को बचाने का प्रयास करने के बजाय उसकी कठिनाईयों का लाभ उठाकर अपना स्वतंत्र राज्य बनाना ज्यादा बेहतर समझा। उनके इस कार्य ने भी साम्राज्य के पतन में योग दिया।

(4) विदेशी आक्रमण–बाहर आक्रमणों के कारण गुप्त साम्राज्य खोखला हो गया था। शक और हूणों के आक्रमण से साम्राज्य की रक्षा करने में केवल स्कन्दगुप्त ही सफल रहा स्कन्दगुप्त की मृत्यु के पश्चात् हूणों का पुन: आक्रमण प्रारम्भ हो गया। फलस्वरूप गुप्त साम्राज्य नष्ट हो गया।

प्रश्न 34. शेरशाह के जनहित कार्यों की विवेचना कीजिए। **6**

अथवा

हुमायूँ की असफलता के कारणों की विवेचना कीजिए।

उत्तर– **हुमायूँ की असफलता के कारण**

(1) हुमायूँ की तुलना में शेरखाँ कुशल सेनापति व सैन्य संगठक था। उसने अफगानों को एक झण्डे के नीचे संगठित कर लिया था। जबकि हुमायूँ के भाइयों ने उसके साथ कटपपूर्ण व्यवहार किया।

(2) हुमायूँ ने न तो साम्राज्य को संगठित किया, न शासन में सुधार किया और न ही प्रजा की सहानुभूति प्राप्त करने का प्रयास किया।

(3) हुमायूँ ने दो दुश्मन एक साथ पैदा कर लिए थे। जब वह बहादूर शाह की ओर बढ़ता तो शेरखाँ उसके सामने कठिनाइयाँ पैदा कर देताथा और जब शेरखाँ को दबाने आगे बढ़ता तो बहादुर शाह उसके विरोध में उपद्रव खड़ा कर देता था। ऐसी स्थिति में हुमायूँ की की विचय संदिग्ध थी।

उपरोक्त कारणों से हुमायूँ को असफलता मिली व शारीरिक दुर्बलता के कारण सन् 1540 में अपना भारतीय साम्राज्य छोड़ना पड़ा व इधर-उधर भटकता रहा।

प्रश्न 35. किन कारणों से अकबर ने दक्कन के मामले में हस्तक्षेप किया था? विवेचना कीजिए। **6**

अथवा

जहाँगीर की राजपूत नीति की मुख्य उपलब्धियों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–अकबर के दक्कन में हस्तक्षेप करने के निम्न कारण थे–

(i) मुगल सत्ता की स्थापना–उत्तर भारत पर मुगल सत्ता स्था"त करने के बाद अकबर अब दक्षिण में अपना प्रभुत्व कायम करना चाहता था।

(ii) गुजरात के तटीय व्यापारिक मार्ग को सुरक्षित रखना–वह गुजरात के बन्दरगाहों को जाने वाले व्यापार मार्गों को सुरक्षित रखना चाहता था ताकि वह गुजरात, मालवा और खानदेश में अपना प्रभुत्व जमा सके।

(iii) जल और थल पर पुर्तगाली खतरे की नियन्त्रित करना–वह पुर्तगालियों की भूमि और समुद्र पर बढ़ती गतिविधियों से परेशान था। पुर्तगाली हज के लिए मक्का जाने वाले यात्रियों को तंग करते थे। उसे उनकी धार्मान्तरण गतिविधियाँ भी पसन्द नहीं थी। वे स्थल क्षेत्र पर लगातार प्रभाव बढ़ा रहे थे। उन्होंने सूरत पर नियन्त्रण का प्रयास किया। अकबर उनकी गतिविधियों पर शक्ति से अंकुश लगाना चाहता था, इसमें दक्षिण के राज्यों का सहयोग व साधन उसे चाहिए थे।

(iv) दक्षिण के साम्प्रदायिक झगड़ों को उत्तर में फैलने से रोकना–राजनीतिक, ध ाार्मिक और दलगत झगड़ों के कारण दक्कन की दशा खराब हो रही थी। वर्ग-संघर्ष ने राजनीतिक स्थिति और भी खराब कर दी थी। इससे अकबर बहुत चिन्तित और दुखी था। वह इसे समाप्त कर साम्प्रदायिक सौहार्द्र का वातावरण निर्माण करना चाहता था।

(v) दक्कन में सुलक-कुल की नीति को व्यावहारिक रूप देना–अकबर अपने समस्त साम्राज्य में सुलह-कुल (विश्व शान्ति) की स्थापना का ईमानदारी से प्रयास कर रहा था। उसे भय था कि दक्कन की धार्मिक कटुता का मुगल साम्राज्य पर भी प्रभाव पड़ेगा

अथवा

उत्तर–अकबर मेवाड़ को विजय नहीं कर सका था उसके बेटे जहाँगीर ने मेवाड़ को पूर्णरूप से विजय करने का संकल्प किया। जहाँगीर ने अपने "ता की राजपूत नीति का अनुसरण किया। उसने राजपूतों के प्रति समझौता तथा युद्ध दोनों नीतियों का अनुसरण किया, जिन राजपूत राजाओं ने अधीनता स्वीकार कर ली। उनके साथ जहाँगीर ने अच्छा व्यवहार किया।

मेवाड़ का राजा ऐसाथा जिसने मुगलों की अधीनता स्वीकार नहीं की थी। 1597 ई. में अपनी मृत्यु के पूर्व ही राणा प्रताप ने अपने खोये हुए राज्य को अधिकांश भाग फिर से हथिया लिया था। महाराणा के पुत्र अमर सिंह ने अपने "ता की मुगल आक्रमण विरोध नीति को अपनाया। जहाँगीर ने मेवाड़ का पूर्णरूप से विजय करने का संकल्प किया।

1605 ई. में जहाँगीर ने मेवाड़ पर आक्रमण किया किन्तु यह युद्ध अनिर्णीत रहा। 1608 में पुन: जहाँगीर ने मेवाड़ के विरुद्ध सेना भेजी पर वह पराजित होकर वापस आ गई।

1609 ई. में जहाँगीर ने शाहजादा खुर्रम को मेवाड़ के आक्रमण की बागडोर सौंपी। उसने पूर्ण शक्ति के साथ आक्रमण किया। राजाग के प्रदेश पर उसने आतंक फैला दिया। उसने गाँव, नगर, और उपवन जलाकर राख कर दिये, अनेक मन्दिरों को नष्ट भ्रष्ट कर दिया, उसने राजपूतों को रसद मार्गों को काट दिया। इस भीषण संकट के होते हुए भी राजपूतों ने शत्रु सेना का वीरता तथा साहस के साथ सामना किया। दोनों पक्षों को भारी क्षति उठानी पड़ी, किन्तु राजपूतों को अधिक हानि हुई। राणा के अनेक सहयोगी उसे छोड़कर चले गये। राजकुमार कर्ण तथा राणा के सलाहकारों ने राणा को समझौता करने का परामर्श दिया। राणा समझौते के लिए सहमत हो गया परिणामस्वरूप खुर्रम तथा राणा के बीच सन्धि हो गयी। इस सन्धि का इतिहास में बहुत महत्व है।

इस प्रकार जो कार्य अकबर के समय नहीं हो सका जहाँगीर ने कर दिखाया।

प्रश्न 36. सुफी मत के प्रमुख सिद्धान्तों की व्याख्या कीजिए

अथवा

भक्ति आन्दोलन के प्रमुख सन्त कौन-कौन थे? किन्हीं पाँच सन्तों के योगदान का व्याख्या कीजिए।

उत्तर—सूफी मत के सिद्धान्त निम्नलिखित थे—

(1) ऐकश्वरवाद—ईश्वर एक है। उनके अनुसार अल्लाह और बन्दे में कोई अन्तर नहीं। बन्दे के माध्यम से ही खुदा तक पहुँचा जा सकता है। **(2) भौतिक जीवन का त्याग**—वे भौतिक जीवन का त्याग करके ईश्वर में लीन हो जाने का उपदेश देते थे। **(3)** शान्ति व अहिंसा में विश्वास रखते थे। **(4)** सूफी धर्म के लोग उदार होते थे, वे सभी धर्म के लोगों को समान समझते थे। **(5) प्रेम**—प्रेम से ही ईश्वर प्राप्त हो सकता है। भक्ति में डूबकर ही इन्सान परमात्मा को प्राप्त करता है। **(6) प्रेमिका के रूप में कल्पना**—सूफी संत जीव को प्रेमी व ईश्वर को प्रेमिका के रूप में देखते थे। **(7) शैतान बाधा**—सूफी संत मानते थे कि ईश्वर की प्राप्ति में शैतान बाधक होते हैं **(8) हृदय की शुद्धता पर बल**— सूफी संत दान, तीर्थयात्रा, उपवास को आवश्यक मानते थे। **(9) गुरु एवं शिष्य का महत्व**—पीर (गुरु) मुरीद शिष्य के समान है। **(10) बाह्य आडम्बर का विरोध**—सूफी संत बाह्य आडम्बरों का विरोध व पवित्र जीवन पर विश्वास करते थे। **(11) सिलसिले से आबद्ध**—सूफी संत अपने वर्ग व सिलसिले से सम्बन्ध रखते थे।

अथवा

उत्तर—भक्ति आन्दोलन के प्रमुख संत निम्न प्रकार थे—

(i) कबीर—कबीर एक महान् संत थे। इनका जन्म 1398 में काशी में हुआ था। इन्होंने भी प्रेव व भक्ति पर बल दिया। इन्होंने अन्धविश्वास, कर्मकाण्ड दकियानूसी विचार, तीर्थ आदि पर खूब व्यंग्य किया। उन्होंने पहली बार धर्म को आकर्मण्यता की भूमिक से कटाकर कर्मयोगी की भूमि में लाकर खड़ा कर दिया। कबीर हिन्दू, मुसलमान सम्प्रदायों की एकता का महान् अग्रदूत था। कबीर ने हिन्दुओं की मूर्तिपूजा की आलोचना की। इस प्रकार कबीर उच्चकोटि के निर्गुण भक्त ही नहीं बल्कि वे समाज सुधारक, उपदेशक, प्रगतिशील विचारक भी थे।

(ii) चैतन्य—चैतन्य महाप्रभु सन्यासी होने के बाद कृष्ण भक्ति में लीन हो गये। उनका विश्वास था कि प्रेम, भक्ति, संगीत, नृत्य आदि से ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है।

(iii) गुरुनानक—गुरुनानक ने मूर्ति पूजा का विरोध किया। इनके गुरु अर्जुन देव थे। ऐकेश्वरवाद व निर्गुण ब्रह्म के उपासक थे। वे हिन्दू मुसलमानों में एकता चाहते थे।

(iv) वल्लभाचार्य—ये तेलगू ब्राह्माण परिवार के थे तथा महान् विद्वान थे। वे कृष्ण भक्ति का प्रचार किये। कृष्ण भक्ति के महत्व को उच्चकोटि का कहा। उन्होंने कृष्ण के प्रति सच्ची श्रद्धा व्यक्त की है।

(v) माधवाचार्य—13 वीं सदी के महान् सुधारक एवं संत थे। वे विष्णु के भक्त थे। इनका मानना था कि ईश्वर भक्ति से इन्सान जन्म मरण के चक्र से मोक्ष प्राप्त कर लेता है।

प्रश्न 37. ब्राह्म समाज के सिद्धान्तों का उल्लेख कीजिए। **6**

अथवा

सन् 1857 से 1885 तक के भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के आर्थिक राजनीतिक कारण ों की विवेचना कीजिए।

उत्तर—ब्रह्म समाज के सिद्धान्त निम्नलिखित हैं—

(i) जाति, धर्म, वर्ग, प्रजाति आदि के भेद के बिना सभी को ईश्वर की आराधना करनी चाहिए।

(ii) शुद्ध मन से ईश्वर की उपासना करने से मनुष्य अच्छे कार्यों की ओर प्रवृत्त होता है तथा तृष्णा त्याण से मोक्ष प्राप्त होता।

(iii) ईश्वर से सम्बन्ध में मान्यता है कि ईश्वर निर्गुण निर्विकारी है। वह देह त्याग नहीं करता।

(iv) मानव अपने अच्छे व बुरे कर्मों के अनुसार अच्छे या बुरे फल प्राप्त करता है।

(v) ब्रह्म समाज सभी धमों पर आस्था रखता है तथा उसकी मान्यता है कि सभी धर्म सन्मार्ग चलने की प्रेरण देते हैं।

अथवा

उत्तर—भारत का स्वतंत्रता के लिए संघर्ष (1857 से 1885)

भारत का स्वतंत्रता के लिए संघर्ष सन् 1857 ई. से माना जाता है। इसीलिये सन् 1857 ई. की क्रान्ति को प्रथम स्वतंत्रता संग्राम नाम दिया गया। यहाँ हम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को चार भागों में विभाजित करके अध्ययन करेंगे।

(अ) सन् 1857 से 1885 तक

सन् 1857 से 1885 तक से समय में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में प्रमुख घटना सन् 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम ही है। इसके निम्नलिखित कारण थे—

(1) आर्थिक कारण—(i) ब्रिटिश प्रशासन ने किसानों की भूमि तथा उत्पादन के आधार पर लगान तय नहीं किया बल्कि अपनी इच्छानुसार राजस्व (लगान) तय किया।

(ii) भारतीय हस्तशिल्प उद्योग व कृषि साथ-साथ चलते थे ब्रिटिश प्रशासन ने दत्तकारों तथा शिल्पियों को लागत से कम मूल्य देकर जबरन उनका उत्पादन खरीदा।

(iii) इंग्लैण्ड में भारतीय माल पर अधिक शुल्क और भारत में इंग्लैण्ड के मालपर अति अल्प शुल्क लिया जाता था। इससे व्यापारी बेरोजगार होने लगे।

(iv) भारतीय धन का निर्गमन इंग्लैण्ड को होने लगा इससे भारत में बेरोजगारी व भुखमरी छा गई।

(v) अनेक जमीन्दारों की भूमि अंग्रेजों के द्वारा हड़प ली गई। इससे जमीन्दारों में असन्तोष छा गया।

(2) राजनीतिक कारण—(i) लाढ़ डलहौजी ने भारत में साम्राज्यवादी प्रशासक के रूप में नरेशों के प्रति निरंकुश नीति अपनाई।

(ii) अवध का विलीनीकरण ब्रिटिश भारत में कर लिया गया।

(iii) बहादुर शाह के उत्तराधिकारी को दिल्ली के बाहर कुतुबमीनार के पास रहने को मजबूर किया गया।

(iv) नाना साहेब और लक्ष्मी बाई के साथ अनुचित व्यवहार किया गया।

प्रश्न 38. भारत पर सिकन्दर के आक्रमणों की विवेचना कीजिए।

अथवा

बिम्बिसार पर एक लघु लेख लिखिए।

उत्तर—सिकन्दर के आक्रमण के समय उत्तर-पश्चिम भारत छोटे-छोटे राजतन्त्रों में बँटा हुआ था। एकता के अभाव में यूनानियों को उन्हें एक के बाद एक जीतने में मदद की। उनमें सर्वाधि ाक महत्वपूर्ण राजा थे—आंभी और पोरस। आंभी ने बिना कोई विरोध किए सिकन्दर के सम्मुख समर्पण कर दिया। पोरस ने कड़ा विरोध प्रदर्शित किया। सिकन्दर उसकी बहादुरी से प्रभावित हुआ और हार के पश्चात् भी सम्मानजनक रूप से पोरस का राज्य लौटा दिया।

इसके पश्चात् सिकन्दर व्यास नदी की ओर बढ़ा और उसने पंजाब के काफी राज्यों को हरा दिया। वह पूर्व दिशा में आगे बढ़ना चाहता था लेकिन उसके सैनिकों ने मगध के नन्द की विशाल सेना और शक्ति से हतोत्साहित होकर आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया और सिकन्दर को लौटना पड़ा। वापसी यात्रा में सिकन्दर ने अनेक छोटे-छोटे गणतन्त्रों जैसे और शूद्रक को हराया 323. ई.पू. में 32 वर्ष की अल्पायु में उसकी बेबीलोन में मृत्यु हो गयी।

सिकन्दर को अपनी विजयों को व्यस्थित करने का समय नहीं मिला। अधिकतर राज्यों को उसके शासकों को, जिन्होंने उसकी सत्ता स्वीकार कर ली, लौटा दिया गया। उसनके अपने अधिकृत क्षेत्र, जिनमें पूर्वी यूरोप के कुछ भाग और पश्चिमी एशिया का कुछ बड़ा भाग शामिल था, को तीन भागों में बाँटा। उसके लिए सिकन्दर ने तीन राज्यपाल नियुक्त किए। उसके साम्राज्य का पूर्वी हिस्सा सेल्यूकस निकेटर को मिला, जिसने अपने स्वामी सिकन्दर की मृत्यु के बाद, स्वयं को राजा घोषित कर दिया। सिकन्दर के आक्रमण ने भारत में राजनीतिक एकता का मार्ग प्रशस्त किया। सिकन्कर सभी छोटे और झगड़ालू राज्यों को जीत लिया था और इस क्षेत्र में मौर्यां का विस्तार आसान हो गया।

अथवा

उत्तर—मगध राज बिम्बसार (544-492 ई. पू.) के शासनकाल में शक्तिशाली बना। वह भगवान बुद्ध का समकालीन था और हरयंक राजकुल से सम्बन्धित था। शुरू से ही बिम्बसार ने विस्तार की नीति अपनाई। अपनी स्थिति को शक्तिशाली बनाने के लिए उसके पास कुछ सुविधाएँ थी। उसका साम्राज्य चारों ओर नदियों और पहाड़ियों के द्वारा सुरक्षित था। उसकी राजधानी राजगीर पहाड़ियों के पास थी। अंग का अपने राज्य में शामिल करना बिम्बसार की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से था।

बिम्बसार ने कौसल, वैशाली और भद्र के महत्वपूर्ण राज्या परिवारों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्था"त किए। कौसल नरेश प्रसन्नजीत की बहिन से विवाह में बिम्बसार को काफी गाँव दहेज में प्राप्त हुए। इन विवाहों ने उसकी स्थिति को मजबूत किया। बिम्बसार ने कार्यकुशल प्रशासन व्यवस्थित किया। महावीर और बुद्ध दोनों ने इसके शासनकाल के दौरान अपने सिद्धान्तों के उपदेश दिए। ऐसा बताया जाता है कि उसने दोनों से ही करीबी सम्बन्ध रखें। सम्भवत: वह अजातशत्रु के हाथों मारा गया जिसने राजगद्दी पर कब्जा किया।

❑

सॉल्वड पेपर

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

कक्षा 12

विषय : इतिहास

सेट—III (जुलाई, 2011)

समय : 3 घण्टे] **[पूर्णांक : 100**

निर्देश—सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।

निर्देश—प्रश्न क्रमांक 1 से 22 तक अति लघु उत्तरीय प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न का अंक 1 है।

सही विकल्प चुनिए—

1. हड़प्पा वासियों द्वारा पूजी जाने वाली सबसे महत्वपूर्ण देवी थी—

(क) काली देवी (ख)

(ग) ग्राम देवी (घ) दुर्गा देवी।

उत्तर—(ख) मातृदेवी

2. साँची के स्तूप का निर्माण किसने कराया था—

(क) बिम्बसार (ख) कनिष्क

(ग) चन्द्रगुप्त (घ) अशोक।

उत्तर—(ख) कनिष्क

3. बुद्धचरित के रचयिता थे—

(क) महात्मा बुद्ध (ख) फाह्यान

(ग) चरक (घ) अश्वघोष।

उत्तर—(घ) अश्वघोष

4. हर्ष के शासनकाल में भारत आने वाला यात्री था—

(क) फाह्यान (ख) सिकन्दर

(ग) ह्वेनसांग (घ) गजनवी।

उत्तर—(ग) ह्वेनसांग

5. दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान था—

(क) कुतुबुद्दीन ऐबक (ख) बलबन

(ग) रजिया बेगम (घ) मोहम्मद साहब।

उत्तर—(क) कुतुबुद्दीन ऐबक

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

6. सिन्धुघाटी के लोगों को .... धातु का ज्ञान नहीं था
7. अर्थशास्त्र के रचयिता .... थे।
8. सुतारी .... परिष्कृत औजार है।
9. सीता .... भूमि को कहा जाता था।
10. अशोक ने .... युद्ध के बाद अहिंसा का मार्ग अपनाया।

उत्तर—6. लोहा, 7. चाणक्य, 8. मध्य पाषाण काल का, 9. राज्यभूमि, 10. कलिंग।

संक्षेप में उत्तर दीजिए—

11. प्रारम्भिक पुरापाषाण युग के दो औजारों के नाम लिखिए।
12. अशोक स्तम्भ के कौन-से चि को हमने राष्ट्र चि के रूप में स्वीकार किया है ?
13. नालन्दा के बौद्ध भिक्षु किस सम्प्रदाय के थे ?
14. किस ग्रन्थ से कलियुग के संकट का पता चलता है ?
15. सातवाहन वंश का संस्थापक कौन था ?
16. बाराहमिहिर की एक कृति का नाम लिखिए।
17. महमूद गजनवी ने भारत पर प्रथम आक्रमण कब किया था ?
18. रामकृष्ण मिशन की स्थापना कब और किसने की ?
19. आर्य समाज की स्थापना किसने की ?
20. बाल-लाल-पाल का पूरा नाम कीजिए।
21. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब और किसने की ?
22. 1857 का स्वतंत्रता संग्राम का प्रथम शहीद जवान कौन था ?

उत्तर—

11. प्रारंभिक पुरापाषाण युग के दौ औजार हैं—कुल्हाड़ी, पत्थर।
12. (1) नरसिंह मूर्ती, (2) अशोक चक्र।
13. नालन्दा के बौद्ध भिक्षु महायान सम्प्रदाय के थे।
14. पुराण के कलियुग के संकट का पता चलता है।
15. सिमुक।
16. लघु जातक।
17. महमूद गजनवी ने भारत पर प्रथम आक्रमण 1001 ई. में किया।
18. रामकृष्ण मिशन की स्थापना 1897 में स्वामी विवेकानन्द ने की।
19. स्वामी दयानन्द सरस्वती।
20. बाल गंगाधर तिलक, लाल लाजपत राय, वि''न चन्द्र पाल।
21. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 1885 में ए. ओ. ह्यूम के प्रयासों से हुई।
22. मंगल पाण्डे।

नोट—प्रश्न क्रमांक 23 से 31 तक के प्रश्न लघु-उत्तरीय हैं, प्रत्येक प्रश्न पर 4 अंक एवं

विकल्प हैं।

प्रश्न 23. उत्तर वैदिक काल में स्त्रियों की दशा का वर्णन कीजिए।

अथवा

उपनिषदों का महत्व कीजिए।

उत्तर—**स्त्रियों की दशा**—इस काल में स्त्रियों का सम्मान कम हो गया। वे सम्पत्ति की उत्तराधिकारी नहीं थी। इस समय स्त्रियों को भोग वस्तु समझा जाता था। इस समय विदुषी महिला गार्गी एवं मैत्रेयी थी।

अथवा

उत्तर—उपनिषद् का अर्थ है गुरु के समीप बैठना अत: नामानुसार, उपनिषदों में गुरु के द्वारा दार्शनिक विचारों का समावेश है। उपनिषदों में ब्रह्मा को सर्वव्यापी और सर्वज्ञ माना गया है। उपनिषदों के अनुसार ब्रह्माण्ड एक दृष्टिभ्रम या माया है जो ब्रह्मा और वरूक्ति या आत्मा के बीच परदा बनकर आती है। जब तक व्यक्ति इस सत्य को जान नहीं लेता उसे जन्म-मरण के चक्र में आते रहना होता है। इसे आत्मा के पुनर्जन्म का सिद्धान्त कहा जाता है। इस प्रकार उपनिषदों से दर्शन का आरंभ हुआ।

प्रश्न 24. जैन धर्म की देन बताइये।

अथवा

बौद्धधर्म के पतन के कारण बताइये।

उत्तर—जैन धर्म ने कार्य व्यवस्था की बुराइयों और वैदिक धर्म के कर्मकाण्डों से लड़ने के गम्भीर प्रयत्न किये। इसने अहिंसा के संदेश को फैलाया, जिसका अर्थ है कि जड़ चेतन किसी भी पदार्थ को कष्ट न पहुँचाना बल्कि दवा करना। भारतीय साहित्य की वृद्धि और गुजराती, मराठी व कन्नड़ जैसी क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में इसने महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अथवा

उत्तर—बौद्ध धर्म के पतन के कारण निम्नलिखित थे—

(i) बौद्ध धर्म महायान एवं हीनयान दो वर्गों में बँट गया। ईश्वर रूप में पूजा अवतार मानना, जादू-टोने, तन्त्र-मन्त्र में विश्वास पतन का कारण बना।

(ii) प्रारम्भिक समय में बौद्ध भिक्षु मठ में रहकर समर्पण से काम करते थे। आगे चलर वे भोग विलासी, दुराचारी हो गये। जो पतन का कारण बना।

(iii) अनेक भ्रष्ट और रूढ़ आचारों को अपनाने से बौद्ध धर्म कर्मकाण्डी और पतित हो गया।

(iv) कनिष्क की मृत्यु के पश्चात् बौद्ध धर्म को राजकीय संरक्षण लगभग समाप्त हो गया।

प्रश्न 25. कला एवं मूर्तिकला पर विदेशी सम्पर्क का क्या परिणाम हुआ ?

अथवा

राष्ट्रकुल शासक को सहिष्णु क्यों कहा गया ?

उत्तर—**कला और मूर्तिकला**—पश्चिमी देशों से प्रगाढ़ सम्बन्धों के फलस्वरूप भारतीय कला को नए रूपों से अवगत होने का अवसर मिला। कला की गांधार शैली का विकास पश्चिम की एक महत्वपूर्ण देन है। इस शैली ने यूनान और रोम दोनों के कला रूपों को ग्रहण किया। कुषाण काल की बहुत सी बुद्ध की प्रतिभाएँ मिली है। इन मूर्तियों ने बुद्ध का मुख यूनानी देवता अपोलो से मिलता है।

मथुरा जो कि कला की भारतीय शैली का केन्द्र था वह भी आक्रमणों से प्रभावित हुआ। मिट्टी और लाल पत्थर की बहुत सी मूर्तियाँ मिली हैं। यह प्रमाणित करती है कि इन पर शक और कुषाणों का प्रभाव था। इनमें सबसे प्रसिद्ध है मथुरा से प्राप्त कनिष्क की सिर विहीन मूर्ति। प्रारंभिक बौद्धों ने महात्मा बुद्ध को प्रतीक रूप में चित्रित किया था।

अथवा

उत्तर—राष्ट्रकूट शासक सहनशील थे। उन्होंने जैन बौद्ध और शैव धर्म को संरक्षण प्रदान किया। उनके द्वारा बनवाये गए मन्दिर उनकी भक्ति भावना का प्रतीक है। विश्वास किया जाता है कि अमोधवर्ष एक सच्चा जैन था और उसने अनेक मन्दिर बनवाये थे। राष्ट्रकूट राजाओं ने इस्लाम धर्म को छूट दे रखी थी। तटीय नगरों में मस्जिदें बनवायी थीं। सहिष्णुता की नीति के फलस्वरूप ही राष्ट्रकूट संस्कृति को सम्पन्नता प्राप्त हुई।

प्रश्न 26. गुप्त काल में रचे गये साहित्य की विशेषताएँ लिखिए।

अथवा

गुप्तों की धार्मिक दशा का वर्णन कीजिए।

उत्तर—गुप्तकाल में धार्मिक और धर्म निरपेक्ष साहित्य लिखा गया। कालीदास, शूद्रक, भास, विशाखदत्त और हरिषेण महान नाटककार और कवि थे। पुराण, महाभारत और रमायण का संकलन इसी काल में हुआ।

अथवा

उत्तर—गुप्तों के पूर्व शासन काल में बौद्ध धर्म के प्रमुख धर्म था। गुप्त सम्राट ब्राह्मण धर्म के अनुयायी थे, इस कारण ब्राह्मण धर्म के विकास में सहयोग दिया। हिन्दू धर्म का पुनर्जागरण हुआ। गुप्तकाल में ब्राह्मणों का प्रभाव अत्यधिक बढ़ा। इस काल में हिन्दू देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बनी। यज्ञ के बदले पूजा, भक्ति और मूर्तिपूजा ने स्थान ले लिया। बौद्ध धर्म का महत्व तेजी से घटने लगा और बुद्ध को भी विष्णु का अवतार मानने लगे। बुद्ध को विष्णु का अवतार मान कर बुद्ध की महत्ता को कम करने का प्रयास किया गया।

प्रश्न 27. मंगोल आक्रमण को रोकने के लिए सुल्तान अल्लाउद्दीन खिलजी ने क्या उपाय किये ?

अथवा

सांकेतिक मुद्रा से क्या अभिप्राय है ? इसका प्रचलन क्यों असफल रहा ?

उत्तर—सुल्तान अलाउद्दीन ने अपनी राजधानी दिल्ली को मंगोल आक्रमणों से बचाने के लिए सीमा-सुरक्षा के लिए कदम उठाये। उसने पंजाब, मुल्तान और सिन्ध के पुराने किलों की मरम्मत करवायी और नये किले भी बनवाए। उसने सीमा-सुरक्षा के लिए अतिरिक्त सैनिक भी रखे। फिर भी चंगेज खां के वंशज अली बेग के नेतृत्व में मंगोल सेना ने पंजाब पर आक्रमण किया।

अथवा

उत्तर—सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक ने चांदी के सिक्के टका के मूल्य के बराबर कांसे के सांकेतिक सिक्के चलाए।

सरकार जनता द्वारा बनाए जाने वाले नकली सिक्कों को नहीं नियन्त्रित कर सकी जिसके

फलस्वरूप बहुत से नकली सिक्के बाजार में आ गये।

प्रश्न 28. खानवा के युद्ध के परिणाम लिखिए।

अथवा

बाबर के भारत आक्रमण पर राजनीति क्षेत्र में क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर—खानवा युद्ध के परिणाम निम्नलिखित थे—

(i) खानवा युद्ध से राजपूतों की संगठित सेना छिन्न-भिन्न हो गई। श्रेष्ठ योद्धा राजपूतों की शक्ति काम नहीं आयी, अन्ततः हार का सामना करना पड़ा। प्रतिद्वन्द्वी राजपूत समाप्त हो गये।

(ii) बाबर की युद्ध कला की श्रेष्ठता सिद्ध हुई। बाबर की शक्ति व पराक्रम को देखकर कुछ अफगान सरदारों ने भी उनकी अधीनता स्वीकार कर ली। बाबर ने सरदारों के प्रति उदारता दिखाई और उन्हें महत्वपूर्ण भूमि अनुदान में दी। उसने अपने सरदारों के वे नगर और किले अनुदान के रूप में दिए जिससे सेना रखने का और उन नगरों के किलों की सुरक्षा कर सके, अन्य किलों पर विजय कर सकें।

अथवा

उत्तर—बाबर का भारत आगमन अनेक दृष्टि से महत्वपूर्ण था। उसके आगमन से भारत में एक नई राजनीतिक स्थिरता आई। उसने राजपद की प्रतिष्ठा देश में ही नहीं, विदेशों में बढ़ाई। उसने खलीफा से स्वीकृति के बिना स्वयं को बादशाह घोषित कर दिया था, जबकि दिल्ली सुल्तानों ने ऐसा कभी नहीं किया था। उसने सारे भारत में साम्राज्य स्थापना के लिए मार्ग प्रशस्त कर दिया था। उसने लोदियों और राजपूतों की शक्ति को इतना नष्ट कर दिया था कि उनके दोबारा उभरने की संभावना नहीं रही थी। इस तरह उसने उत्तर भारत में शक्ति सन्तुलन को भंग कर दिया था। उसने बादशाह की उपाधि धारण की और अधीन शासकों को सुल्तान की उपाधि दी।

प्रश्न 29. पुरन्दर की सन्धि की शर्तें बताइये।

अथवा

औरंगजेब की दक्कन नीति के परिणाम लिखिए।

उत्तर—(1) शिवाजी ने चार लाख हूण प्रतिवर्ष लगान वाले 23 किले मुगलों को सौंप दिये, शिवाजी के पास केवल 12 किले रह गये। (2) बीजापुर की सल्तनत का कोंकण और बालाघाट का कुछ क्षेत्र शिवाजी को दिया गया इसके बदले में शिवाजी को 40 लाख हूण किश्तों में मुगलों को देने थे।

अथवा

उत्तर—औरंगजेब की दक्कन नीति के परिणाम निम्नलिखित हैं—

(i) दक्कन में मराठों की स्थिति सुदृढ़ थी, उन्होंने गुरिल्ला रणनीति अपनाई, इससे उन्हें विश्वास हो गया कि वे मुगलों से निपटने में सक्षम हैं। मराठों को दक्कनी रियासतों का पूरा सहयोग मिल रहा था। औरंगजेब इस मराठा आन्दोलन को भली-भाँति समझ नहीं सका जिसका आधार जनसाध ारण था। इसलिए उनसे निपटते समय वह कई भूल कर बैठा उसने शिवाजी से सम्बन्धनहीं बनाए। शम्भाजी को मृत्युदण्ड दिया। उसकी इस कार्यवाही से मराठा मुगलों से लड़ने के लिए दृढ़ संकल्प हो गये। औरंगजेब ने दक्कन की विजय का कार्य उस समय शुरू किया जब वह 70 वर्ष का था और असफलताओं के कारण हताश हो चुका था।

औरंगजेब ने शक्तिशाली राजपूतों से सम्बन्ध बिगाड़ लिए थे जिससे उनका पूर्ण सहयोग

मुगलों को नहीं मिला।

प्रश्न 30. अकबर की मनसबदारी प्रथा की व्याख्या कीजिए।

अथवा

शेरशाह की स्थापत्य कला को समझाइये।

उत्तर—मनसबदारी प्रथा का आरंभ अकबर ने किया था। इसके अन्तर्गत साम्राजय के सैनिक अधिकारियों का स्तर या दर्जा निश्चित किया जाता था। पृथक से कोई सैन्य विभाग का गठन नहीं किया गया था। मनसब अलग-अलग स्तर के होते थे। मनसबदारों के अधीन कम-से-कम 10 हजार सैनिक तक होते थे। इस प्रकार सबसे बड़ा सैन्य अधिकारी 10 हजार सैनिकों की देखभाल करता था। निम्नतम पद (मनसब) 10 सिपाहियों तक का होता था। राजा मानसिंह को 9000 सिपाहियों का मनसब प्राप्त था।

सामान्यत: सम्राट के परिवार या अति विश्वासपात्र व्यक्ति को ही दस हजारी मनसबदार बनाया जाता था। मनसबदारों को राजस्व वसूली के अधिकार भी प्राप्त होते थे तथा वेतन नगद राशि के रूप में शाही खजाने से दिया जाता था।

अथवा

उत्तर—शेरशाह एक महान् भवन निर्माता था। उसने अपने जीवन काल में सहसराम में अपना मकबरा बनावाया था। यह मकबरा बलवा पत्थर का बना था। इसे वास्तुकला के क्षेत्र में उत्कृष्ट कृति माना जाता है। शेरशाह ने यमुना नदी के तट पर छठी दिल्ली बसाई। इसमें अब पुराना किला और मस्जिद है।

इस प्रकार शेरशाह के स्मारक सल्तनत काल की वास्तुकला का चरमोत्कर्ष है तो दूसरी मुगल काल की वास्तुकला का सूत्रपात है।

प्रश्न 31. जालियांवालाबाग काण्ड से आप क्या समझते हैं ?

अथवा

गाँधीजी के रचनात्मक कार्यों को संक्षेप में लिखिए।

उत्तर—जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड—सरकार द्वारा किए जाने वाले दमन-चक्र के विरोध में 13 अप्रैल, 1919 ई. को अमृतसर के जलियांवाला बाग में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। इस शान्तिपूर्ण समय पर अमानुषिक रूप से गोलियों की वर्षा की गई। लगभग एक हजार स्त्री, पुरुष और बच्चे मारे गये तथा दो हजार व्यक्ति घायल हुए परन्तु इस आतंक के बावजूद भी राष्ट्रीय आन्दोलन का दमन नहीं हो सका।

अथवा

उत्तर—गाँधीजी के रचनात्मक कार्य निम्नलिखित थे—

(i) सम्पूर्ण मद्य-निषेध।
(ii) अहिंसा का पालन करना।
(iii) स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग।
(iv) सर्वसाधारण की शक्ति पर विश्वास।
(v) अछूतोद्धार।
(vi) ट्रस्टीशिप का सिद्धान्त।
(vii) हिन्दू-मुस्लिम एकता की स्थापना।
(viii) आदर्श राज्य की स्थापना।
(ix) बुनियादी शिक्षा का सिद्धान्त।
(x) पवित्रता एवं निर्भरता।

नोट—प्रश्न क्रमांक 32 से 38 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न पर 6 अंक एवं

विकल्प है। शब्द सीमा अधिकतम 200 शब्द।6 × 7 = 42

प्रश्न 32. सिकन्दर के आक्रमण का भारतीय इतिहास पर क्या प्रभाव पड़ा ?

अथवा

जैनधर्म के सिद्धान्तों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—सिकन्दर के आक्रमण के समय उत्तर-पश्चिम भारत छोटे-छोटे राजतन्त्रों में बँटा हुआ था। एकता के अभाव में यूनानियों को उन्हें एक के बाद एक जीतने में मदद की। उनमें सर्वाधि ाक महत्वपूर्ण राजा थे—आंभी और पोरस। आंभी ने बिना कोई विरोध किए सिकन्दर के सम्मुख समर्पण कर दिया। पोरस ने कड़ा विरोध प्रदर्शित किया। सिकन्दर उसकी बहादुरी से प्रभावित हुआ और हार के पश्चात् भी सम्मानजनक रूप से पोरस का राज्य लौटा दिया।

इसके पश्चात् "कन्दर व्यास नदी की ओर बढ़ा और उसने पंजाब के काफी राज्यों को हरा दिया। वह पूर्व दिशा में आगे बढ़ना चाहता था लेकिन उसके सैनिकों ने मगध के नन्द की विशाल सेना और शक्ति से हतोत्साहित होकर आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया और "कन्दर को लौटना पड़ा। वापसी यात्रा में "कन्दर ने अनेक छोटे-छोटे गणतन्त्रों जैसे "बि और शूद्रक को हराया। 323 ई. पू. में 32 वर्ष की अल्पायु में उसकी बेबीलोन में मृत्यु हो गयी।

सिकन्दर को अपनी विजयों को व्यवस्थित करने का समय नहीं मिला। अधिकतर राज्यों को उसके शासकों को, जिन्होंने उसकी सत्ता स्वीकार कर ली, लौटा दिया गया। उसने अपने अधिकृत क्षेत्र जिनमें पूर्वी यूरोप के कुछ भाग और पश्चिमी एशिया का कुछ बड़ा भाग शामिल था, को तीन भागों में बाँटा। उसके लिए सिकन्दर ने तीन राज्यपाल नियुक्त किए। उसके साम्राज्य का पूर्वी हिस्सा सेल्यूकस निकेटर को मिला, जिसने अपने स्वामी सिकन्दर की मृत्यु के बाद, स्वयं को राजा घोषित कर दिया। सिकन्दर के आक्रमण ने भारत में राजनीतिक एकता का मार्ग प्रशस्त किया। सिकन्दर ने सभी छोटे और झगड़ालू राज्यों को जीत लिया था और क्षेत्र में मौर्यों का विस्तार आसान हो गया।

अथवा

उत्तर—महावीर स्वामी ने जिन सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया वे जैन धर्म के सिद्धान्त कहलाये। जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक वसतु में आत्मा होती है। न केवल पशु-पक्षियों में, बल्कि पौधों, धातुओं, खनिजों, पत्थरों और जाल की भी आत्मा होती है। उनकी मान्यता है कि पत्थर तक को कष्ट होता है। जैन धर्म अच्छे व्यवहार और नैतिकता पर बल देते हैं। यह व्यवहार के पांच नियम बताता है जिन्हें पांच महाव्रज कहते हैं। ये निम्नलिखित हैं—

(i) अहिंसा, (ii) सत्य वचन, (iii) अस्तेय, (iv) अपरिग्रह, (v) ब्रह्मचर्य।

प्रश्न 33. अशोक का धम्म क्या था ? उसकी प्रमुख विशेषता लिखिए।

अथवा

गुप्तकाल के पतन के चार कारण लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1, प्रश्न 33 देखें।

अथवा

उत्तर—गुप्त साम्राज्य के पतन के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

(1) अयोग्य उत्तराधिकारी—स्कन्दगुप्त के उपरान्त कोई ऐसा प्रतापी शासक नहीं हुआ जो

साम्राज्य को सुसंगठित रख सकता। समुद्रगुप्त और चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा स्था"त तथा स्कन्दगुप्त द्वारा रक्षित, विशाल गुप्त साम्राज्य को राजनीतिक एकता के सूत्र में आबद्ध रखने में गुप्त शासक असमर्थ रहे। **(2) वंशानुगत राजतंत्र**—गुप्त राज्य व्यवस्था वंशानुगत राजतंत्र की व्यवस्था थी, इस कारण भी इसाक पतन हुआ। **(3) सामंतों का स्वार्थ**—गुप्त राज्य का दुर्भाग्य था कि इसका सामंत वर्ग स्वार्थी एवं महत्वाकांक्षी था। इस वर्ग ने संकट के काल में राज्य को बचाने का प्रयास करने के बजाय उसकी कठिनाइयों का लाभ उठाया। **(4) विदेशी आक्रमण**—बाह्य आक्रमणों के कारण गुप्त साम्राज्य खोखला हो गया। शक और हूणों के आक्रमण से साम्राज्य की रक्षा करने में केवल स्कन्दगुप्त ही सफल रहा। स्कन्दगुप्त की मृत्यु के पश्चात् हूणों का पुन: आक्रमण प्रारंभ हो गया। फलस्वरूप गुप्त साम्राज्य नष्ट हो गया।

प्रश्न 34. भारतीय संस्कृति को मिश्रित संस्कृति क्यों कहा जाता है ?

अथवा

गंधार और मथुरा शैली में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—भारतीय संस्कृति की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह एक मिश्रित संस्कृति है। भारतीय संस्कृति विभिन्न संस्कृतियों के मिश्रण का प्रतिफल है। इसका विकास अनेक संस्कृतियों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया से हुआ है। आरम्भ में आर्य आए और उनसे आदान-प्रदान हुआ। आगे आर्यो-अनार्यों में सम्पर्क हुआ। दोनों ने ही एक-दूसरे से सीखा। उस समय के समाज और व्यवस्था में ऐसे अनेक उदाहरण उपलब्ध हैं। बाद के समय में भी सामंजस्य की प्रक्रिया स्वाभाविक रूप से चलती रही। शक, कषाण, हूण, पार्थियन लोग अपनी मातृभूमि मध्य एशिया कभी वापस नहीं गए। इन्होंने भारत को ही अपना देश माना और भारतीय परम्पराओं व रीति-रिवाजों को अपनाया तथा स्थानीय संस्कृति को सम्पन्न बनाने में अपना योगदान दिया और सभी भारतीय समाज के अंग बन गए। इन संस्कृतियों का प्रभाव मूर्तिकला और वास्तुकला की गांधार और मथुरा शैली के विकास में देखा जा सकता है। इस तरह आदान-प्रदान की प्रक्रिया के कारण ही भारतीय संस्कृति सम्पन्न हुई, इसलिए उसे मिश्रित संस्कृति कहा जाता है।

अथवा

उत्तर—गांधार शैली को ग्रीक-रोमन, ग्रीक-बुद्ध या इण्डो-ग्रीक कहते हैं, क्योंकि इससे रोम और यूनान का प्रभाव स्पष्ट मालूम पड़ता है। शक और कुषाण शासकों ने इस शैली को संरक्षण दिया था। सर्वप्रथम बुद्ध की मूर्ति इस शैली में ही बनाई गई थी। यह कला भारत के उत्तर पश्चिम भाग में फली-फूली थी। इस क्षेत्र को गांधार कहा जाता था। बुद्ध की अनेक मूर्तियाँ विमारन, शाह जी की ढेरी, हद्दा और तक्षशिला में मिली हैं। अधिकांश मूर्तियाँ सफेद पत्थर की बनी हैं। गांधार शैली की मुख्य विशेषता है कि मानव आकृति को वास्तविक रूप दिया गया है। गांधार शैली को भारतीय मूर्तिकला की श्रेष्ठ शैलियों में माना जाता है। इस शैली में बनी बुद्ध की मूर्तियों को भारतीय कला की उत्तम कृति माना जाता है।

कला की मथुरा शैली का आरम्भ ईसा की प्रथम शताब्दी में हुआ। मथुरा शैली इतनी विक. सित थी कि इस शैली में बनी मूर्तियाँ पश्चिम में तक्षशिला और मध्य एशिया और पूर्व में सरस्वती तथा सारनाथ तक भेजी जाती थीं। मथुरा शैली की मूर्तियाँ लाल पत्थर की बनाई जाती थीं और उन्हें पॉलिश किया जाता था। गांधार शैली की मूर्तियों में वास्तविकता होती थी तो मथुरा शैली की मूर्तियों में भव्यता की अभिव्यक्ति होती थी जिससे साधना करने वाले को प्रेरणा मिलती थी। विशेषत: कनिष्क

की मूर्ति, मथुरा का नागराज, यक्षियों की खड़ी मूर्तियाँ, बुद्ध मूर्तियाँ और यक्ष तथा यक्षिनी की अनेक मूर्तियाँ इस शैली की ही कृतियाँ हैं। शायद आरम्भिक काल में ही इसकी प्रेरणा का स्त्रोत जैन धर्म था क्योंकि इस शैली के कलाकारों ने तीर्थकरों को भक्ति की मुद्रा में दर्शाते हुए मूर्तियाँ बनाई हैं।

प्रश्न 35. शाहजहाँ के पुत्रों में उत्तराधिकारी के युद्ध के क्या कारण थे ?

अथवा

औरंगजेब की हिन्दू विरोधी नीति को संक्षिप्त में समझाइये।

उत्तर—शाहजहाँ के जीवित अवस्था में चारों पुत्रों में उत्तराधिकारी के लिए संघर्ष छिड़ गया। उसके निम्नलिखित कारण थे—

(i) मुगलकाल में उत्तराधिकार के कोई सुनिश्चित नियम नहीं थे। संभावित उत्तराधिकारी अवसर पाते ही उत्तराधिकार के लिए संघर्ष आरम्भ कर देते थे। शाहजहाँ के अन्तिम समय में भी यही हुआ, उसके चारों पुत्रों में संघर्ष छिड़ गया।

(ii) शाहजहाँ के चारों पुत्र भिन्न-भिन्न स्वभाव के थे। उनमें चारित्रिक विभिन्नता के कारण कोई किसी को पसन्द नहीं करता था। इसके परिणामस्वरूप वे संघर्ष के लिए प्रेरित हुए।

(iii) शाहजहाँ के चारों राजकुमार सूबेदार थे तथा साधन सम्पन्न थे। आर्थिक तथा सैनिक स्वतन्त्रता ने उसकी महत्वाकांक्षा को बढ़ा दिया।

(iv) शाहजहाँ एक बार बीमार पड़ा। इस पत्राचार को सुनकर उसके पुत्रों ने उत्तराधिकार की तैयारी कर ली। यहाँ तक अफवाह फैला दी कि दाराशिकोह शाहजहाँ की मृत्यु की खबर को छिपा रहा है तथा मुगल साम्राज्य का स्वामी बनना चाहता है।

(v) शाहजहाँ दाराशिकोह को बहुत चाहता था, उसने उसे उत्तराधिकारी नियुक्त करने हेतु अपने विश्वसनीय सरदारों के सामने प्रस्ताव रखा। उसने उसकी मनसबदारी 40,000 से बढ़ाकर 60,000 कर दी थी तथा यह घोषणा कर दी गई कि दाराशिकोह को सम्राट का सम्मान दिया जाये। इसे पक्षपातपूर्ण मानकर शेष राजकुमारों ने अपने-अपने अधिकारों के पक्ष प्रस्तुत किए।

(vi) दाराशिकोह शाहजहाँ का प्रेम तथा पक्ष पाकर मनमानी करने लगा था। उसके इस प्रकार के व्यवहार ने ही भाइयों में पारस्परिक संघर्ष को जन्म दिया। उसने बंगाल, गुजरात तथा दक्षिण में बीजापुर जाने के सारे मार्ग बन्द कर दिये ताकि उसके भाईयों के पास कोई सूचना न पहुँच सके। परिणाम में उसके भाइयों ने संघर्ष का रास्ता अपनाया।

(vii) अमीर तथा असरदार अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए पारस्परिक गुटबन्दी के आधार पर संघर्ष की स्थिति पैदा कर देते थे। कट्टर सुन्नी मुसलमान एक ओर औरंगजेब को भड़काते तो उदारवादी लोग दाराशिकोह को समर्थन देते थे। शिया, शुजा को ऊपर उछालते थे। इससे संघर्ष की स्थिति निर्मित हो गयी थी।

अथवा

उत्तर— **औरंगजेब की हिन्दू विरोधी नीति**

(i) नये बने हिन्दू मन्दिर औरंगजेब की आज्ञा से गिराए गए तथा पुराने जीर्ण-शीर्ण मंदिरों की मरम्मत की आज्ञा भी नहीं थी। धार्मिक कट्टरता के कारण हिन्दुओं के पूजा स्थलों को वह शत्रुता की दृष्टि से देखता था।

(ii) औरंगजेब ने हिन्दुओं पर जजिया कर वसूल करने का फरमान जारी किया था।

(iii) औरंगजेब ने ऐसा प्रयत्न किया कि उच्च पदों पर मुसलमान ही नियुक्त किए जाएँ। हिन्दू कर्मचारियों को अधिक महत्व नहीं दिया जाता था।

(iv) औरंगजेब ने हिन्दू तथा गैर-मुसलमानों को उपहार, अनुदान तथा पदवियाँ देकर उनमें इस्लाम धर्म ग्रहण करने की भावना को जाग्रत किया। वह चाहता था कि अधिक से अधिक हिन्दू, मुसलमान बन जाएँ। 1661 ई. में उसने हिन्दुओं को शासकीय पद से पृथक् कर दिया।

(v) हिन्दुओं को अपने त्यौहार मनाने को मनाही थी। इस संकीर्णता ने राष्ट्रीय तथा सांस्कृतिक एकता को गहरी चोट पहुंचाई। होली के त्योहार में पबांदी लगाई गयी।

(vi) औरंगजेब ने हिन्दुओं को जिस प्रकार परेशान किया, ठीक उसी तरह शिया मुसलमान भी उससे त्रस्त थे। उसने दक्षिण के शिया राज्य गोलकुण्डा तथा बीजापुर को मुगल साम्राज्य में मिला लिया। इसके अतिरिक्त उसने अनेक शिया सम्प्रदाय के लोगों की हत्या करवायी परन्तु उसकी औरंगजेब को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ी।

(vii) हिन्दुओं की पाठशालाओं को नष्ट कर दिया। मन्दिरों को तोड़-तोड़ कर नष्ट कर दिया तथा अनेक मूर्तियों को अपमानित करने के लिए आगरा की जामा मस्जिद की सीढ़ियों के नीचे जड़वा दिया ताकि मुसलमान उन मूर्तियों व उसके टुकड़ों पर पैर रखकर ऊपर जा सके। मन्दिरों के भग्नावशेषों से मस्जिदों के निर्माण करवाये।

प्रश्न 3. मराठा शक्ति के उदय के कारणों का उल्लेख कीजिए।

अथवा

मुगलों के पतन के कारणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर—मराठों के उदय में भक्ति आन्दोलन महत्वपूर्ण प्रेरक शक्ति रहा। इस आन्दोलन का आरम्भ 1296 ई. से ज्ञानदेव से आरम्भ हुआ। सन्त तुकाराम (1608 ई.) में अपनी चरमोत्कर्ष पर पहुँचा। इस प्रकार भक्ति आन्दोलन में मराठा समाज के जागरूक बनाया और इसे शक्ति प्रदान की। सन्तों ने जनसाधारण की भाषा (मराठी) में भक्ति गीत लिखे। यह साहित्य जन साधारण को उत्साहित करने का सफल माध्यम था।

ऐसी परिस्थितियों में शिवाजी मराठों के विभिन्न वर्गों को संगठित करने में सफल रहे विभिन्न जनजाति के लोगों से मित्रता की इस मित्रता से आन्दोलन को शक्ति मिली और वह व्यापक बना। व्यापकता का अनुमान इसमें शामिल विभिन्न वर्गों के लोगों से लगाया जा सकता है। इस आन्दोलन को इस बात से भी बल मिला कि निम्न वर्ग में जन्मे व्यक्ति ऊँचा पद प्राप्त कर सकते हैं।

मराठा-समाज में भूमि के लिए संघर्ष एक महत्वपूर्ण पक्ष था। सर्वप्रथम छोटे भूमिधरों ने शिवाजी का साथ दिया शिवाजी ने बड़े भू-स्वामियों पर कभी विश्वास नहीं किया।

मराठा लोगों के चरित्र व इतिहास पर महाराष्ट्र की भौगोलिक स्थिति का विशेष योगदान था। महाराष्ट्र का अधिकांश क्षेत्र पर्वतीय और पठारी है भौगोलिक वातावरण ने उन्हें गुरिल्ला युद्ध पद्धति को अपनाने का अवसर प्रदान किया। यही युद्ध पद्धति आगे चलकर इनकी सफलता का कारण बनी। दक्कन की बीहड़, अनु पादक भूमि, कृषि के सीमित साधन ने मराठों को परिश्रमी, दृढ़ संकल्पी बना दिया। जिनकी शक्ति का प्रयोग एक शक्तिशाली आन्दोलन के लिए किया जा सकता था।

कुछ इतिहासकारों का मत है कि मराठा आन्दोलन का उदय औरंगजेब की भेदभावपूर्ण ध ाार्मिक नीति के कारण हुआ था। मराठों का प्रारम्भिक शक्ति काल शाहजहाँ ने धार्मिक सहनशीलता

की नीति का अनुसरण किया था। दूसरे आरम्भ में मराठों का संघर्ष मुख्य रूप से दक्कन के मुस्लिम राज्य बीजापुर से था। उस समय संघर्ष मुगलों से नहीं था। शिवाजी ने हिन्दुओं और मुसलमानों को समान रूप से लूटा था। इतना होने पर भी यह सत्य है कि उसने राज्याभिषेक के अवसर पर धर्मोद्धारक (हिन्दू धर्म की सुरक्षा करने वाला) की पदवी ग्रहण कर हिन्दुओं की रक्षा की प्रतिज्ञा की थी।

अथवा

उत्तर—मुगल साम्राज्य के पतन के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—**(1) उत्तराधिकार सम्बन्ध ी सुनिश्चित नियमों का अभाव**—उत्तराधिकार सम्बन्धी सुनिश्चित नियमों के अभाव में सम्राट की मृत्यु के बाद सिंहासन के लिए संघर्ष छिड़ जाता था। औरंगजेब ने अपने "ता को कैदकर और तीन भाईयों की हत्या करके सिंहासन प्राप्त किया था। यह परंपरा आगे भी जारी रही। **(2) अयोग्य उत्तराधिकारी**—औरंगजेब के उत्तराधिकारी अयोग्य थे वे नाममात्र के सम्राट थे। इससे दरबारियों के षड्यंत्र बढ़ने लगे। **(3) मुगल सरदारों में पारस्परिक द्वेष भाव**—सम्राट की दुर्बलताओं का लाभ उठाकर मुगल सरदार अनेक गुटों में विभक्त हो गये। नूरानी, ईरानी, अफगानी तथा हिन्द. ुस्तानी सरदारों के अलग-अलग गुट थे, वे पारस्परिक द्वेष भाव से ग्रसित थे। **(4) साम्राज्य की विशालता**—औरंगजेब घोर साम्राज्यवादी था उसने बीजापुर तथा गोलकुण्डा तक अपने साम्राज्य को विस्तृत कर लिया था। औरंगजेब के पश्चात् उसके उत्तराधिकारियों के लिए इतने बड़े साम्राज्य की सुरक्षा करना असंभव सिद्ध हुआ। **(5) मराठों का उत्कर्ष**—दक्षिण में मराठों और मुगलों का संघर्ष बराबर चलता रहा। इसमें मराठा विजयी हुए और मुगल साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हुआ। **(6) औरंगजेब की नीतियाँ**—(1) औरंगजेब की धार्मिक नीति अनुदार थीं इससे सिक्ख, हिन्दू दक्षिण के मुस्लिम राज्य, राजपूत आदि सभी असन्तुष्ट थे। (2) औरंगजेब की दक्षिण नीति ने संपूर्ण मुगल राज्य को अस्त-व्यस्त कर दिया। **(7) रिक्त राजकोष**—मुगल काल के सभी शासकों ने अपनी महत्वाकांक्षा की तृप्ति के लिए दीर्घकालीन खर्चीले युद्ध किये। इसके परिणामस्वरूप राजकोष रिक्त हो गया। औरंगजेब के शासन के अन्तिम वर्षों में सैनिकों को वेतन देने के लिए भी पैसा नहीं था।

प्रश्न 37. अकबर की धार्मिक नीति का वर्णन कीजिए।

अथवा

भक्ति आन्दोलन के उदय का क्या कारण था ?

उत्तर—अकबर ने यह अनुभव किया था कि सुदृढ़ साम्राज्य बनाने के लिए उसे जनता का "य शासक बनना होगा। उसे अपनी भावनाओं को मूर्तरूप देने के लिए उदारता एवं धार्मिक सहिष्ण ुता की नीति अपनायी।

अकबर ने मुसलमान एवं गैर मुसलमानों को समान स्तर पर लाने के लिए जजिया व तीर्थ यात्रा कर समाप्त कर दिया। अकबर ने गैर मुसलमानों को पूजा स्थल बनाने और पुराने की मरम्मत करने की छूट भी दे दी। अकबर ने अपनी धार्मिक नीति के तहत सभी धर्मों को छूट दे दी जो निम्नानुसार हैं—

1. अकबर ने गैर मुसलमानों को अपना त्योहार मनाने की छूट दे दी। हिन्दुओं के साथ समान व्यवहार करता था।

2. गैर मुसलमान व राजपूतों से मैत्री सम्बन्ध स्था"त किये।

3. वह अपनी प्रजा के साथ "तृवत् व्यवहार करता था।

4. अकबर ने अपना अधिकांश समय धर्म के कार्यों में लगाया। वह धार्मिक विचारों से

प्रभावित होकर मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह अजमेर शरीफ जाने लगा।

अकबर ने 1575 ई. में आगरा के समीप फतेहपुर सीकरी में इबादतखाना की स्थापना की। अकबर ने एक नए धर्म की शुरूआत की, जिसमें सभी धर्मों की अच्छी बातें, सिद्धान्तों व पूजा पद्धति का समावेश था तथा जिसमें सभी धर्म व जाति के लोगों के लिए सर्वमान्य धर्म बनाया जो मुगलकाल के इतिहास में दीन-ए-इलाही धर्म के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

अथवा

उत्तर—मध्यकाल में सुल्तानों के अत्याचार एवं दमन की नीति से भारतीय समाज आतंकित और निराश हो चुका था। ऐसी स्थिति में कुछ विचारकों एवं संतों ने हिन्दू धर्म की कुरीतियों को दूर करने के लिए एक अभियान प्रारंभ किया। इसी आन्दोलन को भक्ति आन्दोलन के नाम से जाना गया। भक्ति आन्दोलन के उदय के निम्नलिखित कारण थे—

(1) मुस्लिम आक्रमण एवं अत्याचार—भारत में मुस्लिम आक्रमणकारियों ने बर्बरता से अत्याचार किये। हिन्दुओं का कत्लेआम किया एवं मन्दिरों व मूर्त्रियों को तोड़ा। इससे निजात पाने हेतु भक्ति के मार्ग को अपनाया गया। **(2) धर्म एवं जाति का भय**—मुस्लिम आक्रमणकारियों से हिन्दू सम्प्रदाय के लोग भयभीत थे उन्हें यह डर था कि उनके धर्म एवं जाति का विनाश हो जायेगा। इसीलिए इनकी रक्षा हेतु भक्ति आन्दोलन का आश्रय लिया गया। **(3) इस्लाम का प्रभाव**—हिन्दुओं ने अनुभव किया कि इस्लाम धर्म में सादगी व सरलता है। उनमें जातीयता भेदभाव नहीं है इसलिए हिन्दुओं ने इन्हें दूर करने के लिए जो मार्ग अपनाया उससे भक्ति आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। **(4) राजनैतिक संगठन**—मुस्लिम सुल्तानों ने भारतीयों पर भयंकर अत्याचार किया। भारतीयों राजाओं को परस्पर कर अपनी सत्ता की स्थापना की। इस संघर्ष से मुक्ति पाने के लिए भारतीयों ने अपने राज्य की पुनर्स्थापना की जिससे हिन्दू धर्म संगठित हो गया और भक्ति मार्ग को बल मिला। **(5) रूढ़िवादिता**—मध्यकाल के आते-आते हिन्दू धर्म रूढ़िवादी हो गया था। यज्ञों, अनुष्ठानों की संकीण ाता से लोग ऊब गये थे। वे सरल धर्म चाहते थे, जिससे भक्ति मार्ग का उदय हुआ।

प्रश्न 38. 1857 की क्रान्ति के कारणों का वर्णन कीजिए।

अथवा

भारत छोड़ो आन्दोलन की विवेचना करते हुए कारण बताइये।

उत्तर—1857 की क्रान्ति के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

1. आर्थिक कारण—(1) ब्रिटिश प्रशासन ने किसानों की भूमि तथा उत्पादन के आधार पर लगान तय नहीं किया बल्कि अपनी इच्छानुसार राजस्व (लगान) तय किया। (2) भारतीय हस्तशिल्प उद्योग व कृषि साथ-साथ चलते थे। ब्रिटिश प्रशासन ने दस्तकारों तथा शिल्पियों को लागत से कम मूल्य देकर जबरन उनका उत्पादन खरीदा। (3) इंग्लैण्ड में भारतीय माल पर अधिक शुल्क और भारत में इंग्लैण्ड के माल पर अति अल्प शुल्क लिया जाता था। इससे व्यापारी बेरोजगार होने लगे। (4) भारतीय धन का निर्गमन इंग्लेण्ड को होने लगा इससे भारत में बेरोजगारी व भुखमरी छा गई। (5) अनेक जमींदारों की भूमि अंग्रेजों के द्वारा हड़प ली गई। इससे जमींदारों में असन्तोष छा गया।

2. राजनीतिक कारण—(1) लार्ड डलहौजी ने भारत में साम्राज्यवादी प्रशासक के रूप में नरेशों के प्रति निरंकुश नीति अपनाई। (2)अवध का विलीनीकरण ब्रिटिश भारत में कर लिया गया। (3) बहादुर शाह के उत्तराधिकारी को दिल्ली के बाहर कुतुबमीनार के पास रहने को मजबूर किया

गया। (4) नाना साहेब और लक्ष्मीबाई के साथ अनुचित व्यवहार किया गया।

3. सामाजिक कारण–(1) ईसाई मिशनरियों को बढ़ावा दिया गया। (2) सती प्रथा जैसी रीति एवं रिवाजों को समाप्त करने की चेष्टा की गई। (3) धर्म परिवर्तन को प्रोत्साहन दिया गया। (4) दत्तक पुत्र की प्रथा पर रोक लगाई गई।

4. सैनिक कारण–(1) जबरन भारतीय सिपाहियों को प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध के समय समुद्र के पार भेजा गया। (2) भारतीय सैनिकों की आर्थिक स्थिति दयनीय थी उन्हें अंग्रेजों से कम वेतन दिया जाता था। (3) बात-बात पर भारतीय सैनिकों का अपमान अंग्रेज अधिकारी करते थे। उन्हें सूअर जैसे शब्दों से सम्बोधित किया जाता था।

अथवा

उत्तर–भारत छोड़ो आन्दोलन चलाये जाने के निम्नलिखित कारण थे–

1. क्रिप्स मिशन से निराशा–भारतीयों के मन में यह बैठ गई थी कि क्रिप्स मिशन अंग्रेजों की एक चाल थी जो भारतीयों को धोखे में रखने के लिए चली गई थी। क्रिप्स मिशसन की असफलता के कारण उसे वापस बुला लिया गया था।

2. बर्मा में भारतीयों पर अत्याचार–बर्मा में भारतीयों के साथ किए गए दुर्व्यवहार से भारतीयों के मन में आन्दोलन प्रारंभ करने की तीव्र भावना जाग्रत हुई।

3. ब्रिटिश सरकार की घोषणा–27 जुलाई, 1942 ई. को ब्रिटिशस सरकार ने एक घोषण ाा जारी कर यह कहा कि कांग्रेस की मांग स्वीकार की गई तो उससे भारत में रहने वाले मुस्लिम तथा अछूत जनता के ऊपर हिन्दुओं का आधिपत्य हो जाएगा। इस नीति के कारण भी आन्दोलन आवश्यक हो गया।

4. द्वितीय विश्व युद्ध के लक्ष्य की घोषणा–ब्रिटिश सरकार भारतीयों को भी द्वितीय विश्व युद्ध की लड़ाई में सम्मिलित कर चुकी थी, परन्तु अपना स्पष्ट लक्ष्य घोशित नहीं कर रही थी। यदि स्वतंत्रता एवं समानता के लिए युद्ध हो रहा है तो भारत की भी स्वतंत्रता एवं आत्म निर्णय का अधिकार क्यों नहीं दिया जाता ?

5. आर्थिक दुर्दशा–अंग्रेजी सरकार की नीतियों से भारत की आर्थिक स्थिति अत्यन्त खराब हो गई थ्री और दिनों दिन स्थिति बदतर होती जा रही थी।

6. जापानी आक्रमण का भय–द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापानी सेना रंगून तक पहुँच चुकी थी, लगता था कि वे भारत पर भी आक्रमण करेगी। भारतीयों के मन में यह बात आई कि अंग्रेज जापानी सेना का सामना नहीं कर सकेंगे।

❑

सॉल्वड पेपर

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

कक्षा 12

विषय : इतिहास

सेट—3 (दिसम्बर, 2011)

समय : 3 घण्टे] **[पूर्णांक : 100**

निर्देश—सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।

निर्देश—(1) प्रश्न क्रमांक 1 से 11 तक एक श्ब्द में उत्तर दीजिजए एवं प्रश्न क्रमांक 12 से 22 तक के खाली स्थान भरिये। प्रत्येक पर 1 अंक निर्धारित है।

प्रश्न 1. चार वर्णों के नाम लिखिए।

उत्तर—(1) ब्राह्मण, (2) क्षत्रिय, (3) वैश्य, (4) शूद्र।

प्रश्न 2. बौद्ध धर्म की दो मुख्य शाखाएँ कौन-सी हैं?

उत्तर—(1) हीनयान, (2) महायान।

प्रश्न 3. ह्वेनसांग भारत क्यों आया था ?

उत्तर—ह्वेनसांग भारत में नालन्दा विश्वविद्यालय में पढ़ने एवं बौद्ध ग्रन्थ संग्रह करने के उद्देश्य से आया था।

प्रश्न 4. जहाँगीर ने किस कार्य से सिक्खों में क्रोध भड़का ?

उत्तर—गुरु अर्जुनदेव की हत्या।

प्रश्न 5. उन दो देवताओं के नाम लिखिए जो गुप्तकाल में महत्वपूर्ण हुए।

उत्तर—विष्णु, शिव।

प्रश्न 6. गुलाम वंश की स्थापना किसने की थी ?

उत्तर—कुतुबुद्दीन ऐबक।

प्रश्न 7. किस विदेशी जाति ने पार्थियनों को पराजित किया था ?

उत्तर—कुषाणों ने पार्थियनों को पराजित किया था।

प्रश्न 8. तालिकोट का युद्ध कब और कहाँ हुआ ?

उत्तर—बनोहाटी, 1565।

प्रश्न 9. जहाँगीर के किस कार्य से सिक्खों में क्रोध भड़का ?

उत्तर—जहाँगीर ने गुरू अर्जुन देव सिंह को बन्दीगृह में डाल दिया जहाँ उसकी हत्या हो गई इस कारण सिक्खों में क्रोध भड़का।

प्रश्न 10. अबुल फजल की एक महत्वपूर्ण कृति कौन-सी थी ?

उत्तर—

प्रश्न 11. इस्लाम के दो मुख्य सम्प्रदाय कौन से थे ?

उत्तर—इस्लाम के दो मुख्य सम्प्रदाय सिया और सुन्नी थे।

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

प्रश्न 12. सिन्धु सभ्यता के लोगों को ………… धातु का ज्ञान नहीं था।

उत्तर—लौह।

प्रश्न 13. कर्नाटक में जैन धर्म के प्रसार में ………… ने मदद की।

उत्तर—चन्द्रगुप्त मौर्य।

प्रश्न 14. महावीर ने ………… बल दिया।

उत्तर—अहिंसा।

प्रश्न 15. हर्ष का राजकवि ………… था।

उत्तर—बाणभट्ट

प्रश्न 16. मथुरा शैली में ………… की मूर्तियाँ बनी थीं।

उत्तर—कनिष्क।

प्रश्न 17. गुप्त वंश का प्रथम शासक ………… था।

उत्तर—श्रीगुप्त।

प्रश्न 18. समुद्रगुप्त के दरबार का कवि ………… था।

उत्तर—हरिषेण।

प्रश्न 19. इबादतखाना की स्थापना ………… में की गई थी।

उत्तर—फतेहपुरसीकरी।

प्रश्न 20. लंगर प्रथा ………… सम्प्रदाय में है।

उत्तर—सिक्ख।

प्रश्न 21. जजिया कर ………… से लिया जाता था।

उत्तर—हिन्दुओं।

प्रश्न 22. कांग्रेस की स्थापना ………… ने की थी।

उत्तर—सर ए. ओ. ह्यूम।

निर्देश—प्रश्न क्रमांक 23 से 31 तक लघु उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक एवं विकल्प हैं। (उत्तर की अधिकतम शब्द सीमा 75 शब्द)

प्रश्न 23. षट्दर्शनों का संक्षेप में विवरण दीजिए।

उत्तर—वैदिक दार्शनिक संकल्पनाओं से विभिन्न दार्शनिकों शाखाओं का जन्म हुआ, जिन्हें षट्दर्शन कहा जाता है। ये सभी वेदों की सत्ता को स्वीकारते हैं। अत: पुरानतपंथी पद्धतियों के रूप में व्याख्यायित होते हैं। परन्तु इन सभी ने उपनिषदों के मूल सिद्धान्तों का विभिन्न तरीकों से विकास का प्रयास किया और मोक्ष प्राप्ति के विभिन्न उपाय बताए। ये छ: शाखाएँ दो-दो के तीन समूहों में

विभाजित हैं, जो आपस में सम्बन्धित और पूरक माने जाते हैं। ये समूह हैं—न्याय और वैशेषिक, सांख्य और योग, मीमांसा और वेदान्त।

प्रश्न 23. आश्रम व्यवस्था का विवरण दीजिए।

उत्तर—व्यक्ति को चार पुरुषार्थों के अनुपालन में समर्थ बनाने हेतु ऋषियों ने मानव जीवन को चार आश्रमों में विभाजित किया है—

(1) ब्रह्मचर्याश्रम—इसमें व्यक्ति उपनयन संस्कार के उपरान्त प्रवेश करता था। इसमें वह शिक्षा ग्रहण करता था तथा अनुशासन सीखता था। उसे सादा जीवन उच्च विचार की धारणा का व्यवहार करना होता था। इसमें व्यक्ति 25 वर्ष की उम्र तक रहता था।

(2) गृहस्थाश्रम—इसमें रोजगार, विवाह, सन्तानोत्पत्ति, परिवार-पालन तथा सामाजिक कर्तव्यों का पालन प्रमुख था। आयु सीमा 50 वर्ष तक थी।

(3) वानप्रस्थाश्रम—इसमें व्यक्ति घर परिवार त्यागकर जंगल में जाता था, जहाँ उसे सांसा. रिक व्यापारों और रुचियों से अलग होने का अभ्यास करना होता था। आयु सीमा 75 वर्ष तक थी।

(4) संन्यास आश्रम—इसमें व्यक्ति 75 वर्ष की आयु के बाद प्रवेश करता था और समाज के सारे बंधन तोड़कर मोक्ष प्राप्ति हेतु बैरोगी का जीवन बिताता था।

प्रश्न 24. सिकन्दर के आक्रमण का भारतीय इतिहास पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—सिकन्दर के आक्रमण के बाद भारत और पश्चिमी देश काफी करीब हा गए। भारत और यूरोप के बीच एक नजदीकी व्यापार सम्बन्ध विकसित हुआ। सिकन्दर के आक्रमण ने उत्तर-पश्चिमी भारत के झगड़ालू जनजातियों पर विजय प्राप्त करके इस क्षेत्र में राजनीतिक एकता का मार्ग प्रशस्त किया। यूनानियों ने भारतीय ज्योतिष पर भी कुछ प्रभाव छोड़ा। तत्कालीन उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी भारत की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों के बारे में अनेक मूल्यवान सूचनाएँ हमें अरियान, नौसेनापति नियारकस और मेगस्थनीज यूनानियों के विवरण से मिलती है। सिकन्दर के साहसिक अभियान ने पश्चिम को भारतीय जीवन और विचारों के बारे में जानने में मदद की। यूनानी और भारतीय कला के मेल से गंधार कला स्कूल का विकास हुआ। इस संपर्क से यूरोप ने भी भारतीय दर्शन और धर्म के बारे में कुछ सीखा और ग्रहण किया। प्राचीन भारतीय इतिहास की घटनाओं को व्यवस्थित करने में सिकन्दर के आक्रमण की तिथि बहुत मददगार साबित हुई।

प्रश्न 24. मगध के महान शक्ति रूप में उदय होने के कारणों की विवेचना कीजिए।

उत्तर—छठी शताब्दी ई. पू. के दौरान मगध उत्तरी भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली राज्य बन गया। अनेक राजनीतिक, भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक कारणों ने इसके उत्थान में मदद किया—

(1) राजनीतिक—बिंबसार, अजातशत्रु और महापद्मनन्द इसके महान शासकों में से थे जिनकी साम्राज्यवादी नीति ने इसकी शक्ति को बढ़ाया।

(2) भौगोलिक—राजगीर का दुर्ग पाँच पहाड़ियों से घिरा हुआ था, जिससे आक्रमणकारियों का राजधानी में घुसना अत्यंत कठिन था। इसी तरह पाटलिपुत्र भी चारों तरफ से क्रमश: गंगा, गंडक, सोन और सरयू आदि नदियों से घिरा था।

(3) आर्थिक—मगध में उपलब्ध लोहे की खानों ने न केवल राजाओं की शक्ति बढ़ाई बल्कि कृषि का भी विकास किया। उपजाऊ मिट्टी, उष्ण जलवायु और भारी वर्षा ने फसल को और समृद्ध किया। आपस में जुड़ी नदियाँ राजमार्ग के रूप में व्यापार और वाणिज्य के लिए मददगार साबित हुईं। इनके किनारे अनेक नगर विकसित किए गए। इस तरह मगध अत्यन्त समृद्ध राज्य बन गया।

(4) सैनिक—मगध की सेना लोहे के बने हथियारों और युद्ध हाथियों के कारण बहुत शक्तिशाली बन गई थी।

(5) सामाजिक—मगध के लोगों के जातीय मिश्रण ने उन्हें गैर रूढ़िवादी बनाया, जो मगध के उत्थान का महत्वपूर्ण कारण बना।

(6) धार्मिक—जैन धर्म और बौद्ध धर्म दोनों इसी क्षेत्र में विकसित हुए, जिन्होंने लोगों के सामाजिक जीवन को बहुत प्रभावित किया।

प्रश्न 25. गुप्त साम्राज्य के पतन के कारण लिखिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-2 प्रश्न 33 (अथवा) देखें।

अथवा

प्रश्न 25. नालन्दा विश्वविद्यालय पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर—नालन्दा की प्रसिद्धि के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे—

(i) पाठ्यक्रम में धर्मनिरपेक्ष विषय सम्मिलित थे।

(ii) व्याकरण, तर्कशास्त्र, ज्ञानमीमांसा तथा विज्ञान पढ़ाये जाते थे।

(iii) विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने तथा तर्क शक्ति का विकास करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता था।

(iv) क्रियात्मक विवेचना तथा विचार-विमर्श किया जाता था।

प्रश्न 26. कलिंग युद्ध पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

अथवा

प्रश्न 26. भारतीय समाज ने विदेशियों को किस प्रकार अपनाया ?

उत्तर—कलिंग युद्ध अशोक के शासन काल की सबसे महत्वपूर्ण घटना थी। इस युद्ध में हुये नरसंहार तथा जनता के कष्ट से अशोक की अन्तरात्मा को आघात पहुँचा, जिससे उसका हृदय परिवर्तित हो गया। अशोक के तेरहवें शिलालेख से ज्ञात होता है कि अपने शासन के आठवें वर्ष उसने कलिंग पर आक्रमण किया। यह बहुत भयंकर युद्ध था। डेढ़ लाख लोग बन्दी बनाये गये और एक लाख मारे गये तथा इससे कई गुना घायल हुए। यह अनुभूति होते ही कि एक छोटे से प्रदेश को विजय करने के लिए इतने निरपराध व्यक्तियों की हत्या पर उसे पश्चाताप होने लगा। इससे अशोक के जीवन में एक नया मोड़ आया। अशोक ने देश विजय के स्थान पर धम्म (धर्म) विजय का प्रण किया। मेरी घोष (युद्ध घोष) के स्थान पर धर्म घोष प्रारंभ किया।

अथवा

उत्तर—यूनानी, शक, पार्थियन और कुषाण सभी विदेशी थे, धीरे-धीरे इनका भारतीयकरण हो गया। ये भारतीय जनता में घुल-मिल गए। भारतीय समाज ने इन्हें आत्मसात कर लिया। ये योद्धा

और विजेता थे, इसलिए स्मृतिकारों ने इन्हें क्षत्रिय वर्ण में रखा। ब्राह्मणों ने इन्हें द्वितीय श्रेणी का क्षत्रिय माना। अनेक विदेशियों ने वैष्णव सम्प्रदाय अपनाया, जबकि अन्य विदेशियों ने बौद्ध सम्प्रदाय अपनाया, क्योंकि इस धर्म में जाति की कोई समस्या नहीं थी।

प्रश्न 27. तालीकोट के युद्ध का वर्णन कीजिए।

उत्तर—तालीकोटा युद्ध विजयनगर साम्राज्य की सेना एवं बहमनी राज्य द्वारा संगठित अन्य मुस्लिम राज्यों की संयुक्त सेनाओं के बीच हुआ था। विजयनगर के मंत्री राम राय ने अहमदनगर राज्य पर आक्रमण कर लूट लिया जिससे आतंकित तथा क्रोधित होकर बीजापुर, गोलकुण्डा, अहमदनगर तथा बीदर के सुल्तानों ने विजयनगर के विरुद्ध मोर्चा बनाया और 23 जनवरी, सन् 1565 में ताल· ीकोटा के युद्ध में रामराय को पराजित किया, रामराय को पकड़कर उसका वध कर दिया गया। तालीकोटा युद्ध में विजयनगर साम्राज्य की पराजय से इस साम्राज्य का पतन आरम्भ हो गया और शीघ्र ही विजयनगर साम्राज्य का सम्पूर्ण पतन हो गया।

प्रश्न 27. कृष्णदेव राय के विजय में संक्षिप्त जानकारी दीजिए।

उत्तर—कृष्ण देवराय एक उदार तथा कल्याणकारी शासक था। उसने स्वयं 'आमुक्त माल्यद' नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखा था जिससे उसके राजत्व सिद्धान्त और राजा के कार्यों का पता चलता है। **पाएस** नामक इतालवी यात्री ने कृष्ण देवराज के व्यक्तित्व के विषय में लिखते हुए कहा है, ''वह एक महान शासक है और एक न्याय"य व्यक्ति है। उसका व्यक्तित्व महान है।''

कृष्ण देवराय एक महान विद्या प्रेमी तथा कला का संरक्षक भी था। वह एक महान निर्माता था। विजयनगर के पास उसने एक नया शहर बसाया तथा वहाँ एक भव्य तालाब का निर्माण करवाया जो सौन्दर्य वृद्धि के साथ सिंचाई के काम भी आता था। उसने अनेक भव्य मन्दिरों तथा भवनों का निर्माण करवाया। उन्हें मंडपों तथा गोपुरमों से सजाया गया। शिल्पियों तथा कलाकारों को मन्दिरों के अलंकरण तथा सजावट के लिए नियुक्त किया गया था।

प्रश्न 28. ''तैमूर के आक्रमण से दिल्ली को गहरा आघात पहुँचा।'' व्याख्या कीजिए।

उत्तर—तैमूर का आक्रमण तुगलक वंश और दिल्ली सल्तनत दोनों के लिए घातक सिद्ध हुआ। सल्तनत का विघटन पहले ही जारी था। अब पंजाब, दिल्ली सल्तनत के हाथ से निकल गया। तैमूर के प्रतिनिधि खिज्र खाँ ने दिल्ली पर अधिकार कर, सैयद वंश की नींव डाली। दिल्ली में अराजकता फैल गई। खुलेआम लूट और नरसंहार शुरू हो गया। बड़ी संख्या में लोगों को दास बनाया गया। अर्थव्यवस्था चौपट हो गई। शान छिन्न-भिन्न हो गई। तैमूर द्वारा अपार धन ले जाने से राजकोष खाली हो गया। जन-धन की बहुत हानि हुई। स्थानीय राज्यों ने नजराना देना बन्द कर दिया। अकाल और महामारी सल्तनत में फैल गई।

प्रश्न 28. सुल्तान फिरोज तुगलक के द्वारा किए गये आर्थिक सुधारों का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर—सुल्तान फिरोज तुगलक युद्ध और विजय की अपेक्षा अपनी प्रजा की भौतिक सुख-सुविधा चाहता था। कृषि विकास के लिए नहरें, तालाब, कुओं का निर्माण करवाया। इनके परिणामस्वरूप खेतों की पैदावार बढ़ी और अकाल का भय जाता रहा। भूमिकर भी निश्चित कर दिया गया। इससे किसानों को पता चल गया कि उन्हें कितना कर जमा कराना है। भूमि कर की वसूली करते

समय सख्ती नहीं बरती, उलेमाओं के परामर्श से लगान कर उपज का 1/10 भाग लगाया गया था।

उपज की बिक्री के लिए नियंत्रित बाजार स्था"त किए। सुल्तान फिरोज तुगलक ने मुद्रा में भी सुधार किए। उसने कम मूल्य के सिक्के चलाए। इससे व्यापार को प्रोत्साहन मिला। बाजार व्यवस्था नियंत्रित थी, कोई व्यापारी जनता का अनावश्यक शोषण नहीं कर सकता था।

सुल्तान मुहम्मद तुगलक की योजनाओं और प्रयोगों के कारण जिन लोगों को कष्ट पहुँचा था उन्हें फिरोज तुगलक ने राजकोष से सहायता दी और सरकारी ऋण माफ कर दिए। सुल्तान फिरोज तुगलक ने एक रोजगार कार्यालय खोला जो बेरोजगारों को रोजगार देने की व्यवस्था करता था। उसने दीवान-ए-खैरात नामक एक दान विभाग भी खोला था। यह विभाग मुसलमान विधवाओं और अनाथ बच्चों को आर्थिक सहायता देता था। इस विभाग ने निर्धन मुसलमान लड़कियों के विवाह में भी आर्थिक सहायता दी।

प्रश्न 29. खानवा युद्ध का क्या महत्व है ?

उत्तर—खानवा युद्ध ने राजपूतों के आगरा तक पहुँचने के स्वप्न को भंग कर दिया। मेवाड़ के गौरव का अन्त हो गया व राजपूत शक्ति का ह्रास हुआ। राजपूत महत्वाकांक्षी असफल हुई। अफगान शक्ति को भी गहरा धक्का लगा। इधर-उधर घूमने वाले बाबर के जीवन में स्थायित्व आया एवं वह भारत में स्थायी निवास बनाकर रहने लगा। खानवा के युद्ध के बाद ही यह स्पष्ट हुआ कि भारत में मुगल राज्य स्था"त हो चुका है।

प्रश्न 29.ताम्र पाषाणिक लोगों के जीवन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—(1) इस काल में मानव ग्रामों की स्थापना कर रहा था जिसमें सामूहिक भावना के साथ उत्पादन की सुरक्षा प्रमुख थी। यही कारण है कि वह पत्थरों तथा मिट्टी के मकान बनाने लगा था। (2) भोजन में पका मांस, पका अन्न, दूध के अतिरिक्त गेहूँ, मक्का का प्रयोग शुरू हो गया था। मछली भी भोजन का प्रमुख हिस्सा थी। मानव अग्नि का प्रयोग अपनी सुरक्षा के साथ-साथ भोजन पकाने के लिए करता था। (3) इस काल में मानव का प्रमुख व्यवसाय कृषि तथा पशुपालन हो गया था। पशुओं में गाय, बकरी, भैंस व सुअर पालते थे। कृषि उत्पादन में गेहूँ, मक्का, धान, उड़द, मूँग प्रमुख थे। कपास की खेती भी की जाती थी। (4) धातु के आविष्कार के साथ नये शिल्पों का जन्म हो चुका था। आभूषण, बर्तन, खिलौने तथा औजार इन धातुओं से बनने लगे थे। इस काल के लोग स्वर्ण धातु से भी परिचित हो चुके थे। स्वर्ण का प्रयोग आभूषणों में होता था।

प्रश्न 30. ''हुमायूँ जीवनभर ठोकरें खाता रहा और उसने ठोकर खाकर ही अपने जीवन का अन्त किया।'' स्पष्ट कीजिए।

उत्तर—इतिहासकार लेनपूल का यह कथन सत्य है कि हुमायूँ जीवनभर ठोकरें खाता रहा और उसने ठोकर खाकर ही जीवन का अन्त किया। वास्तव में हुमायूँ का अर्थ होता है भाग्यवान किन्तु हुमायूँ अपने नाम के अनुसार भाग्यवान न था। बादशाह बनते ही उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा तथा अनेक कठिनाइयों को उसने अपनी भूलों से जन्म दिया। हुमायूँ कठिनाइयों का समाधान करते-करते समस्याओं और दुर्बलताओं में धंसता गया। सन् 1540 में हुमायूँ को अपना भारतीय साम्राज्य छोड़ना पड़ा और वह इधर-उधर भटकता रहा। सन् 1555 ई. में उसने पुन: भारतीय साम्राज्य प्राप्त किया किन्तु वह उसका सुख नहीं भोग सका। 1556 ई. में पुस्तकालय की सीढ़ियों

से ठोकर खाकर गिरने से उसकी मृत्यु हो गई।

प्रश्न 30.''अकबर ही मुगल वंश का प्रथम शासक था जिसने भारतीय एकता व साम्प्रदायिक सद्भाव की दृढ़ नींव रखी।'' सिद्ध करो।

उत्तर—अकबर के काल में हिन्दू-मुस्लिम संस्कृतियों का समन्वय तथा एकता का विकास हुआ। उसने अपने कार्यों व नीतियों से एक सुव्यवस्थित शासन की स्थापना की। मुगल साम्राज्य को सुसंगठित किया तथा एक लम्बी अवधि तक शासन करने में सफल रहा। उसने विशाल मुगल साम्राज्य की स्थापना की तथा लोककल्याणकारी शासनतंत्र स्था"त किया। इसलिए उसे एक राष्ट्रीय शासक कहा जाता है और मुगल वंश का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। अकबर ने प्रशासन में योग्यता के आधार पर हिन्दू व मुस्लिम सभी को नियुक्त किया, उसने राजपूतों से वैवाहिक सम्बन्ध स्था"त कर अपने महल में हिन्दू रानियों को भी पूरी धार्मिक स्वतंत्रता दी, अकबर ने भेदभावपूर्ण जजिया कर एवं तीर्थयात्रा कर समाप्त कर दिए जिससे एक अभूतपूर्व साम्प्रदायिक सद्भाव स्था"त हुआ।

प्रश्न 31. बहमनी राज्य के पतन के कोई तीन कारण लिखिए।

उत्तर—बहमनी राज्य के पतन के कारण निम्नलिखित थे—

(i) दो सौ वर्षों के राज्य पश्चात् बहमनी राज्य का पतन होना शुरू हो गया। शासक सुरासुन्दरी में लिप्त हो गये।

(ii) राज्य में अमीरों के पारस्परिक वैमनस्य और संघर्ष से, गृहयुद्ध और षड्यन्त्रों से प्रशासकीय व्यवस्था सुचारु और व्यवस्थित न बन सकी और राज्य की शक्ति क्षीण हो गयी।

(iii) सुल्तानों के विलास"यता, अयोग्यता और प्रतिभाहीनता से तथा अमीरों के संघर्षों से राज्य में अराजकता और अव्यवस्था फैल गयी।

प्रश्न 31. मनसबदारी व्यवस्था से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-1 प्रश्न 28 (अथवा) देखें।

प्रश्न 32. ''गुप्तकाल को भारतीय इतिहास में स्वर्णयुग कहा गया है।''

उत्तर—गुप्तकाल को स्वर्ण युग कहे जाने के निम्नलिखित कारण हैं—

1. महान सम्राटों का युग—इस युग में समुद्रगुप्त एवं चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य जैसे महान प्रतापी सम्राट हुए जिन्होंने देश की बाह्य आक्रमणों से रक्षा करके आन्तरिक शान्ति स्था"त की। इन्होंने विदेशों से भी मधुर सम्बन्ध स्था"त किये।

2. राजनीतिक एकता एवं शान्ति व्यवस्था का युग—इस युग के राजाओं ने उत्तर से दक्षिण तक के राज्यों को जीतकर राजनीतिक एकता सुदृढ़ की। इस काल में पूर्ण शान्ति एवं व्यवस्था थी, जिसके कारण जनता को अपने विकास का पूरा अवसर तथा सुविधाएँ प्राप्त हुईं।

3. धार्मिक सहिष्णुता एवं स्वतंत्रता का युग—इस युग में शासक हिन्दू थे लेकिन धर्म के नाम पर कोई अत्याचार नहीं किया गया। राज्य की ओर से किसी धर्म पर प्रतिबंध नहीं था।

4. कला की उन्नति का युग—गुप्त काल में कला का अत्यधिक विकास हुआ। मूर्तिकला, चित्रकला, स्थापत्यकला, संगीत कला आदि सभी रूपों का बहुमुखी विकास हुआ।

5. साहित्य की उन्नति का युग—गुप्त सम्राट स्वयं विद्यानुरागी थे। इस युग में कालीदास, भारवि, शूद्रक, बराहमिहिर, सुबन्धु जैसे साहित्यकार हुए।

6. विज्ञान की उन्नति का युग—इस युग में गणित, ज्योतिष, रसायन, धातु विज्ञान आदि की आश्चर्यजनक उन्नति हुई। इसी युग में दशमलव पद्धति की खोज हुई।

प्रश्न 32. फाह्यान कौन था ? उसने भारतीय समाज, धर्म, राजनीति तथा आर्थिक जीवन के विषय में क्या लिखा ? संक्षेप में लिखो।

उत्तर—फाह्यान एक चीनी यात्री था। वह चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासन काल में भारत आया। भारत में वह बौद्ध तीर्थों की यात्रा व धार्मिक ग्रन्थों का अध्ययन करने के लिए आया था। वह 6 वर्षों तक भारत में रहा, उसने उस समय की राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक जीवन का अच्छा वर्णन किया है जो निम्नलिखित हैं—

1. सामाजिक जीवन—लोग सुखी तथा उच्च विचारों के थे तथा मांस-मदिरा आदि का सेवन नहीं करते थे। चाण्डाल मद्यपान तथा मांस भक्षण करते थे, अत: वे नगर के बाहर रहते थे।

2. धार्मिक जीवन—इस युग में ब्राह्मण धर्म धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था और बौद्ध धर्म का पतन हो रहा था, परन्तु देश में धार्मिक सहनशीलता थी। अन्य धर्मों से किसी प्रकार का दुर्व्यवहार नहीं किया जाता था।

3. राजनैतिक व्यवस्था—राजा का पद पैतृक होता था। वह सारी शक्तियाँ अपने पास रखता था फिर भी अपनी सलाह के लिए मंत्रियों की परिषद बना रखी थी। आय का मुख्य स्रोत भूमि कर था। नृशंस अपराधों पर हाथ-पाँव आदि काट दिये जाते थे। चोर-डाकुओं का भय नहीं था।

4. आर्थिक जीवन—फाह्यान के अनुसार देश समृद्ध था। लोगों के दान से अनेक अस्पताल व सरायें चलती थीं। देश के भीतर और विदेशों से व्यापार होता था। कृषि उन्नत अवस्था में थी।

प्रश्न 33. मुहम्मद बिन तुगलक के राजधानी परिवर्तन और सांकेतिक मुद्रा एवं उसके प्रचलन के कारणों एवं परिणामों की विवेचना कीजिए।

उत्तर—सुल्तान के अनेक कारणों से राजधानी बदली थी जो निम्न हैं—

(i) दक्षिण के अराजकतापूर्ण क्षेत्र पर नियन्त्रण स्था"त करना। (ii) राजधानी का साम्राज्य के केन्द्र में स्थित होना। (iii) साम्राज्य की मंगोल आक्रमणों से रक्षा। (iv) दक्षिण भारत में मुस्लिम संस्कृति फैलाना मुख्य कारण थे।

सुल्तान की यह योजना असफल रही परन्तु इसके परिणाम दूरगामी हुए। इसके फलस्वरूप सल्तनत के सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक विचार दक्षिण में फैले और उत्तर तथा दक्षिण में सांस्कृतिक आदान-प्रदान शुरू हुआ।

सुल्तान द्वारा सांकेतिक मुद्रा के प्रचलन का कारण संसार में चाँदी की कमी होना था और भारत में भी चाँदी की कमी हो चली थी। इसलिए मुहम्मद तुगलक ने चाँदी के सिक्कों के स्थान पर ताँबे के सिक्के चलाए और जनता से अपेक्षा की कि वे इन्हें टका के रूप में स्वीकार करें। इन सिक्कों की नकल सामान्य कलाकार सरलता से कर लेता था। फलस्वरूप लोग घरों में सांकेतिक मुद्रा बनाने लगे जिससे बाजार में नकली सिक्कों की अधिकता हो गई और संतुलन बिगड़ गया। अन्त में सुल्तान ने सांकेतिक मुद्रा को समाप्त करने का निर्णय लिया। इस तरह उसका यह प्रयोग असफल रहा। इससे व्यापार मुख्यतया विदेशी व्यापार को बहुत हानि पहुँची।

प्रश्न 33. अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नियंत्रण व्यवस्था क्या थी ?

उत्तर— अलाउद्दीन खिलजी की बाजार नियन्त्रण व्यवस्था

बाजार नियंत्रण—अलाउद्दीन खिलजी का सबसे महत्वपूर्ण सुधार बाजार नियंत्रण था। अलाउद्दीन खिलजी को मंगोल आक्रमणों का सामना करने, निरन्तर विजय प्राप्त करने और षणयन्त्रकारी अमीरों के विद्रोह दमन करने के लिए विशाल सेना की आवश्यकता थी। राजकोष खाली न हो जाए इसलिए उसने सैनिकों को कम वेतन देने का निश्चय किया। इसलिए उसने दैनिक प्रयोग की वस्तुओं के मूल्य कम करने के साथ निश्चित भी कर दिए। इस प्रकार सैनिकों की क्रयशक्ति बढ़ गई और वे आर्थिक संकट के शिकार होने से बचे रहे।

मूल्य नियंत्रण करने के लिए अलाउद्दीन ने वस्तुओं की एक विस्तृत सूची निकाली। इस सूची में अनाज (खाद्यान्न), रोटी, सब्जी, कपड़ा, पशु, बोझा ढोने वाले पशु, घोड़े, दास, दैनिक प्रयोग की वस्तुएँ शामिल थीं। उसने विभिन्न वस्तुओं के लिए तीन बाजार अलग-अलग बनाए। ये बाजार थे—अनाज मण्डी, कपड़ा, बाजार (सरायअदल) और घोड़े, दास और पशु बाजार।

व्यापक मूल्य नियंत्रण के लिए अधिक सतर्कता की आवश्यकता थी। इसी उद्देश्य से अलाउद्दीन ने समस्त बाजार का उत्तरदायित्व शाहने मण्डी (बाजार अधीक्षक) को सौंप रखा था। उसने मान-सम्मान के अनुरूप उसे इक्ता दी गई और घुड़सवार तथा पैदल सैनिक रखने का अधिकार दिया गया। उसकी सहायता के लिए नायक शाहना या सहायक नियुक्त किया गया। शाहने मण्डी के अतिरिक्त अलाउद्दीन भी दो सूत्रों—बरीद (सतर्कता अधिकारी) और मुनिहार (गुप्तचर) से मण्डियों का दैनिक विवरण प्राप्त करता था।

अलाउद्दीन ने पूर्ण रूप से समझ लिया था कि वस्तुओं के मूल्य तभी स्थिर रह सकते हैं जब बाजार में वस्तुओं की पूर्ति निरन्तर होती रहे। इस संदर्भ में उसने अनेक कदम उठाए। उसने आदेश दिया कि खालसा भूमि और दोआब क्षेत्र से वसूल किए जाने वाले भूमिकर उपज के आधे के बराबर अनाज के रूप में एकत्र किया जाए। यह एकत्र किया अनाज अधिकृत व्यापारियों (बंजारों) द्वारा दिल्ली पहुँचाया जाए। अनाज सरकारी गोदामों (अनाज भंडारों) में एकत्र किया जाता था। व्यापारियों द्वारा की जाने वाली कालाबाजारी रोकने के लिए अनाज व्यापारियों पर नियंत्रण रखा जाता और सतर्कता बरती जाती थी। बरनी का कथन है कि सल्तनत के विभिन्न भागों के अनाज व्यापारियों को शाहने मण्डली के पास अपना पंजीकरण करना होता था। अनाज बेचने वालों के नेता मुक्कद्दम को हस्ताक्षर कर एक दस्तावेज देना होता था कि वह दिल्ली में अनाज की पूर्ति नियमित रूप से करेंगे और निश्चित मूल्य पर बेचेंगे। उन्हें अपने परिवार सहित यमुना नदी के समीप रहना होता था क्योंकि यह क्षेत्र प्रत्यक्ष रूप में नियन्त्रण के अधीन ही था।

किसान अनाज की जमाखोरी न करे इसलिए खेत से अनाज को घर ले जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिए गए थे। उन्हें अपना अनाज खेत पर ही निर्धारित मूल्य पर अधिकृत व्यापारियों को बेचना होता था। इसकी देख-रेख करने का उत्तरदायित्व राजस्व अधिकारी का था।

कपड़ा बाजार या बराय आदिल की प्रशासनिक व्यवस्था खाद्यान्न मण्डली के मूल्य नियन्त्रण की भाँति थी। कपड़ा बाजार को नियन्त्रित करने के लिए देवगिरि और मुल्तान जैसे दूरदराज के उत्पादकों को वह निर्धारित मूल्य पर कपड़ा व्यापारियों को बेचने के लिए विवश नहीं कर सका। इन कठिनाइयों से निपटने के लिए उसने मुल्तानी व्यापारियों को कपड़ा बाजार का उत्तरदायित्व सौंप दिया। राज्य की ओर से व्यापारियों को 20 लाख टके तक के ऋण दिए गए जिससे वे साम्राज्य के विभिन्न

भागों से कपड़ा खरीदकर सराय में निर्धारित मूल्य पर बेच सकें। इस प्रकार अलाउद्दीन खिलजी ने दूर-दराज के विभिन्न केन्द्रों से स्थानीय मूल्य पर कपड़ा खरीदकर पूर्ति को नियन्त्रित बनाए रखा।

अलाउद्दीन खिलजी ने घोड़ों के व्यापारियों और दलालों पर दिल्ली के बाजार में घोड़े खरीदने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इस प्रकार उसने घोड़ों का मूल्य बाजार में कम कर दिया। मुख्य दलालों को दिल्ली से निकाल दिया गया। इस प्रतिबन्ध से घोड़ों के व्यापारी तबाह हो गए। यह कहना अनुचित नहीं होगा कि समस्त व्यापारी वर्ग समाप्त हो गया।

बाजार नियन्त्रण किस-किस क्षेत्र में लागू किया गया था। इस सम्बन्ध में इतिहासकार एक मत नहीं है। स्पष्ट है कि बाजार नियन्त्रण केवल दिल्ली में लागू था यह अन्य शहरों में भी लागू था।

प्रश्न 34. विजयनगर साम्राज्य की शासन व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

उत्तर—राजा की सहायता के लिए एक राजपरिषद् होती थी जो सत्ता को नियन्त्रित करने में भी अहम् भूमिका निभाती थी और निरंकुश राजा को सलाह भी देती थी।

राज्य के प्रान्तों को मंडल कहा जाता था। जिलों को कोट्टम या नाडू, तहसील को स्थल और गाँव को उर कहा जाता था। नायक भू-सामंत थे, जिन्हें राजा सेना के रख-रखाव हेतु विशेष भूखण्ड देता था, जो अमरम कहा जाता था। अमरनायक प्रान्तीय गवर्नर, प्रान्तीय गवर्नर से भिन्न थे। प्रान्तपति राजा का प्रतिनिधित्व होता था और नायक केवल एक सैनिक सामन्त।

प्रश्न 34. बहमनी साम्राज्य के पतन के कारण बताइये।

उत्तर—बहमनी राज्य के पतन के कारण निम्नलिखित थे—

(i) दो सौ वर्षों के राज्य के पश्चात् बहमनी राज्य का पतन होना शुरू हो गया। शासक सुरासुन्दरी में लिप्त हो गये।

(ii) राज्य में अमीरों के पारस्परिक वैमनस्य और संघर्ष से, गृहयुद्ध और षड्यन्त्रों से प्रशासकीय व्यवस्था सुचारु और व्यवस्थित न बन सकी और राज्य की शक्ति क्षीण हो गयी।

(iii) सुल्तानों के विलास"यता, अयोग्यता और प्रतिभाहीनता से तथा अमीरों के संघर्षों से राज्य में अराजकता और अव्यवस्था फैल गयी।

प्रश्न 35. रजिया के पतन का कारण उसका स्त्री होना था। समझाइए।

उत्तर—रजिया के लिए सिंहासन एक समस्या सिद्ध हुआ। उसके भाइयों के साथ-साथ अमीरों का एक वर्ग भी उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रच रहा था। रजिया ने बुद्धिमत्तापूर्वक स्थिति को संभाला। उसने अनुभव कर लिया था कि चहलगामी सरदार बहुत शक्तिशाली हो गए थे। उसने जान-बूझकर गैर तुर्की को प्रशासन के ऊँचे पद दिए। उसने अपनी राजनीतिक सूझ-बूझ का परिचय उस समय दिया जब उसने निर्बल ख्वारिज्म साम्राज्य के साथ मंगोलों के विरुद्ध सन्धि को अस्वीकार कर दिया। रजिया एक शक्तिशाली यथार्थवादी शासक थी। वह प्रत्यक्ष रूप में शासन कार्य करने लगी। वह स्वयं दरबार लगाती और सेना का संचालन करती थी। अमीरों ने भी अनुभव कर लिया था कि रजिया स्त्री होने पर भी उसके हाथ की कठपुतली नहीं बनेगी। अमीरों ने प्रान्तों में विद्रोह करने शुरू कर दिए क्योंकि वे जानते थे कि वह गैर तुर्कों को उच्च पद दे रही थी और उसे दिल्ली की जनता का समर्थन प्राप्त था। उन्होंने आरोप लगाया कि वह याकूबखां नामक अबेसीनीयाई सरदार से मित्रता कर रही थी। रजिया वीरतापूर्वक लड़ी परन्तु पराजित हुई और बाद में मारी गयी।

प्रश्न 35. "पानीपत के प्रथम युद्ध को संक्षिप्त में समझाइये।

उत्तर—पानीपत का प्रथम युद्ध (1526 ई.)—बाबर ने 1526 ई. में 25,000 सैन्य बल के साथ पंजाब पर प्रथम आक्रमण कर दिया विशाल सेना के सामने दौलत खां पराजित हुआ। पंजाब को बाबर ने छीन लिया। पंजाब विजय के बाद निगाहें दिल्ली की ओर गड़ाईं। दिल्ली का सुल्तान इब्राहीम लोदी एक बड़ी सेना के साथ बाबर का सामना करने पानीपत मैदान में पहुँचा। बाबर तोपखाना था उसकी सेना में 12,000 कुशल सैनिक थे। बाबर की तोपचियों एवं घुड़सवारों के सामने इब्राहीम टिक नहीं पाया।

इब्राहीम एक अनुभवहीन और लापरवाह व्यक्ति था। वह बिना तैयारी के आगे बढ़ता और बिना सोचे-विचारे युद्ध से हट जाता था। बाबर बारूद और तोपखाने का प्रयोग 12 वर्ष की आयु से करता आ रहा था जिसके कारण वह तुलुगमा नीति से भली-भाँति परिचित था। इस तरह बाबर को जीत और इब्राहीम की हार हुई।

पानीपत युद्ध के परिणाम

1. साम्राज्य विस्तार—पानीपत का युद्ध 1526 ई. ने भारत में मुगल साम्राज्य के नींव पत्थर साबित हुआ अर्थात् मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई। लोदी वंश की सत्ता नष्ट कर दी, दिल्ली से आगरा का साम्राज्य बाबर के हाथों में आया। इब्राहीम लोदी के आगरा के खजाने पर बाबर का अधिकार हो गया। बाबर धन से मालामाल हो गया।

2. बाबर मुगल साम्राज्य के संस्थापक—पानीपत युद्ध के बाद भारत में बाबर का आधिपत्य के लिए बाबर का नया संघर्ष शुरू हुआ एवं मुगल साम्राज्य की स्थापना के लिए मार्ग प्रशस्त हो गया।

3. बाबर के सैनिक उसके साथ जी जान से लड़ाई में साथ देते रहे, सैनिक के अनजाने भारत में लड़ते-लड़ते पक चुके इसलिए विश्राम व आराम चाहते थे और अपने-अपने घर लौटना चाहते थे। बाबर को भारत में रहने की इच्छा जागी और यहाँ बस गये जो सैनिक अपने घर लौटना चाहते थे उसे लौटने की अनुमति दे दी।

प्रश्न 36. औरंगजेब की हिन्दू विरोधी नीति को संक्षिप्त में समझाइये।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-4 प्रश्न 35 (अथवा) देखें।

प्रश्न 36. 'दीन-ए-इलाही' से आप क्या समझते हैं ?

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-2 प्रश्न 29 (अथ्वा) देखें।

प्रश्न 37. अकबर की वास्तुकला का सविस्तार वर्णन कीजिए।

उत्तर—अकबर स्थापत्य कला का बड़ा शौकीन था, उसके समय में हिन्दू-मुस्लिम मिश्रित कला को जन्म मिला। उसके शासन काल में आगरा, फतेहपुरसीकरी, दिल्ली, लाहौर, इलाहाबाद तथा कटक में विशाल तथा ऊँचे भवनों का निर्माण करवाया। हुमायूं का मकबरा उसके द्वारा निर्मित इमारतों में एक है। इसमें संगमरमर के साथ लाल पत्थरों का प्रयोग किया गया है। आगरा का किला भी अकबर द्वारा निर्मित है। उसके भीतर की दीवाने आम, दीवाने खास, अकबरी महल, जहांगीर महल बहुत प्रसिद्ध हैं। फतेहपुरसीकरी में अकबर की स्थापत्य कला को निखार मिला है।

प्रश्न 37. मुगलों के समय हुए साहित्य के विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर—साहित्य—अकबर के शासन काल में हिन्दी व फारसी साहित्य की बहुत उन्नति

हुई। बाबर ने तुज्क-ए-बाबरी, हुमायूँ की बहन गुलबदन बेगम ने हुमायूँनामा, अबुलफजल ने आइने अकबरी, अब्दुल हमीद लाहोरी ने शाहजहाँनामा आदि की रचना की। सूरदास और कवि जायसी हिन्दी साहित्य के लिए प्रसिद्ध थे। तुलसीदास ने रामचरितमानस की रचना की। उर्दू साहित्य में मशहूर साहित्यकार कवि मजहर, सौदा आदि थे।

प्रश्न 38. चौरी-चौरा काण्ड और आन्दोलन के स्थगन को समझाइये।

उत्तर—जब असहयोग आन्दोलन अपनी पूर्ण गति से चल रहा था तभी अचानक एक घटना से सारा दृश्य बदल गया। 5 फरवरी, 1922 ई. को गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा गाँव में कांग्रेस का जुलूस निकल रहा था। जुलूस में सम्मिलित कुछ लोगों के साथ पुलिस ने दुव्यर्वहार किया पर जनता उत्तेजित हो गयी और थाने में आग लगा दी गई, जिसमें थानेदार सहित 29 पुलिस के सिपाही जल कर मर गये। गाँधीजी अहिंसात्मक आन्दोलन में विश्वास करते थे अत: उन्होंने तत्काल आन्दोलन को स्थगित कर दिया। इससे गाँधीजी की बड़ी आलोचना हुई। मोतीलाल नेहरू के अनुसार, किसी एक स्थान के पाप के कारण सारे देश को दण्ड देना उचित नहीं था। ब्रिटिश सरकार ने परिस्थिति का लाभ उठाकर गाँधीजी को गिरफ्तार करके छ: वर्ष के कारावास का दण्ड दिया।

प्रश्न 38. भारत छोड़ो आन्दोलन की विवेचना करते हुए कारण बताइये। (कोई 6)

उत्तर—भारत छोड़ो आन्दोलन चलाये जाने के निम्नलिखित कारण थे—

1. क्रिप्स मिशन से निराशा—भारतीयों के मन में यह बात बैठ गई थी कि क्रिप्स मिशन अंग्रेजों की एक चाल थी जो भारतीयों को धोखे में रखने के लिए चली गई थी। क्रिप्स मिशन की असफलता के कारण उसे वापस बुला लिया गया था।

2. बर्मा में भारतीयों पर अत्याचार—बर्मा में भारतीयों के साथ किये गए दुव्यर्वहार से भारतीयों के मन में आन्दोलन प्रारम्भ करने की तीव्र भावना जाग्रत हुई।

3. ब्रिटिश सरकार की घोषणा—27 जुलाई, 1942 ई. को ब्रिटिश सरकार ने एक घोषण ाा जारी कर यह कहा कि कांग्रेस की माँग स्वीकार की गई तो उससे भारत में रहने वाले मुस्लिम तथा अछूत जनता के ऊपर हिन्दुओं का आधिपत्य हो जाएगा। इस नीति के कारण भी आन्दोलन आवश्यक हो गया।

4. द्वितीय विश्व युद्ध के लक्ष्य की घोषणा—ब्रिटिश सरकार भारतीयों को भी द्वितीय विश्वयुद्ध की लड़ाई में सम्मिलित कर चुकी थी, परन्तु अपना स्पष्ट लक्ष्य घोषित नहीं कर रही थी। यदि स्वतन्त्रता एवं समानता के लिए युद्ध हो रहा है तो भारत को भी स्वतन्त्रता एवं आत्म-निर्णय का अधिकार क्यों नहीं दिया जाता ?

5. आर्थिक दुर्दशा—अंग्रेजी सरकार की नीतियों से भारत की आर्थिक स्थिति अत्यन्त खराब हो गई थी और दिनों-दिन स्थिति बदतर होती जा रही थी।

6. जापानी आक्रमण का भय—द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापानी सेना रंगून तक पहुँच चुकी थी, लगता था कि वे भारत पर भी आक्रमण करेंगी। भारतीयों के मन में यह बात आई कि अंग्रेज जापानी सेना का सामना नहीं कर सकेंगे।

❑

सॉल्वड पेपर

छत्तीसगढ़ राज्य ओपन स्कूल परीक्षा

कक्षा 12

विषय : इतिहास

सेट—5 (दिसम्बर, 2012)

समय : 3 घण्टे] **[पूर्णांक : 100**

नोट—सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है।

निर्देश—(1) प्रश्न क्रमांक 1 से 22 तक बहुविकल्पीय प्रश्न एवं खाली स्थान भरिए। प्रत्येक प्रश्न पर एक अंक निर्धारित है।

नोट—एक शब्द में उत्तर दीजिए—

प्रश्न 1. ताम्रपाषाणिक काल के औजार किस धातु के बने होते थे ?

उत्तर—ताम्रपाषाणिक काल के औजार ताँबा धातु के बने होते थे।

प्रश्न 2. उत्तर वैदिक काल में शुरू की गई नयी फसल के नाम लिखिए।

उत्तर—चावल।

प्रश्न 3. वर्धमान महावीर का जन्म कहाँ हुआ था ?

उत्तर—वर्धमान महावीर का जन्म उत्तरी बिहार में वैशाली के निकट कुण्डग्राम में हुआ था।

प्रश्न 4. पाटलिपुत्र कौन-कौन सी तीन नदियों के संगम पर स्थित है ?

उत्तर—गंगा, गंडक और सोन नदी।

प्रश्न 5. बौद्ध धर्म में दीक्षा लेने से पूर्व कनिष्क किसका उपासक था ?

उत्तर—शिव का उपासक था।

प्रश्न 6. बुक्काराम गद्दी पर कब बैठा ?

उत्तर—

प्रश्न 7. समुद्रगुप्त को संगीत में रुचि थी, वह किस वाद्य यंत्र का सिद्धहस्त कलाकार था ?

उत्तर—वीणा।

प्रश्न 8. कन्नौज सभा की अध्यक्षता किसने की थी ?

उत्तर—ह्यून-सांग।

प्रश्न 9. विजयनगर राज्य के संस्थापक कौन-कौन थे ?

उत्तर—हरिहर और बुक्का।

प्रश्न 10. गोविन्दसिंह सिक्खों के कौन-से गुरु थे ?

उत्तर—दसवें।

प्रश्न 11. बाजार नियन्त्रण किस शासक ने प्रारम्भ किया था ?

उत्तर—अलाउद्दीन खिलजी।

नोट—रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

प्रश्न 12. फाह्यान एक..............यात्री था। (चीन का, श्रीलंका का)

उत्तर—चीन का।

प्रश्न 13. समुद्रगुप्त के दरबारी कवि..............थे। (कालीदास, सूरदास)

उत्तर—कालीदास।

प्रश्न 14. पल्लवों की राजधानी................थी। (कांचीपुरम, महाबलीपुरम)

उत्तर—कांचीपुरम।

प्रश्न 15. गुप्त वंश की स्थापना.................ने की थी। (समुद्रगुप्त, श्रीगुप्त)

उत्तर—श्रीगुप्त।

प्रश्न 16. तराइन का प्रथम युद्ध................सन् में हुआ था। (1111 ई., 1119 ई.)

उत्तर—1191.

प्रश्न 17. अलाउद्दीन ने...................राजस्व सिद्धान्त को अपनाया था। (बलबन, फिरोज)

उत्तर—बलवन

प्रश्न 18. मथुरा शैली में...............की मूर्तियाँ बनी थीं। (लाल रेतीले पत्थर, संगमरमर)

उत्तर—लाल रेतीले पत्थर

प्रश्न 19. इबादत खाना की स्थापना.............ने की थी। (जहाँगीर, अकबर)

उत्तर—अकबर

प्रश्न 20. शिवाजी का राज्याभिषेक...............में हुआ था। (रायगढ़, पूना)

उत्तर—रायगढ़।

प्रश्न 21. जजिया कर...............से लिया जाता था। (मुस्लिमों से, हिन्दुओं से)

उत्तर—हिन्दुओं।

प्रश्न 22. मराठा एवं केसरी समाचार-पत्र...............के द्वारा सम्पादित किए गए थे। (लाला लाजपत राय, बालगंगाधर तिलक)

उत्तर—बाल गंगाधर तिलक।

नोट—प्रश्न क्रमांक 23 से 31 तक के प्रश्न लघु उत्तरीय हैं। प्रत्येक प्रश्न पर चार (4) अंक एवं विकल्प हैं। (उत्तर की अधिकतम शब्द सीमा 75 शब्द है)

प्रश्न 23. आश्रम व्यवस्था का विवरण दीजिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-3 प्रश्न 23 (अथवा) देखें।

प्रश्न 23. उत्तर वैदिक सभ्यता के आर्थिक जीवन पर प्रकाश डालिए।

उत्तर—उत्तर वैदिककालीन लोगों का आर्थिक जीवन निम्न प्रकार है—

(i) कृषि—इस काल के लोगों का प्रमुख व्यवसाय कृषि था। खेती के तरीकों में परिवर्तन किया गया। हल का प्रयोग किया जाता था जिसे 20 से 30 बैलों में बाँधकर हल चलाया जाता था। इस समय की प्रमुख फसल गेहूँ, चावल व जौ थी।

(ii) पशुपालन—इस काल में जानवरों के लिए पशुशालाएँ बनायी जाती थीं। यह पशुओं की जंगली जानवरों से रक्षा के लिए तथा उन्हें सर्दी, गर्मी, शरद् ऋतु से बचाने के लिए बनायी जाती थी। गाय की पूजा की जाती थी। अथर्ववेद के अनुसार उस व्यक्ति को मृत्युदण्ड दिया जाता था जो गाय का वध करता था।

(iii) उद्योग एवं व्यवसाय—उत्तर वैदिक काल तक कृषि एवं पशुपालन के अतिरिक्त अनेक व्यवसायों की उत्पत्ति हो चुकी थी। लोहे की खोज और मुख्य व्यवसाय के रूप में खेती करना, उत्तर वैदिक काल के महत्वपूर्ण पहलू थे। अनेक नई कलाएँ और शिल्प पूर्णकालिक व्यवसायों के रूप में अपनाये गये। इस समय आन्तरिक और बाह्य दोनों तरह का व्यापार फला-फूला।

प्रश्न 24. बौद्ध धर्म के पतन के किन्हीं चार कारणों की विवेचना कीजिए।

उत्तर—भारत के वृहत् क्षेत्र में प्रसारित बौद्ध धर्म में निम्न चार कारणों से पतन होने लगा—

(1) बौद्ध धर्म में विभाजन—बौद्ध भिक्षुओं में वैचारिक मतभेद, मनभेद में बदल गया।

(2) भिक्षुओं के चरित्र में गिरावट—मठों में विलासीपूर्ण जीवनयापन प्रारम्भ कर दिया। अहंकार में डूबकर वे जन-जीवन की मुख्य धारा से हट गये।

(3) राजकीय संरक्षण की कमी—कनिष्क की मृत्यु के पश्चात् बौद्ध धर्म को राजकीय संरक्षण लगभग समाप्त ही हो गया।

(4) नेतृत्व का अभाव—गौतम बुद्ध के निर्वाण के बाद उनके गतिशील कार्यक्रमों को प्रचलित करने वाले योग्य नेतृत्व का अभाव भी बौद्ध धर्म के पतन का कारण बना।

प्रश्न 24. जैन धर्म के सिद्धान्तों की विवेचना कीजिए।

उत्तर—जैन धर्म के सिद्धान्त—महावीर स्वामी ने जिन सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया वे जैन धर्म के सिद्धान्त कहलाये। जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक वस्तु में आत्मा होती है न केवल पशु-पक्षियों में बल्कि पौधों, धातुओं, खनिजों, पत्थरों और जल की भी आत्मा होती है। उनकी मान्यता है कि पत्थर तक को कष्ट होता है। जैन धर्म अच्छे व्यवहार और नैतिकता पर बल देता है। यह व्यवहार के पाँच नियम नियम बनाता है जिसे पंच महाव्रत कहते हैं।

(i) अहिंसा, (ii) सत्य वचन, (iii) अस्तेय, (iv) अपरिग्रह, (v) ब्रह्मचर्य।

जैन कर्म और पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं। जैन धर्म के अनुसार जीवन का उच्चतम लक्ष्य मोक्ष या जीवन-मरण के बंधन से छुटकारा है और यह मोक्ष त्रिरत्नों यानी उचित विश्वास, उचित ज्ञान और उचित व्यवहार के द्वारा किया जा सकता है। महावीर ने अपने अनुयायियों को संयमी जीवन व्यतीत करने को कहा।

प्रश्न 25. गुप्तों के पतन के कारणों की विवेचना कीजिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-2 प्रश्न-33 (अथवा) देखें।

प्रश्न 25."नालन्दा विद्या का केन्द्र था।" विवेचना कीजिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-3 प्रश्न 25 देखें।

प्रश्न 26. उन आर्थिक नियन्त्रणों की व्याख्या कीजिए जिन्हें मौर्य शासन काल ने अपनाया था।

उत्तर—समस्त मौर्य साम्राज्य शासन व्यवस्था का आधार सुदृढ़ राजस्व व्यवस्था थी। राज्य की आय का मुख्य स्रोत भूमिकर (लगान) था। यद्य" लगान कुल उत्पादन के 1/4 से 1/6 तक था तथा" युद्ध की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए किसानों को विवश किया जाता था कि वे अधिक उत्पादन करें। राज्य ने भी भूमि के एक बड़े भाग पर खेती कराई। यह भी आय का एक अच्छा साधन बन गया।

वित्तीय स्थिरता का अन्य कारण था कि सभी आर्थिक गतिविधियों पर राज्य का नियन्त्रण था। खानों, नमक भण्डार, शराब, वन, चुंगी आदि पर राज्य का एकाधिकार था। राज्य ने शिल्पों को प्रोत्साहन दिया था। वास्तव में दण्ड विधान ऐसा था कि यदि कोई कलाकार को जख्मी करता था या वस्तु का नाम बदलकर बेचता तो मृत्यु दण्ड दिया जाता था। राज्य को जुर्मानों से भी आय होती थी।

प्रश्न 26. हुमायूँ की असफलता के कारणों की विवेचना करो।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-2 के प्रश्न-34 (अथवा) देखें।

प्रश्न 27. अलाउद्दीन के शासनकाल में मंगोल आक्रमण का वर्णन कीजिए।

उत्तर—1303 ई. में मंगोलों का चौथा आक्रमण उस समय हुआ जब सुल्तान अलाउद्दीन चित्तौड़ के विरुद्ध युद्ध में व्यस्त था। तराई के अधनी 1200 मंगोल सैनिक दिल्ली के निकट आये और उन्होंने डेरा डाल दिया। उनका आक्रमण इतना आकस्मिक था कि प्रान्तीय हाकिम अपनी सेनाएँ लेकर दिल्ली नहीं जा सके और अलाउद्दीन को सोरी के किले में शरण लेनी पड़ी। मंगोल ने किले को दो माह तक घेर रखा तथा दिल्ली और आस-पास के क्षेत्र को खूब लूटा। उन्हें अधिक समय तक जमकर युद्ध करने का अनुभव नहीं था इसलिए वे तीन माह बाद वापस चले गये।

प्रश्न 27. तराइन के द्वितीय युद्ध को संक्षेप में बताइए।

उत्तर—तराइन के द्वितीय युद्ध 1192 ई. में मोहम्मद गोरी और पृथ्वीराज चौहान के बीच हुआ। गौरी का आक्रमण एक सुनियोजित आक्रमण था। इसलिए पृथ्वीराज चौहान को बहुत से राजाओं ने अपनी सेनाएँ उसकी सहायता के लिए भेजो, लेकिन कन्नौज के राजा जयचन्द ने कोई ध्यान नहीं दिया और चुपचाप बैठा रहा। भारतीय सैनिक संख्या में अधिक थे। तुर्की सेना का संगठन और संचालन बेहतर था। युद्ध मुख्य रूप से घुड़सवारी के मध्य था। भारतीय सैनिक तुर्की घुड़सवारों के संगठन, कुशलता और तेज गति का मुकाबला नहीं कर सके। बहुत से सैनिक मारे गये। पृथ्वीराज बच तो गया परन्तु वह पकड़ा गया। तुर्की सेना ने हांसी, सरस्वती और समाना के गढ़ विजय कर लिए। तराइन का दूसरा युद्ध भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण है। प्रथम तो मुहम्मद गोरी का अधिकार क्षेत्र दिल्ली से दूर नहीं रहा था। दिल्ली के राजपूत शासक को हटाकर गंगा घाटी की ओर भावी गतिविधियों का केन्द्र बनाया गया।

प्रश्न 28. "कुतुबुद्दीन ऐबक को गद्दी पर बैठते ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।" समझाइए।

उत्तर—कुतुबुद्दीन ऐबक एक तुर्की दास था। इनको गद्दी पर बैठते ही अनेक समस्याओं और

कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। नई स्था"त तुर्की सल्तनत को आक्रमणों और विद्रोहों का भय था। गजनी का शासक यल्दोज दिल्ली पर अपना अधिकार जता रहा था। सुल्तान और कच्छ का गवर्नर नासिरुद्दीन कुबाचा और पंजाब का अलीमर्दन खां स्वतन्त्रता के स्वप्न देख रहे थे। स्थानीय राजाओं ने विद्रोह किए। उसने यल्दोज को पराजित किया जो गजनी से दिल्ली की ओर चल दिया था। ऐबक ने गजनी पर कब्जा किया, परन्तु जब यल्दोज गजनी में वापस आया तो ऐबक लाहौर वापस आ गया और उसने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।

प्रश्न 29. बहमनी राज्य के पतन के कारणों की विवेचना कीजिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-3 प्रश्न (34) अथवा देखें।

प्रश्न 29. खानवा के युद्ध के परिणामों की विवेचना कीजिए।

उत्तर—(i) खानवा युद्ध से राजपूतों की संगठित सेना छिन्न-भिन्न हो गई। श्रेष्ठ योद्धा राजपूतों की शक्ति काम नहीं आयी, अन्ततः हार का सामना करना पड़ा। प्रतिद्वन्द्वी राजपूत समाप्त हो गये। (ii) बाबर की युद्ध कला की श्रेष्ठता सिद्ध हुई बाबर की शक्ति व पराक्रम को देखकर कुछ अफगान सरदारों ने भी उनके अधीनता स्वीकार कर ली। बाबर ने सरदारों के प्रति उदारता दिखाई और उन्हें लगान के महत्वपूर्ण भूमि अनुदान में दिए। उसने अपने सरदारों को वे नगर और किले अनुदान के रूप में दिए उसे सेना रखने का और नगरों की किलों की सुरक्षा कर सके अन्य किलों पर विजय कर सके।

प्रश्न 30. शेरशाह के जनहित के कार्यों की विवेचना कीजिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-2 प्रश्न 34 देखें।

प्रश्न 30. अकबर द्वारा प्रारम्भ की गई दीन-ए-इलाही का वर्णन कीजिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-2 प्रश्न 29 देखें।

प्रश्न 31. शाहजहाँ ने स्थापत्य कला के विकास में किन-किन भवनों का निर्माण करवाया? विवेचना कीजिए।

उत्तर—शाहजहाँ वास्तुकला का महान् पारखी शासक था। वह इतिहास में भवन निर्माता के नाम से प्रसिद्ध है। उसने सुन्दर भवनों का निर्माण कर शहरों की सुन्दरता बढ़ाने का कार्य किया। शाहजहाँकालीन निर्मित इमारतें मुख्यतः संगमरमर से बनायी गयी हैं। मुख्य इमारतों में—

(i) ताजमहल, (ii) दीवाने आम, (iii) तख्त-ए-ताऊस, (iv) मच्छी भवन, (v) दीवाने खास, (vi) शीशमहल, (vii) खास महल, (viii) अंगूरी बाग, (ix) मोती मस्जिद, (x) जामा मस्जिद, (xi) दिल्ली का लाल किला।

प्रश्न 31. औरंगजेब की हिन्दू विरोधी नीति का वर्णन कीजिए।

उत्तर—उत्तर हेतु सेट-3 प्रश्न 36 देखें।

नोट—प्रश्न क्रमांक 32 से 38 तक दीर्घ उत्तरीय प्रश्न हैं। प्रत्येक पर 6 अंक एवं विकल्प है।

(उत्तर की अधिकतम शब्द सीमा 200 शब्द है)

प्रश्न 32. समुद्र गुप्त के उत्तर भारत विजय एवं दक्षिण भारत विजय की विवेचना कीजिए।

उत्तर—समुद्रगुप्त एक वीर सेनानायक और योद्धा था। भारतीय इतिहास में वह अपनी विजय

के लिए विख्यात है। वह एक महत्वाकांक्षी और साम्राज्यवादी शासक था। उसका सन्धि विग्रहिक हरिषेण प्रमाण प्रशस्ति में उसकी दिग्विजयों का उल्लेख करता है। उसने परम्परागत नीति को अपनाया। समुद्रगुप्त की विजय निम्नलिखित हैं–

(1) उत्तरी भारत विजय–समुद्रगुप्त ने उत्तरी भारत में साम्राज्य विस्तार की नीति का पालन करते हुए जीते हुए समस्त प्रदेशों को अपने साम्राज्य में विलीन कर लिया। उत्तरी भारत में इस समय नागवंश के कई राज्य कई श्रेणी में बँटे हुए थे। समुद्रगुप्त ने सर्वप्रथम इसी वंश के नागसेन, नागदत्त व नन्दि राजा को पराजित किया। इसके अतिरिक्त उसने गणपति, नाग, भतिस, अच्युत, रुद्रदेव, चन्द्रवर्मन तथा बालवर्मा को परास्त किया। समुद्रगुप्त ने आटविक राज्य अर्थात् जंगल के राज्यों को जो मथुरा से नर्मदा तक पर आक्रमण किया और विजय हासिल किया।

(2) दक्षिण भारत की विजय–प्रयाग प्रशस्ति की 19वीं और 20वीं पंक्तियों में दक्षिण ाापथ के 12 राज्यों का उल्लेख मिलता है जिनके शासकों को पराजित करके उसने उनके राज्यों को वापस लौटा दिया। दक्षिणापथ के निम्नलिखित बारह शासकों पर उसने विजय प्राप्त की–(i) कोसल का महेन्द्र, (ii) महाकान्तर का व्याघ्रराज्य, (iii) कोसल का मृणराज, (iv) विष्यपुर का महेन्द्रगिरि, (v) कोहूरकत स्वामीछत्र, (vi) एरण्डपलि का दमन, (vii) कांची का विष्णु भोगप, (viii) अवमुक्त का नीलराज, (ix) वेंगी का हस्तिवर्मन, (x) पालक का उग्रसेन, (xi) देवराष्ट्र का कुबेर।

(3) सीमान्त प्रदेशों पर विजय–सीमान्त प्रदेशों के पाँच राज्यों के शासकों को युद्ध में पराजित किया।

(4) विदेशी राज्य–प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार देवपुत्र शाही शाहानुशाही शक, मुरूण्ड, सिंहलद्वीप के शासक तथा समस्त द्वीपों के निवासियों ने समुद्रगुप्त के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्था''त किया।

प्रश्न 33. गुप्तों की धार्मिक दशा की विवेचना कीजिए।

उत्तर–गुप्तों का धार्मिक जीवन

गुप्त काल के धार्मिक जीवन की महत्वपूर्ण घटना थी–ब्राह्मणवाद को वर्तमान हिन्दू धर्म का रूप देना।

गुप्त काल में बौद्ध धर्म को राजकीय संरक्षण समाप्त हो गया था। ब्राह्मणवाद प्रमुख हो गया था। गुप्त शासकों ने भागवत सम्प्रदाय को संरक्षण दिया। वे स्वयं को भागवत कहते थे। वे विष्णु और शिव की पूजा करते, यज्ञ करते और ब्राह्मणों को दान देते थे। उन्होंने अनेक मन्दिर बनवाए। इस काल में ही पुराणों का संकलन हुआ। विष्णु का उदय भक्ति के देवता के रूप में हुआ और उसे वर्ण व्यवस्था के उद्धारकर्ता के रूप में दिखाया जाने लगा। विष्णु के बारे में असंख्य पौराणिक कथाएँ प्रचलित हो गईं और उसके सम्मान में विष्णु पुराण नामक एक महत्वपूर्ण पुराण का संकलन हुआ। इसी प्रकार इस देवता के नाम पर विष्णु स्मृति नामक एक विधि ग्रन्थ प्रचलित हुआ। सर्वोपरि बात यह हुई कि चौथी शताब्दी ईसवी में वैष्णव कृति भगवतगीता सामने आई। इसने भगवान कृष्ण की भक्ति की शिक्षा दी। कुछ गुप्त राजा संहार के देवता शिव के भक्त थे। बौद्ध और जैन धर्म का समकालीन भागवतवाद था। उसका उदय उपनिषद् के विचारों में हुआ था। यह सम्प्रदय इस काल में उत्कर्ष की चरम सीमा पर पहुँचा। विष्णु के 10 अवतारों के सिद्धान्त को स्वीकार किया गया।

इन अवतारों में कृष्ण को महत्वपूर्ण माना।

इसके अतिरिक्त ब्रह्मा, सूर्य, कार्तिकेय, गणेश, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती और अन्य देवी-देवताओं की पूजा होती थी। इन्द्र, वरुण, यम आदि जैसे छोटे देवताओं की भी पूजा होती रही। सांप, यज्ञ, गन्धर्व और अप्सरा का मान होता रहा। पशु, पौधे, नदियाँ और पर्वत को भी श्रद्धा से देखा जाता था। बनारस और प्रयाग जैसे नगर तीर्थ स्थान बन गए। मूर्ति पूजा का प्रचलन था। इस प्रकार गुप्तकाल में वर्तमान हिन्दू धर्म का विकास हो गया था।

यद्य" बौद्ध धर्म का पतन हो रहा था फिर भी इसके अनुयायी थे। इसके अतिरिक्त अजन्ता एलोरा गुफा की कलाकृतियाँ, स्तूप और इस काल की सारनाथ की बुद्ध की मूर्तियाँ, इस बात का प्रमाण है कि बौद्ध धर्म प्रचलित था। गुप्तकाल में जैन धर्म मानने वाले भी काफी थे।

गुप्त काल के धार्मिक जीवन की मुख्य विशेषता सभी धर्मों में परस्पर सहनशीलता की भावना थी। गुप्त सम्राट अपने निजी और सार्वजनिक जीवन में धार्मिक सहिष्णुता की नीति का अनुसरण करते थे।

गुप्त काल में ब्राह्मणवाद ने हिन्दू धर्म का रूप धारण किया। विष्णु और शिव जैसे देवताओं की पूजा की जाने लगी। पुराण और भगवद्गीता जैसे ग्रन्थों की रचना की गई।

प्रश्न 33. गुप्तों की आर्थिक दशा की विवेचना कीजिए।

उत्तर—गुप्तकालीन आर्थिक दशा—गुप्तकाल में लोग समृद्ध थे, सर्वत्र शान्ति थी और आय के स्रोत एकाधिक थे, नगरों में जीवन स्तर उत्कृष्ट था।

कृषि—इस काल में कृषि लोगों का मुख्य व्यवसाय था। शासन की ओर से भी इस ओर ध्यान दिया जाता था। भूमि को मूल्यवान माना जाता था, राजा भूमि का वास्तविक मालिक होता था। भूमि को उस समय उपज के आधार पर पाँच भागों में विभक्त किया गया था—(1) कृषि हेतु प्रयुक्त की जाने वाली भूमि 'क्षेत्र' कहलाती थी, (2) निवास योग्य भूमि 'वस्तु', (3) जानवरों हेतु प्रयुक्त भूमि 'चरागाह', (4) बंजर भूमि 'सिल', (5) जंगली भूमि 'अग्रहत' कहलाती थी। कृषि से राजस्व की प्राप्ति होती थी, जो उपज का छठवां भाग होता था। भूमिकर को कृषक नगद (हिरण्य) या अन्न (मेय) के रूप में अदा करता था। गुप्त शासकों ने बड़े पैमाने पर भूमिदान भी किया था जिससे राजकोष पर विपरीत प्रभाव पड़ा था।

भूमि अनुदान—गुप्त काल में भूमि अनुदान की प्रथा प्रारम्भ की गयी। इसके अन्तर्गत राज्य की समस्त भूमि राजा की मानी जाती थी। राज्य किसानों को अस्थायी तौर पर भूमि कृषि कार्य के लिये देता था। यह राज्य के कृपा-पर्यन्त चलता था, परन्तु आगे चलकर भूमिकर अनुदान का स्वरूप वंाानुगत हो गया तथा इसके साथ भूमि का क्रय-विक्रय प्रारम्भ हो गया। भूमि का क्रय-विक्रय राज्य के नियम के अनुसार होता था तथा राज्य की ओर से पंजीकृत ताम्रपत्र प्रदान किया जाता था।

इस व्यक्तिगत भू-स्वामित्व की प्रक्रिया का लाभ शक्तिशाली और समृद्ध व्यक्तियों ने लेना आरम्भ कर दिया। इसके अतिरिक्त राज्य की ओर से ग्राम दान की प्रथा भी प्रचलित थी। यद्य" ग्राम दान अस्थायी रूप से प्रदान किया जाता था, परन्तु कृषक वर्ग इन ग्राम के स्वामियों मालगुजार के अधीन होते गये, इस प्रक्रिया ने सामन्ती प्रथा को जन्म दिया। ये सामन्त आगे चलकर जमींदार कहलाये।

व्यापार—इस काल में व्यापार भी उन्नति की ओर था। वस्त्र व्यवसाय विकसित हो चुका था

और मदुरा, बंगाल, गुजरात वस्त्रों के प्रमुख केन्द्र थे। इसके अतिरिक्त शिल्पी सोना, चाँदी, कांसा, ताँबा आदि से औजार बनाते थे। व्यापारियों का संगठन था और संगठन का प्रमुख आचार्य कहलाता था। आचार्य को सलाह देने हेतु एक समिति होती थी, जिसमें चार-पाँच सदस्य होते थे। शक्कर और नील का उत्पादन बहुतायत से किया जाता था। शासन की ओर से वणिकों और शिल्पियों पर राजकर लगाया जाता था। कर के एवज में बेगार का भी प्रचलन था। एक व्यवसाय "पशुपालन" को भी माना जाता था। बैलों का उपयोग हल चलाने और सामान को स्थानान्तरित करने में किया जाता था, इस काल में कपड़े को सिलकर पहनने का प्रचलन था।

व्यापार मिस्त्र, ईरान, अरब, जावा, सुमात्रा, चीन तथा सुदूरपूर्व बर्मा से भी होता था। रेशम के कपड़ों की माँग विदेशों में अत्यधिक थी। शासन की ओर से एक निश्चित मात्रा में सभी व्यापारियों पर 'कर' लगाया गया था, किन्तु वसूली में ज्यादती नहीं की जाती थी। व्यापार को चलाने हेतु व्यापारिक संगठनों का अपना नियम कानून था जिससे व्यापारियों की सुरक्षा व रक्षा की जाती थी।

प्रश्न 34. महमूद गजनवी और मुहम्मद गौरी के आक्रमणों की तुलना कीजिए।

उत्तर–

सुल्तान महमूद गजनवी और मुहम्मद गौरी की उपलब्धियों का तुलनात्मक अध्ययन

महमूद गजनवी ने 1000-1030 ई. और मुहम्मद गोरी ने 1175-1205 ई. के मध्य भारत पर आक्रमण किए थे।

महमूद गजनबी और मुहम्मद गौरी के भारत आक्रमणों के उद्देश्य भिन्न थे। महमूद गजनवी का भारत में राजय स्था"त करने का कोई उद्देश्य नहीं था। उसका मुख्य उद्देश्य भारत से अपार धन-सम्पदा लूटकर गजनी ले जाना था। इस लूट के धन से गजनी के राजकोष को सम्पन्न कर वह अपने खुरासान (मध्य-एशिया) राज्य को संगठित कर उसका विस्तार करना चाहता था। इसके विपरीत शाहबुद्दीन मुहम्मद गोरी का उद्देश्य भारत को केवल लूटना ही नहीं था, वरन् भारत में एक राज्य स्था"त करना भी था। ख्वारज्म शासक से बुरी तरह पराजित होकर उसकी मध्य-एशिया में विस्तार की महत्वाकांक्षा को गहरा धक्का लगा था। इसलिए मुहम्मद गोरी के पास भारत में राज्य स्था"त करने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं था।

महमूद गजनवी को भारत में आक्रमण के समय कम कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था क्योंकि भारतीय राज्य निर्बल होने के साथ आक्रमण का सामना करने के लिए तैयार नहीं थे। उत्तर भारत पर बहुत समय से कोई आक्रमण नहीं हुआ था। भारत हूणों के आक्रमण के प्रभाव को भूल चुका था और वह अरब वालों के आक्रमणों का सफलतापूर्वक सामना कर चुका था। लगभग चार शताब्दी से भारतीय राज्य अपने आन्तरिक युद्धों में फँस रहे थे। यद्य" भारतीय राज्य उत्तर-पश्चिम की ओर से मुहम्मद गोरी के आक्रमण के लिए तैयार नहीं थे फिर भी मुहम्मद गोरी को महमूद गजनवी की अपेक्षा अजमेर के चौहान, मालवा के परमार, कन्नौज के गहड़वार और गुजरात के चालुक्य जैसे शक्तिशाली शासकों का सामना करना पड़ा था। उनके भिन्न उद्देश्यों और बदली हुई राजनीतिक

परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए ही महमूद गजनवी और मुहम्मद गोरी की उपलब्धियों का सही आंकलन किया जा सकता है।

प्रश्न 34. सुल्तान बनते ही बलबन को किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा ? दो कठिनाइयों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—1246 ई. में जब बलबन दिल्ली सल्तनत की गद्दी पर बैठा तो उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा—

(1) सुल्तान और अमीरों और सरदारों के सम्बन्ध में सुधार—सरदार महत्वाकांक्षी हो गये थे और मनमानी करने लगे थे। इल्तुतमिश की मृत्यु के बाद संघर्ष शुरू हो गया था। बलबन स्वयं इस संघर्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभा चुका था। सर्वप्रथम कार्य था कि वह इन सरदारों को समझाये कि सुल्तान उनसे ऊँचा है और वे सुल्तान को हटाने का प्रयास न करे।

(2) दिल्ली के आस-पास के क्षेत्र दोआब में फैली अराजकता को समाप्त करना—दिल्ली सल्तनत के मान-सम्मान को हानि पहुँची थी और लोगों के मन में सरकार का डर नहीं रहा था। समय की माँग थी कि दिल्ली में तुर्की शक्ति को संगठित किया जाए। सुल्तान बलबन ने दृढ़ संकल्प और पूरी शक्ति से इस दिशा में सफलता प्राप्त की।

प्रश्न 35. शाहजहाँ की उपलब्धियों ने भारत को विश्व में प्रसिद्ध कर दिया। इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर—शाहजहाँ की वह एक उपलब्धि जिसने भारत को विश्व प्रसिद्ध कर दिया, ताजमहल का निर्माण करवाना था। विश्व की सुन्दरतम इमारतों में एक है जिसे शाहजहाँ ने अपनी बेगम मुमताज महल की याद में ₹ करोड़ की लागत से 22 वर्षों में निर्मािण कार्य पूर्ण करवाया था। यह सफेद संगमरमर के पत्थरों से बना है। संगमरमर पर बारीक खुदाई का उसमें सुन्दर पहलदार झंझरिया बनाकर व बेलबूटे कीमती पत्थरों की जड़ाई से महान् महाकृति का निर्माण किया गया है। ताजमहल के ऊँचे-ऊँचे दरवाजों पर कुरान की आयतें खुदी हैं। सितम्बर-अक्टूबर के शरद-पूर्णिमा में यहाँ कलाप्रेमियों का मेला लगता है। क्योंकि चन्द्रमा की किरणों का अद्वितीय नजारा देखने को मिलता है। इस प्रकार शाहजहाँ की इस उपलब्धि ने भारत को विश्व प्रसिद्ध कर दिया।

शाहजहाँ द्वारा निर्मित अन्य भवन—

(i) दीवाने आम—जहाँ राजदरबार लगता था। सम्राट व वजीर राज्य कार्य निपटाते थे। इसे शाहजहाँ ने 1628 ई. में आगरा में बनवाया था।

(ii) तख्त-ए-ताऊस—यह सोने व रत्नों से जड़ा मयूर सिंहासन था। यह 12 खम्बों पर आधारित था। बहुमूल्य रत्नों से जड़े इस सिंहासन में तब ₹ 1 करोड़ खर्च किये गये थे।

(iii) मच्छी भवन—लाल पत्थर से बना आयताकार इमारत 70 गज लम्बा तथा 63 गज चौड़ा है।

(iv) दीवाने खास—सफेद संगमरमर से बनी आयताकार इमारत है, खुदाई नक्काशी का काम सुन्दर ढंग से किया गया है। दीवाने खास के चबूतरे में शाहजहाँ शाम के समय बैठता था।

(v) शीशमहल—इस सुन्दर इमारत के दरवाजों में शीशे जड़े हुए हैं।

(vi) खासमहल—यह महल केवल सम्राट व रानी के निवास के लिए था। महल की दीवारों

में शाहजहाँ के पूर्वजों के चित्र व अभिलेख लगे थे।

(vii) अंगूरी बाग–हरम की महिलाओं के लिए बनाया गया था, इसमें एक सुन्दर बगीचा भी था।

(viii) मोती मस्जिद–इसे शाहजहाँ ने 1645-46 ई. में बनवाया था। यह उसकी सुन्दर कलाकृतियों में से एक था।

(ix) जामा मस्जिद–इसका निर्माण शाहजहाँ की पुत्री जहांआरा बेगम ने करवाया था। 103 फीट लम्बी व 100 फीट चौड़ी यह मुगलकालीन स्थापत्य का एक सुन्दर नमूना है।

(x) दिल्ली का लाल किला–यमुना किनारे 3200 फुट लम्बा 600 फुट चौड़ी इमारत है। मुख्य द्वार कला की दृष्टि से अनुपम है। इस किले में स्थित रंगमहल, मोतीमहल प्रसिद्ध भवन हैं जिसके स्थापत्य कला की प्रशंसा अनेक इतिहासकारों ने की है।

प्रश्न 35. औरंगजेब के समय हुए महत्वपूर्ण दो विद्रोहों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–औरंगजेब के समय निम्नलिखित विद्रोह हुए–

(1) जाटों का विद्रोह–औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता की नीति के कारण मथुरा के जाटों ने विद्रोह कर दिया। जब मथुरा के मन्दिर विध्वंस करवाये तो गोकुल के नेतृत्व में जाटों ने मथुरा क्षेत्र में विद्रोह कर दिया। विद्रोह का स्वरूप भयंकर था। वहाँ 20 हजार सेना के साथ औरंगजेब पहुँचा। जाटों की सेना भी 20,000 थी परन्तु मुगलों की सुसंगठित सेना ने उन्हें शीघ्र परास्त कर दिया। गोकुल को बन्दी बनाकर उसकी हत्या कर दी। गोकुल के वध के बाद राजाराम जाट ने नेतृत्व संभाला। जाटों ने लूटपाट तथा छापामार युद्ध प्रणाली अपनाकर औरंगजेब को परेशान कर दिया, परन्तु औरंगजेब ने राजाराम की भी हत्या करवा दी। इसके बाद नेतृत्व की बागडोर जाट सरदार चूड़ामन ने अपने हाथों में ली। उसने आगरा में आक्रमण कर अकबर की कब्र को खोदकर उसकी हड्डियों को जलवा दिया। इस बीच और औरंगजेब की मृत्यु हो गयी। चूड़ामन ने भरतपुर के आसपास के क्षेत्रों में स्वतन्त्र जाट प्रदेश की स्थापना कर ली।

2. सतनामियों का विद्रोह–सतनामी नारनौल और मेवात के जिलों में निवास करते थे, उन्होंने औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता की नीति के विरुद्ध संगठित होकर विद्रोह किया। सतनामियों ने नारनौल के सूबेदार को पराजित कर मार डाला। इस प्रकार वहाँ उनका अधिकार हो गया। इस विद्रोह को दबाने के लिए औरंगजेब ने दिल्ली से सेना भेजी, परन्तु वह भी पराजित हो गयी। अन्त में तोपखाने की मदद से सतनामियों का निर्दयतापूर्वक वध कर दिया गया।

प्रश्न 36. मराठा शक्ति के उदय के कारणों की विवेचना कीजिए।

उत्तर–मराठों के उदय में भक्ति आन्दोलन महत्वपूर्ण प्रेरक शक्ति रहा। इस आन्दोलन का आरम्भ 1296 ई. से ज्ञानदेव से आरम्भ हुआ। सन्त तुकाराम (1608 ई.) में अपनी चरमोत्कर्ष पर पहुँचा। इस प्रकार भक्ति आन्दोलन ने मराठा समाज को जागरूक बनाया और इसे शक्ति प्रदान की। सन्तों ने जनसाधारण की भाषा (मराठी) में भक्ति गीत लिखे। यह साहित्य जनसाधारण को उत्साहित करने का सफल माध्यम था।

ऐसी परिस्थितियों में शिवाजी मराठों के विभिन्न वर्गों को संगठित करने में सफल रहे, विभिन्न जनजाति के लोगों से मित्रता की, इस मित्रता से आन्दोलन को शक्ति मिली और वह व्यापक बना।

व्यापकता का अनुमान इसमें शामिल विभिन्न वर्गों के लोगों से लगाया जा सकता है। इस आन्दोलन को इस बात से भी बल मिला कि निम्न वर्ग में जन्मा व्यक्ति भी ऊँचा पद प्राप्त कर सकता है।

मराठा-समाज में भूमि के लिए संघर्ष एक महत्वपूर्ण पक्ष था। सर्वप्रथम छोटे भूमिधरों ने शिवाजी का साथ दिया। शिवाजी ने बड़े भू-स्वामियों पर कभी विश्वास नहीं किया।

मराठा लोगों के चरित्र व इतिहास पर महाराष्ट्र की भौगोलिक स्थिति का विशेष योगदान था। महाराष्ट्र का अधिकांश क्षेत्र पर्वतीय और पठारी है। भौगोलिक वातावरण ने उन्हें गुरिल्ला युद्ध पद्धति को अपनाने का अवसर प्रदान किया। यही युद्ध पद्धति आगे चलकर इनकी सफलता का कारण बनी। दक्कन की बीहड़, अनुपादक भूमि, कृषि के सीमित साधन ने मराठों को परिश्रमी, दृढ़ संकल्पी बना दिया जिनकी शक्ति का प्रयोग एक शक्तिशाली आन्दोलन के लिए किया जा सकता था।

कुछ इतिहासकारों का मत है कि मराठा आन्दोलन का उदय औरंगजेब की भेदभावपूर्ण धार्मिक नीति के कारण हुआ था। मराठों की प्रारम्भिक शक्ति काल से शाहजहाँ ने धार्मिक सहनशीलता की नीति का अनुसरण किया था। दूसरे आरम्भ में मराठों का संघर्ष मुख्य रूप से दक्कन के मुस्लिम राज्य बीजापुर से था। उस समय संघर्ष मुगलों से नहीं था। शिवाजी ने हिन्दुओं और मुसलमानों को समान रूप से लूटा था। इतना होने पर भी यह सत्य है कि उसने राज्याभिषेक के अवसर पर धर्मोद्धारक (हिन्दू धर्म की सुरक्षा करने वाला) की पदवी ग्रहण कर हिन्दुओं की रक्षा की प्रतिज्ञा की थी।

प्रश्न 36. राष्ट्र निर्माता के रूप में शिवाजी का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर—प्रो. जदुनाथ सरकार सहित अन्य आधुनिक इतिहासकारों ने शिवाजी को महान् राष्ट्र निर्माता माना है। वास्तव में जिस समय शिवाजी का उदय हुआ था उस समय हिन्दू राष्ट्र समाप्त हो चुका था। उत्तर भारत में तो राजपूतों का गौरव समाप्तप्राय हो गया था और जनता औरंगजेब के अत्याचारों से त्रस्त थी। दक्षिण में विजयनगर के हिन्दू साम्राज्य का पतन हो जाने से हिन्दू राष्ट्र का नामोनिशान मिट गया था। इस समय महाराष्ट्र में सांस्कृतिक एवं धार्मिक एकता के होते हुए भी राजनीतिक एवं राष्ट्रीय एकता का पूर्ण अभाव था। मराठा सरदार इधर-उधर बिखरे हुए थे और मुसलमान शासकों की सेवाओं में लगे हुए थे। शिवाजी ही वह पहले मराठा सरदार थे। इसमें बचपन से ही राष्ट्रीयता एवं जातीयता की भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी। शिवाजी की यह राष्ट्रीयता की भावना उम्र के साथ-साथ बढ़ती गई और यह स्वदेश प्रेम इतना प्रबल हो गया कि उन्होंने एक हिन्दू स्वराज को पुनर्स्थापना का कार्य प्रारम्भ किया। **सर जदुनाथ सरकार** के शब्दों में, "वह भारत का अन्तिम हिन्दू राष्ट्र निर्माता था। उसने हिन्दुओं के मस्तक को पुन: एक बार ऊपर उठाया।"

प्रश्न 37. ''अकबर को भारत में सांस्कृतिक एकता का जनक कहा जाता है।'' इस कथन की पुष्टि कीजिए।

उत्तर—इतिहासकार फर्ग्यूसन के शब्दों में—"अकबर के चरित्र में कोई चीज इतनी उल्लेखनीय नहीं है जितनी कि सहिष्णुता जिससे उसके सभी कार्य प्रभावित थे।" अकबर के काल में हिन्दू-मुस्लिम संस्कृतियों में समन्वय तथा एकता का विकास हुआ।

(1) स्थापत्य कला के क्षेत्र में—अकबर ने बाबर, हुमायूँ द्वारा स्था"त ईरानी कला की विशेषताओं को जारी रखा तथा भारतीय कला को अपने भवनों में पर्याप्त स्थान दिया। इस कारण उसके द्वारा निर्मित भवनों में हिन्दू-ईरानी कला का समन्वय स्पष्ट देखने को मिलता है।

(2) चित्रकला के क्षेत्र में—उसके दरबार में कई प्रसिद्ध चित्रकार थे। उसके 16 दरबारी

चित्रकारों में 13 हिन्दू चित्रकार थे। धीरे-धीरे अकबरकालीन चित्रकला में विदेशीपन का अन्त हो गया।

(3) साहित्य व भाषा के क्षेत्र में—साहित्य में भी हिन्दू तथा इस्लामी विचारों का समन्वय हुआ। उसने अनुवाद कार्य को प्रोत्साहन दिया तथा भाषा के क्षेत्र में भी समन्वय का काम किया। सिंहासन बत्तीसी, अथर्ववेद, बाइबिल का उससे अनुवाद कराया। उसने कुरान एवं रामायण का भी अनुवाद करवाया।

(4) संगीत कला के क्षेत्र में—इस्लाम में संगीत का भी निषेध है पर अकबर संगीत का प्रेमी था। अकबर के दरबार में हिन्दू तथा ईरानी संगीतकार साथ-साथ थे। तानसेन अकबर के दरबार का मशहूर गवैया था।

(5) समाज के क्षेत्र में—अकबर ने हिन्दू तथा मुसलमानों को सामाजिक दृष्टि से भी पास-पास लाने का प्रयास किया। उसने पारम्परिक खान-पान तथा विवाह को प्रोत्साहित किया। वह स्वयं दशहरा, दीपावली, होली आदि त्यौहारों में हर्ष से भाग लेता था।

(6) शिक्षा के क्षेत्र में—अकबर शिक्षा प्रेमी था। उसने नैतिक शिक्षा के साथ गणित, कृषि, ज्यामिति, खगोल, तर्कशास्त्र, इतिहास तथा प्रशासन के सिद्धान्तों को शामिल किया।

(7) धर्म के क्षेत्र में—फतेहपुरसीकरी में इबादतखाने का निर्माण किया था। जहाँ सभी सम्प्रदाय के लोगों को सम्मिलित होने की आजादी थी ताकि सभी धर्मों की अच्छाइयों को शामिल किया जा सके।

इस प्रकार अकबर एक राष्ट्रीय शासक था। उसने अपने कार्यों व नीतियों से एक सुव्यवस्थित शासन की स्थापना की। इसलिए उसे सांस्कृतिक एकता का जनक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा।

प्रश्न 37. भक्ति आन्दोलन का भारत पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर—

भक्ति आन्दोलन का भारत पर प्रभाव

1. धार्मिक प्रभाव—धार्मिक कट्टरता समाप्त हो गई, सहिष्णुता की भावना जागृत हो गयी।

2. अन्धविश्वासों में कमी—अन्धविश्वास एवं बाह्य आडम्बर, पाखण्ड आदि दूर हो गये।

3. ईर्ष्या-द्वेष में कमी—भक्ति मार्ग से लोगों के मन में ईर्ष्या-द्वेष की भावना समाप्त होकर एकता जाग्रत हो गई।

4. समन्वय की भावना में वृद्धि हुई—हिन्दू-मुस्लिम में कटुता कम हो गई।

5. धर्मनिरपेक्ष भावना में वृद्धि—सभी धर्मों में एकता जाग्रत हुई। यही कारण था कि अकबर जैसे सम्राट आये।

6. इस्लाम प्रसार की समाप्ति—लोगों में समानता की भावना उत्पन्न हो गई। निम्न वर्ग इस्लाम के प्रभाव से मुक्त हो गया।

7. सिक्ख धर्म की स्थापना—भक्ति मार्ग के कारण गुरुनानक ने सिक्ख धर्म की स्थापना की।

8. बौद्ध धर्म का पतन—हिन्दू धर्म में जाग्रति आयी और बौद्ध धर्म का पतन हो गया।

9. समाज सेवा में वृद्धि—समाज सेवा से लोगों के मन में मानव सेवा की भावना जागृत हुई।

10. कला का विकास—भक्ति आन्दोलन से अनेक भवनों का निर्माण होने से कला का विकास आरम्भ हो गया।

प्रश्न 38. भारत छोड़ो आन्दोलन असफलता के कारणों की विवेचना कीजिए।

उत्तर—'भारत छोड़ो आन्दोलन' की असफलता के कारण निम्नलिखित थे—

(1) आन्दोलन की न तो सुनियोजित तैयारी की गई थी और न ही उसकी रूपरेखा स्पष्ट थी, न ही उसका स्वरूप। जनसाधारण को यह ज्ञात नहीं था कि आखिर उन्हें करना क्या है ? (2) सरकार का दमन-चक्र बहुत कठोर था और क्रान्ति को दबाने के लिए पुलिस राज्य की स्थापना कर दी गयी थी, फिर गाँधीजी के विचार स्पष्ट नहीं थे। (3) भारत में कई वर्गों ने आन्दोलन का विरोध किया। (4) कांग्रेस के नेता भी मानसिक रूप से व्यापक आन्दोलन चलाने की स्थिति में नहीं थे। (5) आन्दोलन अब अहिंसक नहीं रह गया था।

प्रश्न 38. आर्य समाज के कार्यों की विवेचना कीजिए।

उत्तर—स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर आर्य समाज के निम्न सिद्धान्त बनाये—

1. वेद सच्चे ज्ञान के स्रोत हैं, इसलिए इनका अध्ययन सभी को करना चाहिए।
2. ईश्वर निर्विकार, दयालु, अजर, अमर, सृष्टिकर्ता, न्यायकारी एवं सर्वशक्तिमान है।
3. किसी भी कार्य को सत्य एवं असत्य का विचार करके ही करना चाहिए।
4. सभी को असत्य का त्याग एवं सत्य को ग्रहण करना चाहिए।
5. मानव को केवल अपनी उन्नति से ही सन्तुष्ट नहीं होना चाहिए बल्कि सभी की उन्नति से ही संतुष्ट नहीं होना चाहिए बल्कि सभी की उन्नति में अपनी उन्नति समझना चाहिए।
6. समस्त मानव समुदाय को शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति के लिए प्रयासरत रहना चाहिए।
7. धर्मानुकूल आचरण करना मानव का प्रमुख कर्तव्य है। इसे भूलना नहीं चाहिए।
8. अविद्या को समाप्त कर विद्या का प्रचार प्रसार करना चाहिए।
9. स्वयं के हित से सम्बन्धित कार्य में आचरण की स्वतन्त्रता रखनी चाहिये परन्तु सामाजिक कार्यों में आपसी मतभेदों को भुला देना चाहिए।
10. ज्ञान की प्राप्ति से ईश्वर का बोध होता है।